# रेल रश्मि

अंक : 65, सितंबर 2014

राजभाषा विशेषांक

पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका

11.07.14 को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते महाप्रबंधक श्री कृष्ण कुमार अटल साथ में श्री ज्ञान दत्त पांडेय, मुराधि व श्री संजय यादव, उप मुराधि



11.07.14 को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में इंडोलॉजी विभाग की राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते महाप्रबंधक श्री कृष्ण कुमार अटल साथ में श्री ज्ञान दत्त पांडेय, मुराधि एवं सदस्यगण हिंदी सलाहकार समिति श्री राम उपेंद्र सिंह व डा. कौशल्या मधुर उपस्थित



25.07.14 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते श्री ज्ञान दत्त पांडेय, मुराधि साथ में श्री संजय यादव, उप मुराधि व श्री वी.डुंगडुंग, वराधि



25.07.14 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में श्री ज्ञान दत्त पांडेय, मुराधि से अंतर्विभागीय चल शील्ड प्राप्त करते श्री पी.के. श्रीवास्तव, उप मुकाधि/राज.

25.07.14 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में श्री ज्ञान दत्त पांडेय, मुराधि से अंतर्विभागीय चल शील्ड प्राप्त करते श्री धीरेंद्र कुमार, उप मुपरिप्र/नियोजन



28.08.14 को लखनऊ मंडल के गोरखपुर जं. स्टेशन पर महान साहित्यकार रघुपति सहाय 'फिराक गोरखपुरी' की जयंती के अवसर पर व्याख्यान देते श्री जे.पी. सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक, गोरखपुर

# हमारे नये महाप्रबंधक

पूर्व मध्य रेलवे हाजीपुर के महाप्रबंधक श्री मधुरेश कुमार 01 सितंबर 2014 को इस रेलवे के महाप्रबंधक का अतिरिक्त पदभार ग्रहण कर लिया।

29 दिसंबर 1954 को जन्मे श्री कुमार भारतीय रेल इंजीनियरी सेवा 1976 बैच के अधिकारी हैं। आपकी पहली नियुक्ति तत्कालीन पूर्व मध्य रेलवे के धनबाद मंडल में सहायक अभियंता, गोमो के रूप में हुई थी। आपने विभिन्न क्षेत्रीय रेलों में महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएँ दी हैं। आपने उत्तर रेलवे, नई दिल्ली में प्रमुख मुख्य इंजीनियर, पूर्व मध्य रेलवे में प्रमुख मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण, मंडल रेल प्रबंधक, झाँसी आदि पदों का दायित्व निभाया है। पूर्व मध्य रेलवे के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण के रूप में कार्य करते हुए करीब 200 किमी. नई रेल लाइन परियोजना का कार्य गुणवत्ता के साथ पूरा किया है। आपने दिल्ली मेट्रो रेल कारपोरेशन (डीएमआरसी) में चार वर्षों से ज्यादा समय तक महाप्रबंधक/परिचालन तथा मुख्य इंजीनियर/प्लानिंग एवं डिजाइन के पदों पर कार्य करते हुए डीएमआरसी के पहले फेज को पूरा करने में प्रमुख भूमिका निभायी है। आपने अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन, जापान, सिंगापुर आदि देशों में रेलवे के तकनीकी कार्यप्रणाली का गहन अध्ययन किया है।

श्री कुमार को रेल प्रबंधन एवं प्रशासन का गहन अनुभव प्राप्त है। आप रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों में समान रूप से लोकप्रिय हैं।

# संपादक की कलम से...

**सबसे** पहले आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। भारतीय रेल सेवक होने के नाते रेलवे के बहुआयामी परिस्थितियों से सामंजस्य कायम रखते हुए 'रेल रश्मि' का 'राजभाषा विशेषांक' आप तक पहुँचाने में मुझे अपार खुशी हो रही है।

हमें गर्व है कि पूर्वोत्तर रेलवे के सभी अधिकारी/कर्मचारी भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में तेजी लाने के लिए हर स्तर पर सतत प्रयासरत और जागरूक हैं। वे सरकारी काम-काज के साथ-साथ अपने निजी दैनिक कार्य व्यवहार में भी हिंदी का बखूबी इस्तेमाल कर रहे हैं। यह उनके द्वारा प्रस्तुत मिसिलों से परिलक्षित होता है। इससे हिंदी के प्रति उनका अगाध लगाव प्रदर्शित होता है।

राजभाषा हिंदी का कार्य सभी सरकारी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए संवैधानिक दायित्व के अलावा एक नैतिक जिम्मेदारी है। पूर्वोत्तर रेलवे में इस जिम्मेदारी का निर्वहन पूरी निष्ठा के साथ किया जा रहा है। चूँकि राजभाषा का कार्य केवल राजभाषा विभाग को ही नहीं बल्कि इस रेल से जुड़े हुए सभी विभागों को एक जुट होकर करना होगा। राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के क्षेत्र में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग की नितांत आवश्यकता है।

केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से भारत सरकार/रेल मंत्रालय द्वारा विभिन्न पुरस्कार/प्रोत्साहन योजनाएँ लागू की गई हैं जिसे इस अंक में समावेश करने का प्रयास किया गया है। अधिकारी/कर्मचारीगण इसका भरपूर लाभ उठाएँ और हिंदी प्रयोग के क्षेत्र में गुणवत्ता का ध्यान रखते हुए इसे तीव्रतर करें।

पुनः हार्दिक शुभकामनाएँ,

(वी. डुंगडुंग)
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

# रेल रश्मि

त्रैमासिक पत्रिका

अंक : 65 सितंबर 2014



संरक्षक:
मधुरेश कुमार
महाप्रबंधक

मुख्य संपादक:
ज्ञान दत्त पांडेय
मुख्य राजभाषा अधिकारी

उप मुख्य संपादक:
संजय यादव
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक:
वी. डुंगडुंग
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

सह संपादक:
ध्रुव कुमार श्रीवास्तव
राजभाषा अधिकारी

उप संपादक व समस्त संपादन:
सुनील कुमार
वरिष्ठ अनुवादक



पता :
राजभाषा विभाग
मुख्यालय कार्यालय परिसर
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर-273012
टेलीफोन- 62852 एवं 62859 (रेलवे)
0551-2203396
ईमेल- seniorol9@gmail.com


## इस अंक में


| विषय | रचनाकार | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| आपने लिखा है | | 3 |
| काव्य जगत के आफताब: राष्ट्रकवि दिनकर (साहित्य) | प्रभात कुमार राय | 5 |
| भारतीय भाषा बनाम अंग्रेजी (लेख) | संजय कुमार सिंह | 8 |
| संपर्क भाषा हिंदी ही हो सकती है (लेख) | ई. गोविंद प्रसाद शुक्ल 'धुनी' | 11 |
| राष्ट्रभाषा हिंदी का सम्मान जरूरी (लेख) | चंद्रभूषण ओझा | 14 |
| हिंदी की विकास यात्रा में बाधक तत्व (लेख) | डा. राजेश हजेला | 15 |
| भारतीय परंपरा में लोक-कथाएँ (लेख) | सुनील कुमार | 18 |
| हिंदी: सबका साथ-सबका विकास (लेख) | श्याम बाबू शर्मा | 20 |
| हिंदी के उत्थान में हरिवंश राय बच्चन का योगदान एवं उनकी काव्य चेतना (साहित्य) | डा. कृष्ण चंद्र लाल | 22 |
| स्वदेशी, स्वभाषा, स्वाधीनता और भारतेंदु (साहित्य) | कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव | 25 |
| चालक की सतर्कता (कहानी) | शकील अहमद सिद्दीकी | 27 |
| लघु कथाएँ | अमित कुमार | 28 |
| 61.0 मी.स्पान के ओपेन वेब-गर्डरों का कैंटीलीवर पद्धति से लांचिंग का कार्य (तकनीकी) | ए.के. सेनगुप्ता | 29 |
| भारतीय रेल गाड़ियों की अप एवं डाउन दिशा का निर्धारण (तकनीकी) | हीरा लाल | 32 |
| आप्रवासी हिंदी (व्यंग्य) | रण विजय सिंह | 34 |
| काव्य संग्रह 'अग्निध्वजा' के तेवर (समीक्षा) | बी.आर. विप्लवी | 36 |


### कविता, गीत एवं ग़ज़ल


| | | |
|---|---|---|
| गंगा (कविता) | राम उपदेश सिंह | 43 |
| गर्मी वक्त की (कविता) | जसवीर सिंह अरोड़ा | 44 |
| क्षणिकाएँ | अनिल कुमार दत्ता | 45 |
| ग़ज़लें | राजेंद्र कुमार | 46 |
| ग़ज़लें | डा. कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक' | 47 |
| गोस्वामी तुलसीदास और आज (कविता) | अनामिका सिंह | 47 |
| हमारी हिंदी (व्यंग्य कविता) | सुनील कुमार श्रीवास्तव | 48 |
| कविता | सुरभि श्रीवास्तव | 48 |
| गतिविधियाँ | | 49 |
| प्रतियोगिताएँ/पुरस्कार/प्रोत्साहन योजनाएँ | | 51 |



नि:शुल्क वितरण हेतु



(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं)

**तार्किक प्रस्तुतियों से परिपूर्ण**

**'रेल रश्मि'** के 64वें अंक जून 2014 के आवरण पृष्ठ पर श्री गणेश की आकृति में वक्रतुंड, एकदंत, महाकाय, गजकर्ण और लंबोदर की आकृतियों के साथ ही पाश, लेखनी, अभय मुद्रा, वाम हथेली में मोदक सहित ऋद्धि-सिद्धि की आकृतियाँ भी चित्रांकित हैं। रंगों की योजना स्वत: ही ध्यान केंद्रित करती हैं।

इस बार का अंक रेल से संबंधित जानकारियों के चलते संग्रहणीय है। हीरा लाल जी के लेख '...गाड़ियों के नंबरों में संशोधन की आवश्यकता' उनके तार्किक आधार पर मेल, एक्सप्रेस व अन्य गाड़ियों के नंबरों को सुव्यवस्थित करने की दिशा में तकनीकी शोध की सशक्त प्रस्तुति है, जो डिजिटल प्रयोगों से अधिकाधिक संख्या में गाड़ियों को चलाने की सुगमता को दर्शाती है। ई. गोविंद प्रसाद शुक्ल के 'मीटरगेज में तेल प्रबंधन' यांत्रिक लेख में तेल चोरी की बिंदुओं को चित्रित करते हुए लोको में तेल खर्च की प्रविष्टियों की अनियमितता के प्रति चिंता जताई गई है। उक्त लेख कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी के लिए सम्मानजनक-भाव पैदा करता है। सहायक स्टेशन मास्टर की एक भूल गाड़ियों की टक्कर का किसप्रकार सबब बन सकती है। 'भूल' कहानी में एन.के.सिन्हा ने इसे कौतूहलपूर्वक बखान किया है।

'बादल चाहते हैं गीत निमंत्रण' यूँ तो रण विजय सिंह का व्यंग्य-लेखन है, लेकिन इसमें जो शृंगार और वीर-रस का भाव छिपा है वह लेखक की प्रतिभा व गहन-ज्ञान का द्योतक है। आल्ह-खंड की नायिका की 'कंता एक रैन रहि जाएँ' लालसा काली घटाओं को अटरिया पर बरसने का निमंत्रण देती है। इसमें शीर्षक के साथ न्याय बरता गया है, साथ ही 'बदरिया घिर आये ननदी' (कैसे खेले जइबू सावन में कजरिया) मिर्जापुरी कजरी की कसक की एक बानगी भर है। गीत निमंत्रण से बादल 'पृथ्वी को बूंदों की बौछार से बेधने चढ़ आएँ' लाइन का कहना ही क्या? हास्य-व्यंग्य की कड़ी में ही दीनानाथ तिवारी के 'अनछुए प्रसंग' पत्रिका की रोचकता को बनाए हुए हैं।

सुरभि श्रीवास्तव के निबंध 'चरित्र, लेखकीय आइने में' की पंक्ति चरित्र का स्वरूप पंकज है, जो पंक से ऊपर उठा हुआ है। आम-ओ-खास को अतीत से ऊपर उठ कर विकासोन्मुख होने के प्रति अभिप्रेरित है। डा. उदय प्रताप सिंह ने 'अध्यात्म के मैदान में कबीर' लेख में कबीर के दर्शन में हद-बेहद का निरूपण करते हुए गत और अनागत, अनंत से परे के आनंद की प्रतीति को उल्लिखित किया है। कमल नयन पांडेय के 'तुलसी के राम' में तुलसीदास के ज्ञानार्जन को तुलसी के पौधे की मंजरियों-सा परिपूर्ण बताया गया है।

जानकारियों से लबरेज पी. एन. कुमार, डा. राजेश हजेला, यशवीर सिंह, सुनील कुमार, नीलम प्रभा श्रीवास्तव की रचनाओं ने पाठकों की जिज्ञासा का न्यायोचित समाधान किया है। कविताओं, ग़ज़लों, उक्तियों को समेटे यह अंक बौद्धिक पिपासा का शमन करता है। सधन्यवाद!

**अखिलेश चंद**
प्रभारी 'आज' दैनिक
बैंक रोड, गोरखपुर-273001
**संपर्क: 0551-2201876**

**ज्ञानवर्द्धक एवं रोचक**

**'रेल रश्मि'** त्रैमासिकी का 64वाँ अंक जून 2014 हस्तगत हुआ। इस अंक में पी. एन. कुमार, गोविंद प्रसाद शुक्ल एवं हीरा लाल के द्वारा लिखित तकनीकी लेख ज्ञानवर्द्धक एवं रोचक लगे। सुरभि श्रीवास्तव का आलेख 'चरित्र लेखकीय आईने में'; 'आध्यात्मिक कबीर' (डा. उदय प्रताप सिंह); 'तुलसी के राम' (कमल नयन); 'मंगलेच्छा' (सुनील कुमार); 'नैतिकता का संक्रमण काल' (यशवीर सिंह) और कहानी 'भूल' (एन.के. सिन्हा) रोचक और पठनीय हैं।

जून अंक में रवि प्रताप सिंह, संगीता भार्गव की ग़ज़लें तथा ए.के.दत्ता और तारकेश्वर शर्मा की कविताएँ उल्लेखनीय प्रभाव छोड़ने में सफल कही जा सकती हैं।

**एम. जे. श्रीवास्तव**
मंडल सचिव
ऑल इंडिया पी. एन. बी.
आफिसर्स एसोसिएशन
गोरखपुर (उ.प्र.)
**संपर्क: 9450882600**

**मुखपृष्ठ भावप्रवण, प्रतीकात्मक**

यह देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आपकी पत्रिका **'रेल रश्मि'** की निरंतरता पूर्ववत बनी हुई है। जून अंक-64 में मुखपृष्ठ पर प्रथम पूज्यनीय एवं वंदनीय गणपति की मुखाकृति बहुत ही भाव-प्रवणता और प्रतीकात्मक है। इस अंक में सुरभि श्रीवास्तव की प्रस्तुति 'चरित्र लेखकीय आईने में', 'तुलसी के राम' (कमल नयन), 'आध्यात्मिक कबीर' (डा. उदय प्रताप सिंह); सुनील कुमार के लेख 'मंगलेच्छा', यशवीर सिंह का निबंध 'नैतिकता का संक्रमण काल' पठनीय हैं जबकि रण विजय सिंह का सारगर्भित पैना व्यंग्य 'बादल भी चाहते हैं गीत निमंत्रण' में लुप्त होती जा रही परंपराओं पर सलीके से प्रहार कर जाता है। इस अंक में ए. के. दत्ता, रवि प्रताप सिंह, संगीता भार्गव, प्रवीण सिंह की कविताएँ पसंद आयीं। सितंबर अंक के लिए शुभ कामनाएँ

**सुरेंद्र जायसवाल**
पूर्व उप सभापति, नगर निगम
प्रोपराइटर सुरेंद्र मशीनरी हाउस
धर्मशाला रोड, गोरखपुर-273001
**संपर्क: 09839962734**

**परिवार का बौद्धिक मनोरंजन**

आपकी त्रैमासिक पत्रिका **'रेल रश्मि'** का जून अंक प्राप्त हुआ जो पूरे परिवार का बौद्धिक मनोरंजन करने में पूर्णत: सफल है। जून अंक के लेखों में 'चरित्र लेखकीय आईने में' (सुरभि श्रीवास्तव), 'अध्यात्म के मैदान में कबीर' (डा. उदय प्रताप) 'तुलसी के राम' (कमल नयन), 'मंगलेच्छा' (सुनील कुमार) अच्छे लगे। रण विजय सिंह का व्यंग्य 'बादल भी चाहते हैं गीत निमंत्रण' छोटा होते हुए भी बहुत बड़ी बात कह जाने में सफल है।

इस अंक में प्रवीण सिंह, तारकेश्वर शर्मा, रवि प्रताप, ए. के. दत्ता, संगीता भार्गव और राजीव 'मासूम' की कविताएँ पढ़ने में रोचक और सारगर्भित हैं।

**डा. अशोक कुमार श्रीवास्तव**
अध्यक्ष/संयोजक, राष्ट्रीय सेवा परिषद
पूर्व अध्यक्ष, गोरखपुर वि.वि.छात्रसंघ
पूर्व प्रत्याशी/प्रभारी, ब.स.पा.(गोरखपुर)
माँ अकलेश सदन, 615, जटेपुर दक्षिणी
गोलघर कालीजी मंदिर मार्ग, गोरखपुर
**संपर्क: 09415313211**

**नयनाभिराम एवं चित्ताकर्षक**

**'रेल रश्मि'** पत्रिका का जून अंक मिला। बहुत ही रोचक, पठनीय और महत्वपूर्ण सामग्री हैं। इस अंक में सारे लेख तो नहीं पढ़ सका हूँ किंतु जो पढ़ सका हूँ, उनमें से 'चरित्र लेखकीय आईने में' (सुरभि श्रीवास्तव), 'कबीर का अध्यात्म' (उदय प्रताप सिंह), 'तुलसी के राम' (कमल नयन पांडेय), 'नैतिकता का संक्रमण काल' (यशवीर सिंह), 'मंगलेच्छा' (सुनील कुमार) एवं 'बादल चाहते हैं गीत निमंत्रण' (रण विजय सिंह) पसंद आए। तकनीकी लेख ज्ञानवर्द्धक हैं। अंक में प्रस्तुत की गयी कहानियाँ वास्तव में लघु निबंध हैं, कहानियाँ नहीं।

रवि प्रताप सिंह, ए.के. दत्ता, प्रवीण सिंह एवं तारकेश्वर शर्मा की काव्य रचनाएँ आश्वस्त करती हैं। इस अंक के मुखपृष्ठ पर 'गणपति' की आकृति प्रतीकात्मक होते हुए भी अन्य अंकों की तरह नयनाभिराम एवं चित्ताकर्षक है। एक अच्छे अंक के लिए बधाई एवं हिंदी दिवस के लिए आप एवं आपके सहयोगियों के प्रति शुभकामनाएँ!

**जगदीश चंद्र श्रीवस्तव**
सचिव, पारसनाथ परमावती देवी
जनसेवा संस्थान
सी-56, सूरजकुंड, गोरखपुर
**संपर्क: 09696706842**

**जन्म दिया माता सा जिसने किया सदा लालन-पालन।**
**जिसके मिट्टी जल से ही है रचा गया हम सबका तन॥**
**ऐसी मातृभूमि है मेरी स्वर्गलोक से भी प्यारी।**
**जिसके पद-कमलों पर मेरा तन-मन-धन सब बलिहारी॥**

◆ साहित्य ◆

# काव्य जगत के आफताव: राष्ट्रकवि दिनकर

प्रभात कुमार राय

**पौरुष** एवं ललकार के कालजयी राष्ट्रकवि दिनकर अपनी 60 पुस्तकों (33 काव्य-कृतियों तथा 27 गद्यग्रंथ) के माध्यम से शौर्य, सामाजिक पीड़ा की तीक्ष्णता एवं पूर्ण स्वाधीनता की अभिलाषा का हृदयग्राही चित्रण किया है। इनका अवतरण दिनांक 23.09.1908 को पुण्यतोया गंगा नदी के पावन उत्तरी तट अवस्थित सिमरिया गाँव में हुआ था। यह गाँव मिथिलांचल का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। यहाँ प्रति वर्ष कार्तिक महीने हजारों श्रद्धालु कल्पवास करते हैं। एक दंतकथा के अनुसार विवाहोपरांत सीता को विदा कराकर ले जाने के क्रम में राम ने इसी स्थान पर गंगा नदी पार किया था। उसी वक्त से इस स्थान को सियाघाट के नाम से प्रसिद्धि मिली। कालांतर में 'म' तथा 'रि' जुटकर यह सिमरियाघाट में परिणत हो गया।

दिनकर को अपने पैतृक गाँव से अत्यंत लगाव एवं प्रेम था। उन्होंने इन पंक्तियों में सिमरिया की पावन धरती को शत नमन किया है:

हे जन्म भूमि शतवार धन्य
तुझसा न सिमरिया ग्राम अन्य

उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में नौकरी, आंदोलन, सामाजिक चेतना, राष्ट्रभक्ति, इतिहास, साहित्य, शृंगार, परंपरा-प्रियता, दर्शन, विद्रोह, संघर्ष, सांस्कृतिक समन्वय एवं उपलब्धियों का अप्रतिम संश्लेष है।

विद्यालय में शिक्षण कार्य को छोड़ जब दिनकर सब-रजिस्ट्रार की नौकरी में जाने लगे तब उनके समकालीन एवं सहृदय रामवृक्ष बेनीपुरी ने कड़ी आपत्ति जतायी थी। डा. राजेंद्र प्रसाद ने बनारसी दास चतुर्वेदी जी से कहा था- 'दिनकर जी को दो में से एक को त्याग करना पड़ेगा, या तो कविता को या नौकरी को।' परिस्थिति से सामंजस्य स्थापित करने में उनकी प्रवीणता थी। वे दोनों में अपनी निपुणता समभाव से कायम रखे। बदलते परिवेश में उन्होंने भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति के पद को परित्याग कर दिया था। डा. रामशरण शर्मा ने जब दिनकर जी से इसका कारण पूछा तो उन्होंने मुस्कराते हुए शालीनता से कहा- 'जब सीनेट में वाक्-युद्ध होता रहा उसे सहता रहा, लेकिन जब अंगस्पर्श की नौबत आ गई तो पद को परित्याग दिया।' विश्वविद्यालय में व्याप्त अस्थिरता और उनके कुप्रभावों पर बड़े ही मार्मिक ढंग से उन्होंने कहा था- 'अगर दूध क्षण-क्षण इसी प्रकार डोलता रहा तो दही कभी भी प्राप्त नहीं होगा।' यह उनके ठेठ ग्राम्य-जीवन के अनुभव को दर्शाता है। वे बारह वर्षों तक राज्यसभा के सदस्य रहे। स्नातकोत्तर की योग्यता से रहित होने के बावजूद उन्हें महाविद्यालय में हिंदी का अध्यापक नियुक्त किया गया तथा भागलपुर विश्वविद्यालय में कुलपति बनाया गया। यह उनकी असाधारण विद्वता तथा प्रतिभा का सम्मान था। शासकीय सेवा में रहकर राजनीति से संपृक्त रहते हुए भी वे निरंतर स्वछंद रूप से साहित्य सृजन करते रहे।

उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति की यथार्थ तस्वीर दिखती है। जीवनपर्यंत उनकी पक्षधारिता शोषित-पीड़ित-दलित जनता के साथ रही। उनकी कालचेतना में वैसे समाज का प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है जहाँ असमानता और उत्पीड़न की जगह न हो। शोषण-मुक्त समाज का निर्माण उनकी रचनाओं में मुखर होती है। वे युद्ध की क्रूरता एवं सर्वथा अवांछनीयता का प्रतिपादन करते हैं लेकिन जब तक समतामूलक समाज की स्थापना नहीं हो जाती, तब तक इसे रोका नहीं जा सकता-

शांति नहीं तब तक जब तक सुखभाग न नर का सम होगा
नहीं किसी को बहुत अधिक हो, नहीं किसी को कम हो।

दिनकर जी के युद्ध-दर्शन पर प्रगतिशील चिंतन का गहरा प्रभाव है-

जब तक मानव-मानव का सुखभाग नहीं सम होगा
शमित न होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम होगा।

उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' जिस पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था 'साझे की संस्कृति तथा विविधता में एकता' के प्रासंगिक विचारों की पुष्टि प्रबल ढंग से करती है। धर्म निरपेक्ष विचारधारा से आप्लावित दिनकर जी की आस्था काव्य में सांस्कृतिक समन्वय की है। उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा कि हिंदी को राष्ट्रभाषा इसलिए माना गया है क्योंकि केवल वही भारत की सांस्कृतिक एकता एवं राजनीतिक

अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने में सामर्थ्यवान है। आज जब देश सांप्रदायिक उन्माद एवं धार्मिक कट्टरता का मुकाबला कर रहा है तो 'संस्कृति के चार अध्याय' के निष्कर्षों पर अमल करने की नितांत जरूरत है। जब तक ऐसी समस्याएँ रहेंगी, दिनकर की रचनाएँ उनके निराकरण के लिए शक्ति प्रदान करती रहेगी तथा दिनकर प्रासंगिक रहेंगे। सच्चा कवि कालजयी होता है बहादुर शाह जफ़र ने ठीक ही कहा है-

मुझको दुनिया में जफ़र कौन मिटा सकता है
मैं तो शायर हूँ, किताबों में बिखर जाऊँगा।

1952 में रचित 'रश्मिरथी' नामक खंडकाव्य जो महाभारत में उपेक्षित महानायक कर्ण के जीवन को रूपायित करता है, दिनकर की लोकप्रियता को सर्वाधिक ऊँचाई दी। कर्ण वर्ण-व्यवस्था का साक्षात खंडन था। उदात्त गुणों से पूर्ण होकर भी सामाजिक उपेक्षा से दग्ध तथा द्रोणाचार्य जैसे राजगुरुओं से अपमानित कर्ण की ललकार प्रासंगिक है-

जाति-जाति रटते जिनकी पूँजी केवल पाखंड
मैं क्या जानूँ जाति? जाति हैं ये मेरे भुजदंड।
जिस पापी को गुण नहीं, गोत्र प्यारा है
समझो उसने ही यहाँ हमें मारा है।
किसी वृंत पर खिले विपिन में, पर, नमस्य है फूल
नर का गुण उज्ज्वल चरित्र है, नहीं वंश, धन, धाम।

इन पंक्तियों में प्रबल आत्मविश्वास एवं पुरुषार्थ की शक्ति है। ये विभेदन चिह्न को मिटा देती है। जाति, क्षेत्र, धर्म तथा भाषा के नाम पर मनुजता को कलंकित करने वालों पर तीव्र प्रहार है। ये पंक्तियाँ कर्ण के व्यक्तित्व एवं जीवन संघर्ष को व्यंजित करती है।

कृष्ण की न्याय-याचना को ठुकरा कर दुर्योधन कृष्ण को बंदी बनाने के षड्यंत्र में लग जाता है। इसकी मार्मिक अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में दिनकर ने किया है-

जब नाश मनुज पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है।

उन्होंने लोगों को ललकारते हुए कर्तव्य-बोध जगाने का अद्भुत कार्य किया है-

मानव जब जोर लगाता है
पत्थर पानी बन जाता है
बत्ती जो नहीं जलाता है
रोशनी नहीं वह पाता है।
क्रिया को छोड़ चिंतन में फँसेगा
उलटकर काल तुझको ही ग्रसेगा।
श्रम है केवल सार, काम करना अच्छा है
चिंता है दु:ख-भार, सोचना पागलपन है।

हालाँकि हिंदी पाठकों के बीच राष्ट्रकवि दिनकर का कवि रूप ही काफी उजागर हुआ है, लेकिन वे एक उत्कृष्ट गद्यकार भी थे। प्राचीन मनीषियों ने भी गद्य को कवियों की कसौटी माना है-

'गद्य कविनां निकशं दर्दंति।'

दिनकर का गद्य प्रगल्भ तथा प्रभावोत्पादक है। स्वतंत्रता के बाद मुख्य रूप से दिनकर गद्य सृजन की ओर उन्मुख हुए। उन्होंने कहा है- 'सरस्वती की जवानी कविता है और उसका बुढ़ापा दर्शन है।'

दिनकर महात्मा गाँधी, इकबाल, रवींद्रनाथ टैगोर, मिल्टन, कीट्स, बर्टेंड रसेल, महर्षि अरविंद से प्रभावित थे। उनकी ये पंक्तियाँ- 'सेनानी करो प्रयाण भावी इतिहास तुम्हारा है' समाज रचने की अद्भुत प्रेरणा प्रदान करती है। इमरजेंसी में रामलीला मैदान में लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने दिनकर की प्रसिद्ध कविता 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है' का ओजपूर्ण ढंग से पाठ कर जनमानस को आंदोलित किया था।

दिनकर जी श्रमसाध्य जीवन जीये। इनकी साहित्य साधना अद्भुत थी। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत, क्रांतिपूर्ण संघर्ष की प्रेरणा देने वाली ओजस्वी कविताओं के कारण उन्हें आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीररस के कवि के रूप में जाना जाता है। छायावादी युग का प्रभाव होने के कारण उनकी रचनाओं में शृंगार का भी विशिष्टता के साथ प्रमाण मिलता है। बेनीपुरी जी ने कहा है- 'अंगारे एवं इंद्रधनुष, दोनों ही दिनकर जी के काव्य में सहवासी रहे हैं। कभी एक साथ, कभी बारी-बारी से प्रभावित।'

रोटी दो, मत उसे गीत दो, जिसको भूख लगी है,
भूखों में दर्शन उभारना छल है, दगा, ठगी है।

दिनकर ने भाषा को नया रूप दिया। जनमानस के लिए सहज ग्राह्य और विश्वस्त शब्दों का प्रयोग किया। उन्होंने पांडित्यपूर्ण भाषा को नहीं अपनाया। अपनी कविताओं में अभिव्यक्ति को सफाई के निकटतम तल से जोड़ा तथा काव्यालोचन में नग्न यथार्थता, सच्चाई एवं स्पष्ट कथन का सहारा लिया। वे मिट्टी के कवि थे तथा सदा जमीन से जुड़े रहे।

ऊपर सब कुछ शून्य-शून्य है
कुछ भी नहीं गगन में
धर्मराज! जो कुछ है, वह है
मिट्टी में, जीवन में।
धर्मराज! कर्मठ मनुष्य का
पथ संन्यास नहीं है।
नर जिस पर चलता, वह मिट्टी,
है, आकाश नहीं है।

दिनकर जी बहुआयामी कवि थे। उनकी बहुकोणी संवेदना तथा रचनात्मक सहृदयता प्रभावी ढंग से कविताओं में परिलक्षित होती हैं। वे प्रगतिशील चेतना के प्रखरतम कवि थे। अपनी अद्वितीय रचनाओं से समग्र हिंदी साहित्य को विभूषित किया है तथा अमरता प्राप्त की है। आनेवाली पीढ़ी इस प्रतिभा-संपन्न जनकवि को श्रद्धा एवं सम्मान के साथ याद करेगी तथा कर्मठ, समता, संकल्पशीलता, वीरता, धीरता एवं अन्य मानवोचित गुणों को अपनाने के लिए प्रेरणा ग्रहण करेगी। v

फ्लैट नं. 403
वासुदेवझरी अपार्टमेंट
वेदनगर, रूकनपुरा
पो.-बी. भी. कॉलेज पटना-800014
**संपर्क: 09934083444**
**ईमेल: pkrai1@rediffmail.com**

## लेखकों/रचनाकारों से निवेदन

**'रेल रश्मि' में प्रकाशनार्थ रेल से संबंधित विषयों पर तकनीकी/ गैर-तकनीकी लेख, कहानी, कविता, ग़ज़ल, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, योग, अध्यात्म आदि अनेकानेक विधाओं/विषयों पर स्तरीय रचनाएँ आमंत्रित की जाती हैं। रचनाओं पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है। कृपया नोट करें कि रचनाएँ टाइप की हुई अथवा कंप्यूटर के माध्यम से स्वच्छ टंकित की हुई अवश्य हो। रचना हार्ड कापी के साथ सी.डी./पेन ड्राइव/मेल के द्वारा भी दी जा सकती है। रचना कागज के एक ही ओर दोनों तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़ कर लिखें और दो पंक्तियों के बीच पर्याप्त स्थान अवश्य छोड़ें। रचना स्पष्ट और सुपाठ्य हो। रचना को भेजने से पूर्व एक बार पढ़कर पाठ अवश्य शुद्ध कर लें और मूल प्रति ही भेजें। रचनाओं के साथ इस आशय का प्रमाण/घोषणा पत्र भी होना चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक/रचनाकार की मौलिक कृति है और यह इससे पहले प्रकाशित नहीं हुई है। रचना के साथ पिन कोड संख्या व संपर्क नंबर अवश्य उद्धृत करें।**

**कई रचनाएँ एक साथ न भेजें। साथ ही रचना एक से दो फुल स्केप के आकार के पृष्ठों से अधिक न हो। यदि किसी कारणवश किसी रचना को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा।**

**रचनाएँ निम्न पते पर भी भेज सकते हैं-**

**संपादक**
**रेल रश्मि**
**केंद्रीय हिंदी अनुभाग**
**मुकाधि कार्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे**
**गोरखपुर-273012**
**ईमेल: seniorol9@gmail.com**

◆ लेख ◆

# भारतीय भाषा बनाम अंग्रेजी

संजय कुमार सिंह

एक बार फिर से भारतीय भाषा बनाम अंग्रेजी का मुद्दा सामने है। समाज के बड़े तबके द्वारा यह मान लिया गया था कि भाषा जैसे मुद्दे पर अब कोई सवाल नहीं उठने वाला है। पिछले भाषा आंदोलनों को भी फालतू मान लिया गया था और यह स्वत: सिद्ध मान लिया गया कि अंग्रेजी का रथ निर्बाध गति से चलेगा और उसी में देश की तरक्की है, लेकिन यह मुद्दा फिर से जीवित हो गया। खास बात यह है कि इस बार ठोस अर्थ में अंग्रेजी के सामने भारतीय भाषाओं का सवाल है। केवल हिंदी बनाम अंग्रेजी का मसला नहीं है, हालाँकि कुछ लोगों द्वारा यह प्रयास किया जा रहा है कि मसला केवल हिंदी बनाम अंग्रेजी का बन जाए और दक्षिण के नागरिक अंग्रेजी के पक्ष में खड़े हो जाएँ।

यह मुद्दा संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा के परिप्रेक्ष्य में उठा है, इसलिए इसकी पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है। संघ लोक सेवा आयोग भारत की स्वायत्त संस्था है। भारत के लिए प्रथम श्रेणी के अधिकारियों का चयन करना इसका उत्तरदायित्व है। आजादी के पूर्व भारतीय सिविल सेवा के माध्यम से भारत आने वाले प्रथम श्रेणी अंग्रेज अधिकारियों का चयन ब्रिटेन में आयोजित परीक्षा के द्वारा होता था। जाहिर सी बात है कि इस परीक्षा का माध्यम पूरी तरह अंग्रेजी था। इससे प्राय: अंग्रेज ही चयनित होकर आते थे। बाद में कुछ भारतीय भी इस परीक्षा में चयनित हुए। रेखांकित करने योग्य बात यह है कि अंग्रेजों ने अपनी प्रशासनिक दृष्टि और समझदारी के चलते इस परीक्षा में हिंदी का भी एक पाठ्यक्रम रखा था, जिसे पिन्काट ने तैयार किया था। वे यह मानते थे कि भारत में सेवा करनी है तो हिंदी का ज्ञान आवश्यक है, इसीलिए प्रत्येक सिविल अधिकारी को यह परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती थी।

प्रथम श्रेणी की नौकरी ज्यादातर अंग्रेजों को ही मिलती थी। उनकी मानसिकता में यह बात घर कर गई कि अधिकारी अंग्रेज रहें और बाबू भारतीय। बाबुओं ने अधिकारियों का अनुकरण किया और लार्ड मैकाले की नीति के अनुसार अंग्रेजी शिक्षा को तेजी से अपनाकर बाबूगिरी की। इसतरह तरक्की के लिए भारत में अंग्रेजी भक्त समुदाय पैदा हुआ। अंग्रेजी जानना जिसकी विशिष्टता हुई। अंग्रेजी जानकर इस वर्ग ने समाज की भीड़ से अपने को अलग किया। हालाँकि अंग्रेज अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदुस्तानी कर्मचारियों को बराबर का दर्जा नहीं देते थे। यहाँ तक कि उनकी तनख्वाहें भी ज्यादा रखी जाती थी। लेकिन इसमें भी हिंदुस्तानी कर्मचारियों ने सहयोग करते हुए श्रेणी मानसिकता से हिकारत की नजर से देखने के लिए अपने से नीचे के कर्मचारियों को खोज लिया।

आजादी के बाद भी अंग्रेजी के जरिये श्रेष्ठतावाद की यह मानसिकता खत्म नहीं हुई। संघ की भाषा नीति लागू होने के बाद भी प्रथम श्रेणी अधिकारियों ने अंग्रेजी ज्ञान को अपनी विशिष्टता के रूप में बनाए रखा। इसका बड़ा कारण था कि संघ लोक सेवा आयोग की सभी परीक्षाओं का माध्यम अंग्रेजी था। अंग्रेजी की अच्छी जानकारी रखने वाले अभिजात्य समूह के लोग ही इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते थे। यही कारण है कि संघ की भाषा नीति का असर दफ्तर के कर्मचारियों पर तो कुछ हद तक पड़ा, लेकिन उच्च अधिकारियों ने उससे अपनी दूरी बनाए रखी और इससे उनकी विशिष्टता और अहंकार का भी पोषण होता रहा।

स्थिति में थोड़ा बदलाव आया 1979 में, जब डा. दौलत सिंह कोठारी की रपट कुछ सीमा तक लागू की गई। डा. दौलत सिंह कोठारी श्रेष्ठ वैज्ञानिक थे, शिक्षाविद् थे, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष थे, भारत सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार थे। इसके अलावा उन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण शोधों एवं परियोजनाओं में कार्य किया था। उनकी अध्यक्षता में भारत सरकार ने 14 जुलाई 1964 को शिक्षा आयोग का गठन किया। इस आयोग में उनके अलावा 16 सदस्य थे, जिसमें से 11 भारतीय एवं 05 विदेशी विशेषज्ञ थे। इस आयोग ने 29 जून 1966 को अपनी रपट प्रस्तुत की। इस रपट पर संसद में चर्चा हुई। संसदीय समिति ने इसकी सिफारिशों को देखा और अपनी संस्तुति दी। इसकी कुछ बातों को सरकार ने लागू किया। यह आयोग शिक्षा के लिए गठित किया गया था, लेकिन शिक्षा के माध्यम के रूप में आयोग ने यह सिफारिश

किया कि प्राथमिक से लेकर स्नातकोत्तर तक की शिक्षा भारतीय भाषाओं में दी जाए। इसी आयोग ने संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में भी माध्यम के रूप में अष्टम अनुसूची में अनुसूचित भारतीय भाषाओं को अपनाए जाने की सिफारिश की। इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया गया। फलस्वरूप 1979 से संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित भारतीय प्रशासनिक तथा अन्य अनुषंगी परीक्षाओं में माध्यम के रूप में भारतीय भाषाओं को स्वीकार किया गया, लेकिन भारतीय सांख्यिकी सेवा, भारतीय वन सेवा, भारतीय आर्थिक सेवा, इंजीनियरी सेवा जैसी परीक्षाओं की प्रणाली में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। ये परीक्षाएँ अंग्रेजी माध्यम से ज्यों की त्यों रखी गई।

भारतीय प्रशासनिक तथा अनुषंगी सेवाओं के लिए आयोजित परीक्षा में मुख्य परीक्षा के साथ अंग्रेजी का एक पेपर होता था, जिसे सिर्फ क्वालीफाई करना पड़ता था एवं मुख्य परीक्षाएँ हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से देने को मिलने लगी तो भारतीय भाषाओं को माध्यम के रूप में अपनाकर परीक्षाएँ देने वालों की संख्या बढ़ी और ऐसे विद्यार्थी भी चयनित होने लगे, जो अपने प्रांतों में प्रांतीय भाषा माध्यमों के स्कूल में शिक्षा ग्रहण करते थे। जनसत्ता (14 मार्च 2011) में प्रकाशित लेख 'सामाजिक न्याय और भाषा' में दिए गए आँकड़ों पर गौर करें, '2006 की मुख्य परीक्षा में हिंदी माध्यम से 3360, अन्य भारतीय भाषाओं से 250 और अंग्रेजी माध्यम से 3937 परीक्षार्थी बैठे थे। 2007 की मुख्य परीक्षा में हिंदी माध्यम से 3751, अन्य भारतीय भाषाओं से 318 और अंग्रेजी माध्यम से 4815 परीक्षार्थी, 2008 की मुख्य परीक्षा में हिंदी माध्यम से 5117, अन्य भारतीय भाषाओं से 381 और अंग्रेजी माध्यम से 5822 परीक्षार्थी बैठे थे।' इसका अर्थ यह निकलता है कि धीरे-धीरे भारतीय भाषाओं में परीक्षा देने वालों की संख्या बढ़ कर लगभग 50 प्रतिशत तक हो रही थी। इनमें से मुख्य परीक्षा में सफल होने वालों की संख्या भी बढ़ रही थी। इस स्थिति के बावजूद कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से चलने वाले स्कूल संसाधन और सुविधा के लिहाज से कमतर होते हैं और इनमें पढ़ने वाले छात्र भी तुलनात्मक रूप से कम सुविधा संसाधन संपन्न होते हैं, सिविल सेवा परीक्षा में उनकी सफलता का प्रतिशत बढ़ रहा था। कदाचित यह स्थिति अभिजात तबके को रास नहीं आई। उन्होंने सुधार के नाम पर 2011 में प्राथमिक परीक्षा में ही सी-सैट (सिविल सर्विस एप्टीट्यूट टेस्ट) यानी अभिक्षमता परीक्षा का प्रावधान किया, उसी शैली में, जिस तरह यह परीक्षा प्रबंधन संस्थानों में प्रवेश के लिए ली जाती है।

इस सी-सैट के विरोध में मौजूदा आंदोलन इसलिए उभरा क्योंकि पिछले तीन वर्षों में भारतीय भाषाओं के माध्यम से प्रारंभिक परीक्षा देने वाले छात्रों में से मुख्य परीक्षा तक पहुँचने वाले छात्रों की संख्या तेजी से गिरी। इस वर्ष के मुख्य परीक्षा के परिणाम घोषित होने पर अब शीर्ष पच्चीस छात्रों में एक भी हिंदी माध्यम का छात्र नहीं आया तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कन्नड़ का सिर्फ एक छात्र आ पाया तो चिंता बढ़ी। कुछ आँकड़ों पर गौर करें। 2008 की मुख्य परीक्षा में हिंदी माध्यम के 5117 छात्र थे, तेलुगु के 117 छात्र थे, तमिल के 98 छात्र थे। 2011 की मुख्य परीक्षा में हिंदी माध्यम के 1682, तेलुगु के 29, तमिल के सिर्फ 5 छात्र रहे। इसके बरक्स अंग्रेजी माध्यम के सफल अभ्यर्थियों की संख्या बढ़ती गई। वर्ष 2009 में सफल 11,504 छात्रों में से 6,250 अंग्रेजी के थे, 2010 में सफल 11,859 में से 7,371 छात्र अंग्रेजी के थे और 2011 में सफल 11,230 छात्रों में से 9,316 छात्र अंग्रेजी के थे। सी-सैट के प्रभाव का इससे स्पष्ट प्रमाण क्या हो सकता है?

आखिर सी-सैट क्या है? वस्तुतः प्रारंभिक परीक्षा के चार सौ अंकों के पेपर में 200 अंक विषय के पेपर के हैं और 200 अंक सी-सैट के। सी-सैट यानी अभिक्षमता परीक्षण के 200 अंकों में 25 अंक अंग्रेजी कंप्रिहेंसन के हैं और शेष अंकगणित, तर्क परीक्षण, बुद्धिमत्ता परीक्षण के। इस परीक्षा में अभ्यर्थियों की दो-तीन आपत्तियाँ हैं। पहली यह कि अंग्रेजी कंप्रिहेंसिव कहने को तो हाई स्कूल स्तर का है, लेकिन व्यावहारिक रूप से उसका स्तर ऐसा होता है कि अंग्रेजी माध्यम से पढ़े अभ्यर्थी ही समुचित रूप से हल कर सकते हैं। दूसरा प्रश्न पत्र मूलतः अंग्रेजी में तैयार किए जाते हैं, अन्य भाषाओं में उसका अनुवाद किया जाता है। यह अनुवाद इतना जटिल और अबोध होता है कि भारतीय भाषाओं के छात्रों को समझने में कठिनाई होती है। इसके अलावा जानकारों द्वारा यह भी बताया जा रहा है कि सी-सैट के अन्य प्रश्न भी

उन छात्रों के ज्यादा अनुकूल होते हैं, जो बड़े शहरों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, प्रोफेशनल जगहों से कोचिंग ले रहे हैं, प्रबंधन संस्थानों की तैयारी कर रहे हैं। इसके चलते मानविकी विषयों का अध्ययन कर रहे ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्र स्वाभाविक रूप से पीछे हो रहे हैं, क्योंकि अंग्रेजी का शब्द लेकर कहें तो उनके पास वैसा 'एक्सपोजर' नहीं है।

उपर्युक्त तीनों समस्याओं को ध्यान में रखें तो सी-सैट में शामिल अंग्रेजी अंकों को मेरिट में शामिल न किए जाने का निर्णय अधूरा है और इससे बहुत ज्यादा राहत मिलने की उम्मीद नहीं है। हालाँकि कुछ लोग इस निर्णय के भी विरोध में हैं और मानते हैं कि यह परीक्षा जरूरी है। इसलिए इस परीक्षा पर एक व्यापक एवं सुचिंतित नीति जरूरी है। इस नीति को बनाने के पूर्व खुले दिमाग से यह विचार करना होगा कि भारतीय लोकसेवकों के लिए अंग्रेजी का सीमित ज्ञान ही आवश्यक है, वह भी कुछ ही लोकसेवकों के लिए। यह भी मानना होगा कि भारतीय भाषाओं में दक्ष लोकसेवक जनता की मानसिकता, उसकी जरूरतों को ज्यादा अच्छी तरह समझ सकते हैं और उससे आत्मीयता स्थापित करते हुए बेहतर सेवा दे सकते हैं। जब तक उच्च नौकरशाहों के भीतर से भारतीय भाषाओं को लेकर मानसिक अवरोध सही मायने में खत्म नहीं होता तब तक संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं की वास्तविक प्रतिष्ठा नहीं होगी और जब तक संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा नहीं होगी तब तक संघ की राजभाषा नीति भी कार्यालयों में समुचित रूप से लागू नहीं हो पाएगी।

इस लेख में विस्तार का अवसर नहीं है, फिर भी एक बात कहना आवश्यक है कि वस्तुतः यह समस्या सिर्फ सी-सैट की नहीं है। आंदोलन की जड़ में यह है कि आज हम बहुस्तरीय शिक्षा के दौर से गुजर रहे हैं। समाज में संचालित शैक्षणिक संस्थाओं को सामान्य रूप से भी देखें तो कम-से-कम शिक्षा के छः-सात स्तर दिख जाएँगे। पहले स्तर और अंतिम स्तर श्रेष्ठ स्तर के बीच गुणवत्ता, पाठ्यक्रम, सुविधा की दृष्टि से जमीन आसमान का स्तर है। गाँव-गाँव तक अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खुलने के बावजूद गुणवत्ता के स्तर पर खाई बढ़ती जा रही है। इससे उपजा असंतोष और आक्रोश भी देर-सबेर समाज को अपनी गिरफ्त में लेगा, फिर बहाना चाहे नौकरी बने या भाषा या बेरोजगारी या असमानता। डा. दौलत सिंह कोठारी ने अपनी रपट में इसे रेखांकित किया था और एकरूपी शिक्षा की सिफारिश की थी, लेकिन रपट के इस हिस्से को अभी तक नहीं माना गया। उनका स्पष्ट मत था कि प्राथमिक शिक्षा सभी बच्चों को एक जैसे स्कूल में अपने निकटतम पड़ोस में मिलनी चाहिए। भाषा के तात्कालिक आंदोलन की मांग भले ही सीमित हो, लेकिन छात्रों के संकट का दायरा व्यापक है। क्या मौजूदा भारत के सचेत नौकरशाह, राजनेता, बुद्धिजीवी व्यापक विचार कर कोठारी आयोग की रपट के संदर्भ में ठोस निर्णय लेने के लिए तैयार हैं। भारत के सुनहले भविष्य का यह बड़ा आधार है। v

राजभाषा अधिकारी
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी
**संपर्कः 09794843610**

**जीवन भी मिला, प्यार भी, क्या और चाहिए?**
**गुलशन भी मिला, बहार भी, क्या और चाहिए?**
**साँसों की कसक फाँस गले की न बन सकी,**
**सुर भी मिला, सितार भी, क्या और चाहिए?**
**कतरा ही सही, सूख गया तो न रेत में,**
**दरिया मिला, दयार भी, क्या और चाहिए?**
**कब जिंदगी के दौर में संजीदगी न थी,**
**ग़म भी मिला ग़मख्वार भी, क्या और चाहिए?**

**-आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री**

◆ लेख ◆

# संपर्क भाषा हिंदी ही हो सकती है

ई. गोविंद प्रसाद शुक्ल 'धुनी'

**जब** कभी हिंदी की बात की जाती है, कुछ लोगों को बोझ लगने लगती है जबकि मैकाले की अंग्रेजी उन्हें हल्की लगती है। नि:संदेह संपूर्ण भारत में हिंदी बोली एवं समझी जाती है और किसी प्रांतीय भाषा के आड़े नहीं आती। हमें हिंदी के पक्ष में बयानों की आवश्यकता नहीं। हिंदी तो स्वाभाविक रूप से 70 प्रतिशत देश और विदेशों में बोली जाने वाली, संपूर्ण देश को एकसूत्र में पिरोने वाली भाषा है। वह भी हिंदी जानते और बोलते हैं, जो हिंदी का विरोध करते हैं।

**दक्षिण भारत में भी स्वीकार्य**

हिंदी संपूर्ण भारत में स्वीकार्य है। शेष भय की राजनीति है, जो हिंदी के विरोध में खड़ी है। दक्षिण भारतीयों को उत्तर भारत में मजदूरों से संपर्क हिंदी में ही करना होता है। उसीप्रकार उत्तर भारतीय भी दक्षिण में वहाँ के क्षेत्रीय भाषा में ही संपर्क करते हैं, न कि अंग्रेजी में। दक्षिण भारतीय राजनीतिज्ञ कभी भी अपनी क्षेत्रीय भाषा और हिंदी के सामंजस्य की बात नहीं करते। वह सदैव हिंदी विरोध को अस्त्र-शस्त्र की तरह प्रयोग करने लगते हैं, जो ठीक नहीं। देश का विकास संपूर्ण भारत के लिए एक संपर्क भाषा से संभव हो सकता है। अंग्रेजी से तो कभी भी यह संभव नहीं हो सकता है। यदि ऐसा होता तो हम भी विकसित न बने रहते।

**संघे शक्ति कलियुगे**

कलियुग में एकता में ही बल है, ऐसा कहा गया है। कहते हैं कि 'चार जने चारिहु दिशा से, मेरु को हलाये के उखाड़ें तो उखड़ जाए।'

देश के विकास के लिए, एकता के लिए, एकसूत्र के लिए हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया जाना आज की आवश्यकता है। यह केवल सरकार के प्रयास से किया जाना संभव नहीं, हमें सरकार के सुर से सुर मिलाने की जरूरत है-

'मिले सुर मेरा तुम्हारा, तो सुर बने हमारा।'

हिंदी के लिए देश के चारों दिशाओं से आवाज लगाना होगा। सभी क्षेत्रीय भाषाएँ, सभी लोग एक सुर से हिंदी के सहयोगी बनें।

**ईमानदार प्रयास**

हिंदी के साहित्यिक विकास के साथ-साथ संपर्क भाषा के रूप में ईमानदार प्रयास आवश्यक है। शब्दकोश संरचना को समृद्धि तक ले जाने की जरूरत है। काम-काज में हिंदी का प्रयोग आँकड़ों तक सीमित न रहे। आँकड़े हिंदी का भला नहीं कर सकते हैं। वास्तविक प्रयास हिंदी के लिए उपयोगी होंगे। साथ ही उसका समाज पर असर दिखेगा। विरोधाभासी बातें नहीं होंगी। जब हम देश के वास्तविक विकास से जुड़े होंगे तथा नकारात्मक राजनीति के लिए सोच नहीं होगा। समरस प्रगति सकारात्मक और उदार मानसिकता से ही संभव है। आइये, हम भारतीय भाषाओं की प्रगति हिंदी माध्यम और संपर्क से बढ़ाने का प्रयास करें।

**रचनात्मक हिंदी भाषाई गुलदस्ता**

किसी भी भाषा में साहित्य ही पूँजी होती है। क्षेत्रीय भाषाओं में किए जा रहे रचनात्मक कार्यों में देश की संबंधित पूँजी और विविधता उसके गुलदस्ता हैं, परंतु अंग्रेजी की कीमत पर अपनी मौलिकता, सरलता, स्वीकार्यता से समझौता नहीं। अंग्रेजी को हम संपर्क भाषा नहीं बना सकते। हिंदी की सहज स्वीकार्यता ही इसे राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करती है। भारतवर्ष में एकता की मजबूत डोर हिंदी से और क्षेत्रीय भाषाओं से ही हो सकती है। यह बड़े खेद की बात है कि अंग्रेजी को लोग हिंदी के समानांतर खड़ा करना चाह रहे हैं। संस्कृत विरोध तक पर लोग उतर आए हैं। इसतरह की मानसिकता देश को कमजोर करने वाली है। हमें रचनात्मक पूँजी से भाषाई-गुलदस्ता को सजाना है, सँवारना है।

**हिंदी की रथयात्रा**

गोस्वामी तुलसीदास जी ने हिंदी की रथयात्रा 'रामचरितमानस' से आरंभ तो कर दिया, परंतु पड़ाव भी कई आए। भारतेंदु युग, द्विवेदी युग के साथ-साथ कई युगांतकारी स्तंभों ने हिंदी के रथ को लोकप्रिय, मनभावन रचनाधर्मिता से लगातार आगे बढ़ाया। जहाँ गिरमिटिया मजदूर, अंग्रेजों द्वारा कई द्वीपों में ले जाए गए मजदूरों ने हिंदी का अंतर्राष्ट्रीयकरण किया। वहीं भूतपूर्व प्रधानमंत्री

अटल बिहारी बाजपेयी ने इसे विश्व जगत में स्वीकार्य बनाया। अब इसका बीड़ा उठाया वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने। हिंदी की रथयात्रा आगे बढ़ रही है। हम सभी इस रथयात्रा को आगे बढ़ाने में लगें और राष्ट्रभाषा के दर्जा का पड़ाव निश्चित करें। देश को हमारी नज़र न लगे, स्वार्थी-तत्वों से, आइए अपने प्रयास का डिठौना लगाएँ।

**संस्कृत, संस्कृति और हम**

भारतवर्ष आगे न बढ़ने पाए इसका पुरजोर षड्यंत्र देश में चल रहा है। भारत की एक संपर्क भाषा न हो। हिंदी तो कतई बर्दाश्त नहीं। अंग्रेजों की तरह अंग्रेजी और अंग्रेज न सही अंग्रेजी के चाटुकार हैं, जो देश को स्वावलंबी नहीं बनने देना चाहते। संस्कृत तो बर्दाश्त ही नहीं है, कहीं स्वाभिमान न जाग जाए देशवासियों का। देश के लोग जितने बिकाऊ होंगे, भ्रष्ट होंगे, संस्कृत और संस्कृति से जितने कटे होंगे, उतना ही वह गुलामी के नजदीक होंगे। हमारी स्थिति तब तक मजबूत न बनेगी, जब तक हम संस्कृत और अपनी संस्कृति के निकट न होंगे। अत: संस्कृत के प्रति रुचि, संस्कृति का अभिमान और देश के प्रति प्रेम हमें जगाना ही होगा अपने स्वावलंबी भारत के लिए।

**देश के विकास में हिंदी का योगदान**

हमारा तकनीकी योगदान हिंदी का अवलंब प्राप्त कर आमजन को ग्राह्य होगा। वैदिक साहित्य यजुर्वेद विमान संरचना, अर्थ संचालन की अतीत गौरव से भरा पड़ा है। हम संस्कृत नहीं जानते, अत: हम भारत के गौरव से पूर्ण परिचित नहीं हो पाते हैं। यदि हम हिंदी न जानें तो अपने मूल से कट जाएँगे और हम देशी संसाधनों से देश का मौलिक विकास नहीं कर पाएँगे। देश आयातित तकनीक की बैसाखी पर लड़खड़ाता हुआ, पंगु सरीखा विकासशील बना रहेगा। हमें चाहिए कि अंग्रेजी भाषा में तकनीक हासिल करते समय आधा समय शब्दों का अर्थ समझने और उसे जोड़ कर वाक्य बनाने में लगाएँ। सर्वजन उपलब्ध तकनीकी साहित्य हिंदी में कराएँ और इस देश को विकासशील से विकसित राष्ट्र बनाएँ। देश के विकास में हिंदी का सहयोग लेना सीखें। हम अपनी तमाम तकनीकी, वैज्ञानिक चर्चाएँ हिंदी में कर आमजन को विकास से जोड़ें।

**रचनाकार आगे आएँ**

रचनाकार को आगे आकर देश को जगाने का कार्य करना चाहिए। हृदय का मंथन समुद्र मंथन की तरह करना चाहिए। अपनी रचनात्मक संवेग से सोचने पर मजबूर करना चाहिए, आम जनता को। मंचों से संदेश की अभिव्यक्ति की जानी चाहिए श्रोताओं के बीच और एक नई ऊर्जा के साथ वह निकल पड़े आंदोलन बनकर जो देश की दिशा और दशा बदल दे। लेख, कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक विधा कोई भी हो ऊर्जा का संचार करे। लोगों की तंद्रा भंग हो। लोग उठ खड़े हों लड़ाई के लिए। देश से आलस्य की विदाई के लिए। हिंदी फिल्मों के गीत किसे नहीं झूमने को, नाचने को, गुनगुनाने को विवश कर देते हैं। कौन सी वैज्ञानिकता है? कभी सोचा है आपने? तो, 'का चुप साधि रहेउ बलवाना' की तर्ज पर पड़े हुए हैं, चुप न रहिए, कहिए, कुछ तो कहिए।

**देश की मिट्टी की महक हिंदी है**

देश की सोंधी महक गुलज़ार है, सदाबहार है, तो हिंदी है। कवियों की, वीरों का उद्गार है हिंदी। पकवानों का स्वाद, स्वादों में प्यार हिंदी है। खेतों की हरियाली, पगडंडी हिंदी है। माँ, बहनों, बंधुओं के माथे की बिंदी हिंदी है। हिंदी में हम मान-सम्मान, सत्कार की बातें करते हैं। गाली-गलौज से लेकर सारे कर्म हिंदी में होते हैं। हम गाते हैं हिंदी में, रोते हैं हिंदी में; फिर हिंदी का नाम सुनकर कुछ लोग चिहुँक क्यों जाते हैं? उनकी सेहत पर क्या फर्क पड़ता है? कमाई तो बंद नहीं हुई जा रही है। केवल यह है कि 'संघ लोक सेवा आयोग' के चयन स्पर्द्धा में मुट्ठी भर लोगों का कहीं वर्चस्व न खत्म हो जाए। हिंदी भाषी कहीं आगे न बढ़ जाएँ। उन्हें अंग्रेजी लादकर क्यों न दबा कर गुलाम बनाकर रखी जाए। आखिर इस देश की महक, चिड़ियों की चहक, नदी की कल-कल धार एक सौम्य शांत व्यवहार लोग क्यों छीन लेना चाहते हैं? जबकि देश की मिट्टी की महक हिंदी है।

**सोने की दमक हिंदी है**

हिंदी देश की रग-रग में बसी है। हिंदी साहित्य में प्रकृति की सुरम्य वादियाँ, सूर्य का उदय और अस्त, चाँद की अमृतमयी शीतल किरणें, तारों की चमक और सोने की दमक है। अलंकार, रूपक, उपमा से लदी-फदी हिंदी किसे न आकर्षित कर ले? किसे न अपने मोहपाश में भर ले? हिंदी की लोकप्रियता उसके सुंदर लिखावट

में है। हम सभी भारतीय क्यों न हिंदी की समृद्धि में योग दें। इसे सरल, सुगम्य बनाएँ। आध्यात्मिक पहचान दें। अभिव्यक्ति का सोपान दें। हमारा हर दिन हिंदी दिवस हो सकता है। हम कभी न किसी विदेशी भाषा के लिए विवश हों। इसलिए हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ाएँ।

राजनीति का हिंदी के मार्ग में कोई स्थान न हो, ऐसा प्रयास करें। देश हित की बात सोचें। लोगों को जोड़ें, तोड़ें नहीं। यह देश की एकता का, अस्मिता का और प्रगति का सवाल है। हम हिंदी के प्रति संवेदनशील बनें और देश को मजबूत करें।

**देश की पहचान और अभिमान हिंदी है**

इतिहास के दागदार पन्नों में वह दिन शामिल हो गया जब गुलामी मानसिकता द्वारा देश की जनता पर अंग्रेजीपरस्त लोगों ने अंग्रेजी थोप दिया। देश को शक्ति पाने के लिए एकता की बात करनी ही होगी। हम अंग्रेजी से मजबूत नहीं हो सकते। यदि हो सकते हैं तो हिंदी से मजबूत हो सकते हैं। हिंदी इस देश की पहचान और अभिमान है। हमने स्वतंत्रता पाई है, हिंदी से पूरे भारत को जोड़कर। हमारे देश की अशिक्षित जनता केवल हिंदी जानती थी। अंग्रेजी तो केवल कुछ लोगों द्वारा अंग्रेजों से बात करने की भाषा थी। लड़ाई की भाषा हिंदी ही थी, संस्कृत ही थी।

हम पिछड़े हैं अपने स्वार्थ और भ्रष्ट आचरण से न कि हिंदी से, संस्कृत से। हम वास्तविकता से, अपनी कमजोरी से मुकरते क्यों हैं? अपनी फूट, जग की लूट। कहा है-

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना।।

**शत्रुओं की व्यवधान हिंदी है**

शत्रु-देश, देश के शत्रु हमेशा इस देश को बँटा हुआ देखना चाहते हैं। चाहे जैसे बाँट लो। धर्म के नाम पर, कर्म के नाम पर, भाषा के नाम पर, जाति के नाम पर, बोली के नाम पर, टोली के नाम पर जैसे ही लगेगा कि सब एक हो रहे हैं; देश के नाम पर शत्रुओं के पेट में दर्द होने लगता है। हमने हिंदी का विरोध किया, संस्कृत का विरोध किया, संस्कृति का विरोध किया, विरोध किसका-किसका नहीं किया, पर हिंदी तो संपूर्ण भारत की है।

**उपसंहार**

हिंदी में वह सामर्थ्य है कि पूरे देश को जोड़ दे। जो देश के शत्रु हैं उन्हें तोड़ दे। कूड़े-कचड़े को छोड़ दें। हमारे सारे प्रयास उदारता से अपनी बात कहने की है। परंतु हिंदी के लोगों से हमारी पुनः एक प्रार्थना है कि उनका प्रयास आँकड़ाबाजी नहीं, ईमानदार प्रयास होना चाहिए। हिंदी, हिंदुस्तान और देश के जन-जन के विकास के लिए हम सन्नद्ध हों। v

सहा. मंडल यांत्रिक इंजीनियर (पावर)
डीजल लॉबी
छपरा जं.
छपरा (बिहार)-841301
**संपर्क: 09771443276**

**खेलन हरि निकसे ब्रजखोरी**
**गए श्याम रवितनया के तट,**
**अंग लसति चंदन की खोरी।**
**औचक ही देखी तहँ राधा,**
**नैन बिसाल, भाल दिये रोरी**
**सूर श्याम देखत ही रीझे,**
**नैन नैन मिली पड़ी ठगोरी**

**-सूरदास**

◆ लेख ◆

# राष्ट्रभाषा हिंदी का सम्मान जरूरी

चंद्रभूषण ओझा

**हिंदी** हमारी राष्ट्रभाषा है। इसके प्रति सम्मान होना और संवेदनशील होना हर भारतीय का कर्तव्य है। प्राय: कुछ विभागों के सूचनापटों पर लिखी हुई हिंदी में वर्तनी की त्रुटियाँ देखने को मिलती हैं। आखिर राष्ट्रीय महत्व के स्थलों पर भी इसतरह की भूल कैसे हो जाती है। इसके लिए जो भी दोषी हो उन्हें चिह्नित कर उसे दंडित किया जाना चाहिए। जब तक किसी अधिकारी की जिम्मेदारी तय नहीं की जाती और सजा नहीं मिलती तब तक राष्ट्रभाषा हिंदी का यों ही अपमान होता रहेगा।

हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में भारतीय जनता ने कई शताब्दी पहले ही स्वीकार कर लिया था। यहाँ चाहे विदेशी मुसलमानों का शासन रहा, चाहे अंग्रेजों का, यहाँ जनता ने अपने प्रयोग और व्यवहार की भाषा हिंदी को ही बनाया। असम, आंध्र, उड़ीसा, कर्नाटक, केरल, गुजरात, पंजाब, बंगाल, महाराष्ट्र आदि में अपनी-अपनी प्रादेशिक भाषाओं का प्रचलन होते हुए भी एक राष्ट्रीय परिवेश में जनसंपर्क के माध्यम के रूप में हिंदी को ही मान्यता प्राप्त रही। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में सुधार आंदोलन चले, उन्हें भी हिंदी से प्रचार मिला। 20वीं शताब्दी के नेता महात्मा गाँधी, सुभाषचंद्र बोस, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय सभी ने एक मत से हिंदी को राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक जागरण और स्वराज्य की भावना का संबल बनाया। इसीलिए सन 1930 ई. में ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का संकल्प ले लिया था। 1947 में भारत के स्वतंत्र होने पर नये संविधान के अनुसार हिंदी को राष्ट्रभाषा और देवनागरी को राष्ट्रलिपि घोषित किया गया। हिंदी भी संस्कृत की पुत्री है। तथापि कुछ राजनैतिक नेता और सरकारी नौकरीपेशा लोग अंग्रेजी के प्रयोग में सुविधा समझते हैं। इसलिए आमलोगों को यह कहकर हिंदी के विरूद्ध भड़काते हैं कि उन पर जबर्दस्ती हिंदी लादी जा रही है। सरकार ने सभी की सुविधा को ध्यान में रखकर हिंदी को राष्ट्रभाषा मानते हुए भी राजकाज की संपर्क भाषा के रूप में अंग्रेजी के प्रयोग की छूट दे रखी है। जिसप्रकार सभी देश का एक संविधान, एक ध्वज और एक राजनैतिक शासन स्वीकार करते हैं वैसे ही उन्हें राष्ट्र की एकता के लिए एक राष्ट्रभाषा को स्वीकार करना चाहिए। हाँ उसके साथ-साथ अपनी प्रादेशिक भाषा को भी शिक्षा, व्यवसाय तथा व्यवहार के क्षेत्र में पूरा सम्मान मिलना चाहिए। अंग्रेजी का व्यवहार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उन्हीं देशों के साथ किया जाए जो अंग्रेजी माध्यम से ही कामकाज करते हैं।

भारत में हर वर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' मनाया जाता है। इस दिन का एक ऐतिहासिक महत्व है। 14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया था। उसी दिन से हिंदी भाषा का भविष्य उज्ज्वल हो गया। जो हिंदी अब तक अघोषित रूप से भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत थी, अब घोषित रूप से भारत की राज-काज की भाषा बन गई। आज भी उस ऐतिहासिक फैसले को याद कराने के लिए इस दिन को सरकारी कार्यालयों में 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। स्वतंत्रता से पूर्व हिंदी भाषा का ही बोलबाला था। महात्मा गाँधी, सरदार पटेल आदि क्रांतिकारियों ने हिंदी के माध्यम से ही स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी। यहाँ तक कि गाँधी, पटेल, सुभाष आदि नेता हिंदी-भाषी नहीं थे फिर भी उन्होंने हिंदी को संपर्क-भाषा, माध्यम-भाषा और राष्ट्र-भाषा के रूप में विकसित करने का प्रयास किया। इतना ही नहीं, भारत में व्यापार करने वाले विदेशी संस्थान हों या स्वयं अंग्रेज शासक सभी ने हिंदी भाषा के महत्व को समझा। आजादी से पूर्व इंग्लैंड से आने वाले शासक हिंदी भाषा सीख कर पूरे देश पर शासन किया करते थे। आज समाचार-पत्र, दूरदर्शन के चैनल, लोकप्रिय धारावाहिक, फिल्में, विज्ञापन आदि सभी में हिंदी का ही बोलाबाला है।

हिंदी भाषा न केवल देश की बड़ी भाषा है बल्कि यह दिल से भी बहुत उदार है। इसमें पंजाबी, मराठी, गुजराती, बंगला आदि भारतीय भाषाओं के साथ चलने की अद्‌भुत क्षमता है। आज हिंदी भाषा में अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के हजारों शब्द इसतरह समा गए हैं कि वे हिंदी के ही प्रतीत होते हैं। अपनी इसी लोचदार प्रवृत्ति के कारण इसका विकास अनवरत होता जा रहा है।

पत्रकार, दैनिक जागरण
गोरखपुर
**संपर्क: 9452454037**

◆ लेख ◆

# हिंदी की विकास यात्रा में बाधक तत्व

डा. राजेश हजेला

हिंदू सम्राट पृथ्वीराज चौहान के शासनकाल में हिंदी खड़ी बोली के तत्व पनपने लगे थे। उस समय की प्रसिद्ध साहित्यिक रचना कवि जागनिक कृत 'आल्ह खंड' में हिंदी खड़ी बोली के पर्याप्त तत्व विद्यमान हैं। इसका अर्थ यह है कि उस समय शौरसेनी प्राकृत से हिंदी खड़ी बोली का जन्म हो चुका था। भविष्य पुराण के अनुसार शौरसेनी प्राकृत से जन्मी हिंदी खड़ी बोली पर पूर्व में अवध और पश्चिम में ब्रज क्षेत्र का विशेष प्रभाव पड़ा। कालांतर में ब्रज और अवधी भाषा के रूप में हिंदी का विकास होने लगा और देश के बीच के भाग में अभिजात्य वर्ग के संभ्रांत भाषा के रूप में हिंदी खड़ी बोली का विकास प्रारंभ हुआ।

जब मुगलों के पैर भारत में जम गए, उस समय तक उत्तर भारतीय अभिजात्य वर्ग में संस्कृत-निष्ठ हिंदी खड़ी बोली का पर्याप्त विकास हो चुका था, जिसके प्रमाण के रूप में तात्कालिक आध्यात्मिक रचना 'योग वशिष्ठ निरंजनी' को लिया जा सकता है जिसके लेखक रामप्रसाद निरंजनी थे। इसके बहुत बाद में जब ईसाई मिशनरियों का प्रवेश भारत में हुआ तब उन्हें एक ऐसी भाषा की आवश्यकता अनुभव हुई जो संपूर्ण देश की जनता को अपने विचारों को समझाने में सार्थक और सफल सिद्ध हो सके। इसी दौरान इन लोगों ने मुंशी सदासुख लाल से संपर्क करके उत्तर भारतीय जनभाषा को एक नये रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। फिर भी कालांतर में इसके कई भेद दृष्टिगोचर होने लगे। उदाहरणार्थ लल्लू लाल का 'सुख सागर', मुंशी सदासुख लाल की 'रानी केतकी की कहानी', राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद रचित कहानियाँ तथा लगभग इन्हीं ग्रंथों के समकालीन देवकीनंदन खत्री कृत 'चंद्रकांता' और 'चंद्रकांता संतति' में हिंदी खड़ी बोली का यह विकसित और विघटित स्वरूप प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। इसप्रकार भव्य भागीरथी के रूप में प्रवहमान खड़ी बोली हिंदी का विकसित स्वरूप कई भाषाओं और उपभाषाओं के रूप में परस्पर विभक्त हो गया। यह अवरोध ही आगे चलकर खड़ी बोली हिंदी को हिंदी और हिंदुस्तानी के रूप में विभक्त करने के महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुए। खड़ी बोली हिंदी की इस विभाजनात्मक संघर्ष गाथा को भारतेंदु काल में एक विशिष्ट आश्रय प्राप्त हुआ। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने खड़ी बोली हिंदी का जो स्वरूप निर्धारित किया वह हिंदुस्तानी हिंदी के निकटतम है। उसी समय के लेखक राजा लक्ष्मण प्रसाद ने हिंदी की संस्कृत-निष्ठ खड़ी बोली में महाकवि कालिदास प्रणीत 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' नाटक का 'शकुंतला' के रूप में सुंदर भावानुवाद प्रस्तुत किया। यही नहीं सुमित्रानंदन पंत, महीयसी महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' एवं जयशंकर प्रसाद ने भी संस्कृत-निष्ठ खड़ी बोली को ही अपनी साहित्यिक कृतियों का माध्यम बनाया। आज जो हिंदी का गद्य-प्रधान साहित्य है उसमें भी संस्कृत-निष्ठ खड़ी बोली को ही प्रधानता दी गई है। वर्तमान में जो समाचार-पत्र एवं पत्रिकाओं में हिंदी भाषा का विकसित एवं प्रवहमान रूप दिग्दर्शित होता है उस पर भी संस्कृत-निष्ठ खड़ी बोली हिंदी की भी स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

वास्तविकता तो यह है कि खड़ी बोली हिंदी का यह स्वरूप अपने शैशवकाल से ही राजनैतिक षड्यंत्रों के कारण संघर्ष का शिकार रहा है। अपने क्षुद्र स्वार्थों के कारण इस महत्वपूर्ण वैज्ञानिक भाषा का स्वरूप आज भी स्थिर नहीं है। क्षेत्रीय संकीर्ण राजनैतिक स्वार्थों के कारण तथा हिंदी-भाषी जनमानस की दुर्बल मनोवृत्ति के फलस्वरूप आज भी हिंदी को उसका स्थान प्राप्त नहीं हुआ है।

हमें उन तत्वों पर विहंगम दृष्टिपात करना होगा क्योंकि आज भी हम अपनी मातृभाषा को पूर्ण सम्मान नहीं दिला सके हैं। इसके प्रमुख बाधक तत्वों को हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं। प्रथम राजनैतिक उथल-पुथल, द्वितीय क्षेत्रीय संकीर्णता और अंतिम है सामाजिक प्रवृत्ति। यह तीन ऐसे प्रमुख बाधक अवरोध हैं जो हिंदी की प्रवहमान विकास यात्रा के लिए घातक हैं। जब तक हम इनसे बचते रहेंगे हिंदी की स्थिति बद से बदतर होती जाएगी। अत: हमें प्रबल जनशक्ति से इन अवरोधों को मिटाने के लिए अनिवार्य रूप से सक्रिय प्रयास करने होंगे। कहने की आवश्यकता नहीं जब हमारे यहाँ आया हुआ कोई विदेशी अतिथि अपनी मातृभाषा में

अपने उद्‌गार व्यक्त करता है तब हमारे राजनेता श्वेतांग महाप्रभु की परतंत्रता भरी मनोवृत्ति से प्रेरित होकर आंग्ल भाषा से उस अतिथि को धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

हिंदी की प्रवहमान विकासधारा अपने उद्‌भवकाल से ही राजनैतिक उथल-पुथल का शिकार हुई। यहाँ पर विभिन्न आक्रामक जातियों के आवागमन के कारण हिंदी के विकास को तगड़ा झटका लगा। कालांतर में जब मुगलों के पैर भारत में जम गए तब हिंदी की विकास यात्रा में थोड़ा ठहराव आया क्योंकि उस समय मुगलों ने भाषा में परिवर्तन किया। आक्रामक होने के कारण प्रारंभ में इन लोगों ने अपनी एक सांकेतिक भाषा निर्धारित की जिसमें अरबी-फारसी के अलावा उस समय प्रचलित प्राय: सभी भाषाओं के कुछ प्रमुख-प्रमुख शब्द चुनकर एक नयी भाषा को जन्म दिया गया। कालांतर में इसे उर्दू नाम देकर तथा इस भाषा की अवैज्ञानिक लिपि बनाकर राजभाषा का दर्जा दिया गया जिससे हिंदी को बड़ी ठेस लगी। मुगलों के बाद अंग्रेजों ने भी खड़ी बोली हिंदी के साथ विश्वासघात करके उसके मूल स्वरूप को बिगाड़कर उसके तीन भाग कर दिए। इसीकारण आज हिंदी राजभाषा के सम्मान से उपेक्षित है।

इसके साथ ही सरकार की ओर से भी हिंदी के लिए कोई ठोस प्रयास नहीं किए गए। तुष्टिकरण की नीति के कारण हिंदी की यह घोर उपेक्षा हिंदीभाषा-भाषियों के लिए खेदपूर्ण और चिंतनीय है।

क्षेत्रीय भाषावाद भी हिंदी के विकास के लिए बहुत बड़ी बाधा है। कई क्षेत्रीय भाषाएँ हिंदी के पर्याप्त सन्निकट हैं। क्या उन भाषाओं का लेखन देवनागरी लिपि में नहीं किया जा सकता? विद्वानों को अपनी क्षुद्र मानसिकता छोड़कर इस दिशा में आगे आने की पहल करनी चाहिए ताकि हिंदी की ये सभी बहनें हिंदी के साथ ही विकसित, पल्लवित-पुष्पित और फलीभूत हो सकें।

हिंदी की विकास यात्रा कुछ ऐसे कारणों से भी रुकी हुई-सी लगती है जिसका सीधा संबंध हिंदी भाषियों से है। हिंदी-भाषी लोग थोड़ा आगे बढ़कर अपनी क्षेत्रीय भाषाओं को आदर और सम्मान दें तथा इन भाषाओं के शिक्षण का परस्पर आदान-प्रदान करें। यदि हम ऐसा करते हैं तो वह दिन दूर नहीं जब हिंदी समस्त विश्व की संपर्क-भाषा का रूप ग्रहण करेगी।

हिंदी विद्वानों की मत-भिन्नता तथा स्वार्थों की होड़ के कारण हिंदी की विकास-यात्रा अवरूद्ध है। हम अपनी भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर का सम्मान पाने की कामना तो करते हैं परंतु उतनी प्रमुखता से कुछ ऐसा प्रयास नहीं करते जो इस यात्रा को सतत गतिशील बनाये रखने के लिए करने चाहिए। यदि हम अपनी कर्तव्य-निष्ठा पर शुद्ध अंत:करण और मन से चिंतन करें तो हम स्वयं को दोषी पाते हैं।

यद्यपि वर्तमान में इस दिशा में पर्याप्त महत्वपूर्ण कार्य तो हुए हैं, परंतु अभी वे आम हिंदीभाषा-भाषी से दूर हैं, हाँ इतना अवश्य है कि कालांतर में यह प्रयास अपना शुभफल प्रदान करेंगे। फिर भी अभी बहुत कुछ ऐसा है जिसकी ओर किसी की भी दृष्टि नहीं पहुँची। जैसे प्रतिदिन के कार्य-व्यवहार में प्रचलित बहुत से शब्द अन्य भाषाओं के हैं जिनके लिए किसी विद्वान ने अभी तक कोई ऐसे हिंदी भाषा के शब्द प्रदान नहीं किए जिनका प्रयोग सामान्य जनमानस कर सके। जो शब्द गढ़े भी गए वे इतने कठिन हैं कि सामान्य लोग उनका प्रयोग नहीं कर पाते। यहाँ हमें हिंदी वैयाकरण कामतानाथ का स्मरण अवश्य करना चाहिए, जिन्होंने हिंदी को सुगठित करने के लिए उसको नवीन व्याकरण प्रदान किया। यदि कामतानाथ को अवसर मिला होता तो संभवत: वे हिंदी भाषा के लिंग विधान में दो की जगह तीन भेद कर देते अर्थात पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के साथ नपुंसक लिंग भी जोड़ देते और यह हिंदी के विकास के लिए एक औषधि सिद्ध होता।

आज हमें अपनी संकीर्ण मनोवृत्तियों को तिलांजलि देकर नि:स्वार्थ प्रवृत्ति को ध्यान रखते हुए हिंदी को देश के कोने-कोने में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में प्रतिष्ठित करने वाला कुछ ऐसा ज्ञान-यज्ञ आयोजित करना चाहिए जिसमें अपने सद्‌प्रयासों की आहुति देकर हिंदी के सर्वप्रतिष्ठित बहुमुखी स्वरूप की स्थापना हो सके।

वास्तविकता तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के बाद से हिंदी भाषा के साहित्य में पर्याप्तरुपेण श्रीवृद्धि हुई है परंतु वह सब अभी सामान्य जनमानस की पहुँच से पर्याप्त दूर है तभी तो आज मध्यम-वर्गीय सामान्य जनमानस अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम वाले मान्टेसरी स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रवेश के लिए प्रेरित करता है। क्या इससे हिंदी का पर्याप्त विकास हो सकता

है? क्या हिंदी इतनी भी समर्थ नहीं कि हिंदीभाषा-भाषी बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा देने में असफल हो? फिर यह अंग्रेजी मोह आखिर किस बात का संकेत है?

हमें इन सब तथ्यों को भलीभाँति हृदयंगम करके ही हिंदी की विकास यात्रा के लिए ठोस एवं सक्रिय प्रयास करने होंगे। जब उत्तर और दक्षिण का व्यक्ति हिंदी के माध्यम से एक-दूसरे की मनोभावनाएँ जान लेगा तब उसे अंग्रेजी जानने की क्या आवश्यकता है? अपने देश में तो काम चल ही जाएगा। यद्यपि सरकार की ओर से अभी हाल में कुछ ऐसे प्रयास किए गए हैं जिनसे उत्तर भारतीय दक्षिण भारत की कुछ प्रमुख भाषाओं को समझ सके, परंतु अभी ऐसा कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं हुआ है। हिंदी वस्तुतः संपूर्ण देश की भाषा है। हिंदी के माध्यम से ही हम हर जगह पहचाने जाते हैं तो भी न जाने क्यों अपने सामने ही अपनी भाषा की दुर्दशा होते देखकर मौन बने रहना उचित नहीं कहा जा सकता। हिंदी में प्रायः सभी विषयों की वैज्ञानिक शब्दावली उपलब्ध है लेकिन तब भी अंग्रेजी में ही व्यावहारिक लेख किया जाना उचित एवं तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता।

प्रारंभिक शिक्षा में हिंदी को कोई प्रोत्साहन प्रदान नहीं किया जाता क्योंकि हिंदी तो छात्र को पढ़नी ही होगी। इन्हीं कारणों से नेताओं के अनुकरण के फलस्वरूप मध्यम-वर्गीय छात्रों को शिक्षा प्रदान करने वाले प्रमुख केंद्रों के रूप में अंग्रेजी माध्यम के मान्टेसरी और कान्वेंट स्कूल उभर कर सामने आए जो आगे चलकर हिंदी की विकास यात्रा के महत्वपूर्ण अवरोध सिद्ध हुए।

इसप्रकार हम कह सकते हैं कि हिंदी की सतत गतिशील विकास यात्रा अपने शैशवकाल से ही अपने ही घर में घास पर सोयी है और न जाने कितने ज्ञात-अज्ञात तूफानों को झेलते हुए आज विभिन्न उप-धाराओं में विभाजित होकर हम सबके समक्ष उपस्थित है। जब तक हम सब मिलकर उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक हिंदी की विकास ध्वनि गुंजायमान नहीं करते, तब तक भाषा के प्रति अर्थात अपनी माता के प्रति किए गए सभी प्रयास अधूरे और निरर्थक समझे जाएँगे। अतः कुछ ऐसा वातावरण बनाया जाए जिसमें हिंदी ही नहीं अपितु समस्त भारतीय भाषाओं के विकास की कुछ ऐसी गति निस्सृत हो जिससे सभी भाषाओं की संरक्षक के रूप में हिंदी के उद्भव और विकास का पुनरावलोकन संभव हो सके। v

सदस्य
जेड.आर.यू.सी.सी.
पूर्वोत्तर रेलवे
4/105, नवाब नियामत खान पश्चिम
फर्रुखाबाद-209625(उ.प्र.)
**संपर्कः 09450205346**

**वंशी के बहते स्वरों का प्राण वंदे मातरम्**
**झल्लरी झनकार झनके नाद वंदे मातरम्**
**शंख का संघोष चहुँदिश व्याप्त वंदे मातरम्।।**
**सृष्टि के बीजमंत्र का है मर्म वंदे मातरम्**
**राम के वनवास का है काव्य वंदे मातरम्**
**दिव्य गीता ज्ञान का आधार वंदे मातरम्।।**
**हल्दीघाटी के कणों में व्याप्त वंदे मातरम्**
**दिव्य जौहर ज्वाल का है तेज वंदे मातरम्**
**वीरों के बलिदान का आधार वंदे मातरम्।।**
**कर दे पादाक्रांत धरती गर्जन वंदे मातरम्**
**अरिदल थरथर काँपे सुनकर नाद वंदे मातरम्**
**वीर पुत्रों की अमर ललकार वंदे मातरम्।।**

**-कविवर्य बेनी माधव**

◆ लेख ◆

# भारतीय परंपरा में लोक-कथाएँ

सुनील कुमार

**लोक-कथाओं** की भारतीय परंपरा अत्यंत प्राचीन है। वैदिक संहिताओं में हमें सर्वप्रथम कथाओं का उद्‌गम दिखाई पड़ता है। ऋग्वेद में अनेक ऐसे सूक्त उपलब्ध होते हैं जिन्हें 'संवाद सूक्त' कहा गया है। इन सूक्तों में दो या तीन पात्रों के बीच परस्पर कथनोपकथन है। भारतीय साहित्य के कथाओं, नाटकों आदि का उद्‌गम इन्हीं संवाद सूक्तों से होता है। 'यम-यमी' और 'विश्वामित्र एवं नदियाँ' संवाद सूक्त के महज उदाहरण भर हैं। इसके अतिरिक्त स्तुतिपरक सूक्तों के माध्यम से देवताओं के विषय में अनेक मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद आख्यान मिलते हैं। ऋग्वेद में जहाँ ऋषि शुन:शेप का प्रसिद्ध आख्यान उपलब्ध होता है वहीं सोभरी काव्य की कहानी भी मिलती है। अपाला, आत्रेयी के आदर्श नारी-चरित्र का चित्रण हमें सर्वप्रथम इसी ऋग्वेद में देखने को मिलता है। अपाला बड़ी विदुषी थी और ऋग्वेद के एक सूक्त की ऋषि-द्रष्टा थी। च्यवन भार्गव और सुकन्या मानवी की कथा हमें ऋग्वेद से ही प्राप्त होती है। ये कथाएँ भारतीय नारी-चरित्र का एक उज्ज्वल आदर्श प्रस्तुत करती हैं। ब्राह्मण ग्रंथों में भी हमें अनेक कथाएँ मिलती हैं। शतपथ ब्राह्मण में पुरुरवा और उर्वशी की कथा अत्यंत प्रसिद्ध है। इसी को आधार मानकर महाकवि कालिदास ने 'विक्रमोर्वशी' नामक नाटक की रचना की थी। इसीप्रकार शतपथ ब्राह्मण में ऋषि दधीच की कथा मिलती है जिनकी हड्डी से वज्र बना था और उस वज्र से इंद्र ने वृत्र को मारा था।

ब्राह्मण ग्रंथों के पश्चात उपनिषदों में भी अनेक कथाओं की भरमार है। नचिकेता ने अपनी विलक्षण प्रतिभा के बल पर यम से अमर बनने का साधन पूछा था। उपनिषद की कहानियों का प्रधान लक्ष्य था- 'ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति'। ब्रह्मज्ञान अर्थात ब्रह्मविद्या जो स्वयं का बोध कराती है। जीवन का बोध कराती है। जिसे जाने बिना सब जानना बेकार है और जिसे जान लेने पर सब जान लिया जाता है। तभी तो श्वेतकेतु के पिता ने उस विद्या की शिक्षा लेने के लिए उसे पुन: गुरु के पास वापस लौटा देता है। केनोपनिषद में 'अग्नि और यज्ञ' की कथा का उल्लेख मिलता है। ब्रह्म समीप में भी है और दूर भी है। जो अहंकारी प्रवृत्ति के लोग हैं उनसे ब्रह्म दूर है और जो विनयी स्वभाव वाले हैं ब्रह्म उनके पास है। जनश्रुति के पुत्र राजा जानश्रुति की कथा का चित्रण छांदोग्य उपनिषद में मिलता है। वैदिक संहिता और उपनिषदों में जिन कथाओं की सूचना मात्र मिलती है उनका विस्तृत वर्णन 'बृहद्देवता' और षड्गुरु शिष्य रचित 'कात्यायन सर्वानुक्रमणी' की 'वेदार्थ दीपिका' टीका में किया गया है। यास्क ने 'निरुक्त' तथा सायणाचार्य ने अपने 'भाष्य' में इन कथाओं के रूप तथा प्राचीन आधार को प्रदर्शित करने की कोशिश की है।

विष्णु शर्मा रचित 'पंचतंत्र' को भारतीय साहित्य का 'सागर' कहा जाता है। यह विश्व-साहित्य को भारतीय साहित्य की महती देन है। पंचतंत्र की कहानियों में भ्रमण की कथा अत्यंत रोचक और उपदेशात्मक हैं। राजकुमारों को नीतिशास्त्र की शिक्षा देने के लिए इस ग्रंथ का निर्माण किया गया था। प्रत्येक तंत्र में मुख्य कथा एक ही है जिन्हें पुष्ट करने के लिए अनेक गौण कथाएँ कही गई हैं। ईसा की छठी शताब्दी में पंचतंत्र की कहानियों का अनुवाद पहलवी भाषा प्राचीन फारसी में हुआ। इसके पचास वर्ष के बाद इसका अनुवाद सीरियन भाषा में प्रस्तुत हुआ। इसके बाद इसका अनुवाद अरबी भाषा में हुआ। पंचतंत्र का अरबी भाषा में अनुवाद होते देर नहीं हुई कि ये कहानियाँ पश्चिमी-जगत के साहित्य में प्रवेश कर गई और अनेक भाषाओं में इसके अनुवाद प्रकट होने लगे। लैटिन, ग्रीक, जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश तथा अंग्रेजी भाषाओं में इसके अनुवाद प्रस्तुत होने लगे। पंचतंत्र की इन्हीं कहानियों के आधार पर ग्रीस के सुप्रसिद्ध कथा संग्रह 'ईसप की कहानियाँ' और अरब देश की मनोरंजक कहानियाँ 'अरेबियन नाइट्स' की रचना हुई।

नीति कथाओं में 'पंचतंत्र' के उपरांत 'हितोपदेश' का नाम आता है। इसके रचयिता नारायण पंडित थे जो बंगाल के राजा धवलचंद्र के आश्रय में रहते थे। इस ग्रंथ का मूल आधार भी पंचतंत्र ही है। हालाँकि यह पंचतंत्र की अपेक्षा अधिक लोकप्रियता हासिल किया। संस्कृत के छात्रों के लिए यह ग्रंथ अत्यंत उपयोगी है।

पंचतंत्र के मनोरंजक कथाओं का प्राचीन संग्रह 'बृहत्कथा' में निबद्ध है। इसके रचयिता गुणाढ्य थे जो महाराजा हाल के सभाकवि थे। मूल बृहत्कथा पैशाची भाषा में लिखी गई थी जो उपलब्ध नहीं है। बृहत्कथा के तीन संस्कृत अनुवाद उपलब्ध हैं। 'बृहत्कथा श्लोक-संग्रह' के रचयिता हैं बुधस्वामी। ये नेपाल के रहनेवाले थे।

इनका समय आठवीं या नवीं शताब्दी माना जाता है। यह ग्रंथ संपूर्ण रूप में उपलब्ध नहीं है। उपलब्ध ग्रंथ में 28 सर्ग और 4539 श्लोक हैं।

संस्कृत साहित्य में अपनी प्रभूत रचनाओं के लिए प्रसिद्धि रखनेवाली 11वीं शताब्दी की रचना 'बृहत्कथा मंजरी' है जिसके रचयिता क्षेमेंद्र हैं। कविता उच्च कोटि की है। इन्हीं के समकालीन सोमदेव ने 'कथासरित्सागर' की रचना की जिसमें 24,000 श्लोक हैं। इस ग्रंथ की रचना 1063 ई. से 1081 ई. के मध्य हुई थी। जैसाकि यह अपने नाम से ही प्रसिद्ध है, यह भारतीय कथारूपी नदियों के लिए वास्तव में समुद्र है।

संस्कृत में रहस्य और रोमांच से भरपूर 'वेताल पंचविंशतिका' की रचना का श्रेय शिवदास को जाता है। इस गद्य ग्रंथ में राजा विक्रम से संबद्ध पच्चीस रोचक कहानियाँ सरल संस्कृत में कही गई है। प्रत्येक कथा में राजा की व्यावहारिक बुद्धि का पर्याप्त परिचय मिलता है। ये कहानियाँ अत्यंत प्राचीन हैं। 'वेताल पचीसी' के नाम से इसका हिंदी अनुवाद उपलब्ध है। 'सिंहासन बतीसी' की कहानियाँ भी मनोरंजन की दृष्टि से नितांत उपादेय हैं। शिवदास का 'कथार्णव' ग्रंथ पैंतीस कहानियों का संग्रह है जिसमें मूर्खों और चोरों की कहानी कही गई है। प्रसिद्ध मैथिली कवि विद्यापति ने 'पुरुष परीक्षा' नामक ग्रंथ की रचना की है जिसमें 44 कहानियों का संग्रह है। इसप्रकार हम देखते हैं कि संस्कृत साहित्य में कथाओं-कहानियों का अक्षय भंडार भरा पड़ा है।

बौद्ध साहित्य में भी कथा-साहित्य की प्रचुरता मिलती है। बौद्ध कहानियों का संग्रह 'जातकों' में पाया जाता है। ये जातक भगवान बुद्ध के पूर्वजन्मों की मनोरंजक कहानियाँ हैं। इन कहानियों का उद्देश्य अभ्यास द्वारा बुद्धत्व की प्राप्ति कराना है। ये जातक कथाएँ संभवत: संसार की सर्वप्राचीन कहानियाँ हैं। इनकी संख्या 550 है। इन कथाओं में ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक एवं धार्मिक सामग्रियों का विपुल भंडार मिलता है जिससे बुद्धकालीन और उससे प्राचीन काल के भारतीय इतिहास का रमणीय चित्र उपलब्ध होता है। अत्यंत अप्राचीन काल से दंतकथा या लोक कथा के रूप में जो कहानियाँ चली आ रही हैं उनका इन जातकों में विशाल संग्रह है। अनेक बौद्ध पंडितों ने जातक की कहानियों को संस्कृत भाषा में भी लिखा है।

प्राकृत भाषा में भी मनोरंजक और उपदेशात्मक कहानियों से भरपूर अनेक कथाग्रंथ उपलब्ध होते हैं। अपभ्रंश भाषा के 'पउमचरिय' एवं 'भविस्सत्थ कहा' नामक दो ग्रंथ प्रसिद्ध हैं जिनमें अनेक उपदेशात्मक कहानियाँ मिलती हैं।

लोक कथाओं का जितना संग्रह बंगला साहित्य में हुआ है उतना अन्य भारतीय भाषाओं में नहीं हुआ। बंगला लोक साहित्य के उद्धारकर्ता डा. दिनेशचंद्र सेन ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'फोक लिटरेचर ऑफ बंगाल' में बंगला भाषा में संग्रहीत लोक-कथा संबंधी पुस्तकों का बड़ा ही सुंदर एवं प्रामाणिक वर्णन किया है। इन पुस्तकों में 'ठाकुर दादार झुली' अपना विशेष महत्व रखती है। इस पुस्तक में प्रचलित लोक-कथाओं का संग्रह किया गया है। राजस्थानी विद्वानों ने भी अपनी भाषा के कहानियों के संग्रह प्रकाशित किए। पं. सूर्यकरण पारीक ने 'राजस्थानी बाताँ' नाम से राजस्थानी लोक कहानियों का संग्रह प्रकाशित किया। इसमें राजस्थानी जीवन की झलक हमें देखने को मिलती है। इसमें व्रत, मनोरंजन, शिक्षाप्रद एवं रहस्य-रोमांच से संबंध रखने वाली अनेक प्रकार की कहानियाँ संग्रहीत हैं जो अत्यंत सुंदर एवं पठनीय हैं।

गुजराती लोक साहित्य के विद्वान श्री झबेरचंद्र मेघाणी ने लोक कथाओं का संग्रह कर उन्हें अनेक नामों से प्रकाशित किया है। 'सौराष्ट्रनी रसधार' और 'सोरठी बहार बटिया' प्रसिद्ध हैं। ब्रजभाषा-प्रेमियों ने ब्रज साहित्य मंडल की स्थापना कर ब्रज-साहित्य की उन्नति के साथ ही साथ ब्रज के लोक-साहित्य के संरक्षण का भी बीड़ा उठाया। डा. सत्येंद्र, एम.ए.,पी.एचडी. ने ब्रज की लोक-कथाओं का संग्रह कर 'ब्रज की लोक-कहानियाँ' नामक पुस्तक लिखी जिसमें ब्रज के वास्तविक जीवन की झाँकी हमें देखने को मिलती है।

भोजपुरी में भी लोक-कथाओं का अक्षय भंडार भरा पड़ा है। बहुरा पिड़िया, भाईदूज और जीउतिया (जीवत्पुत्रिका) आदि व्रत की कहानियों में अनेक उपदेशात्मक बातें मिलती हैं जो जीवन दर्शन का काम करती हैं। बूढ़ी दादियों और गाँव के बूढ़े लोग तो इन कथाओं के अनंत कोष हैं। भोजपुरी लोक-कथाओं का संग्रह तो अनेक विद्वानों ने किया है जिन्हें प्रकाशित होना है। युगों से आनंद प्रदान करने वाली इन लोक कथाओं-कहानियों का धीरे-धीरे नाश हो रहा है। यदि इनका शीघ्र संग्रहण नहीं किया गया तो भारतीय संस्कृति को जीवित रखने वाली ये कथाएँ-कहानियाँ सदा के लिए विस्मृति के गर्भ में विलीन हो जाएँगी। ❖

वरिष्ठ अनुवादक/प्रभारी
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुख्य कार्मिक अधिकारी कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
**संपर्क: 09794840672**

◆ लेख ◆

# हिंदी: सबका साथ-सबका विकास

श्याम बाबू शर्मा

**अभी** कुछ घटनाक्रमों ने हमें यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या बाकई हिंदी से भारत की किसी अन्य भाषा का अहित हो सकता है? क्या हिंदी किसी भारतीय भाषा की विरोधी है? क्या हम हिंदी का विरोध करके अंग्रेजी की सत्ता के आगे नतमस्तक तो नहीं हो रहे हैं? गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के 27 मई 2014 के एक आदेश के बाद हिंदी को लेकर कुछ गैर-हिंदीभाषी राज्यों के नेताओं ने खासा हंगामा मचाया। राजभाषा विभाग ने अपने सर्कुलर में कहा था कि सरकारी विभागों के आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट में सामग्री हिंदी अथवा अंग्रेजी और हिंदी में लिखा जाना चाहिए। अगर अंग्रेजी और हिंदी में लिखा जा रहा है तो हिंदी को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। इस सर्कुलर में साफ तौर पर कहा गया है कि अंग्रेजी पर हिंदी को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। यह कहीं नहीं कहा गया कि हिंदी का ही प्रयोग होना चाहिए। आखिर इससे हिंदी थोपने जैसी बात कैसे सामने आ गई? परंतु कुछ गैर-हिंदीभाषी राजनेताओं ने इस मुद्दे को लेकर हंगामा बरपा दिया। यह कहा जाने लगा कि यह गैर-हिंदी भाषी लोगों को दूसरे दर्जे के नागरिक मानने की कोशिश नजर आ रही है। कुछ गैर-हिंदीभाषी राजनेताओं का तो यह भी कहना था कि 'भाषा की लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। हिंदी विरोधी आंदोलन इतिहास के पन्नों में दर्ज है। क्या हम नेहरूजी के उस आश्वासन को भूल सकते हैं कि जब तक गैर-हिंदीभाषी लोग चाहेंगे, अंग्रेजी ही देश की आधिकारिक भाषा होगी।' नई सरकार गैर-हिंदीभाषी लोगों पर हिंदी थोपने का कार्य कर रही है। गौर करने वाली बात है इसको राजनेताओं ने ही ज्यादा तूल दिया, आम गैर-हिंदीभाषी लोगों की इसमें ज्यादा भागीदारी नहीं रही। उल्लेखनीय है कि संविधान की मंशा के अनुरूप ही हिंदी सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर आगे बढ़ने में विश्वास रखती है। परंतु भारतीय भाषाओं से ज्यादा तरज़ीह किसी अन्य गैर-भारतीय भाषा (अंग्रेजी) को दी जाए, तो यह हम भारतीयों के लिए शर्म की बात है।

महात्मा गाँधी हिंदी के प्रबल समर्थक थे और वे इसको राष्ट्रभाषा के तौर पर देखना भी चाहते थे, लेकिन उन्होंने भी कहा था कि हिंदी का उद्देश्य यह नहीं है कि वह प्रांतीय भाषाओं की जगह ले ले। वे भी सभी भारतीय भाषाओं के विकास के साथ ही हिंदी के विकास की बात के समर्थक थे। वैसे भी हमारा देश विविधताओं से भरा देश है, यहाँ दर्जनों भाषाएँ और सैकड़ों बोलियाँ हैं। हमारे देश में यह सिद्धांत ही प्रचलित है कि कोस-कोस पर बदले पानी और चार कोस पर बानी। हमारा देश फ्रांस या इंग्लैंड की तरह तो है नहीं, जहाँ एक भाषा है। भारत विविधताओं से भरा होने के कारण यहाँ एक भाषा का सिद्धांत लागू हो ही नहीं सकता। भारतीय संविधान में यह स्पष्ट दिया हुआ है कि हिंदी का विकास एवं उसकी समृद्धि सभी भारतीय भाषाओं से ही की जाएगी। तो यह स्पष्ट हो गया कि हिंदी का विकास सभी भारतीय भाषाओं के विकास के साथ ही होगा। हम आज भी इसी लाइन पर चल रहे हैं। यह तो कुछ अंग्रेजी-प्रेमियों ने नेपथ्य में रहकर हिंदी के खिलाफ भारतीय भाषाओं को खड़ा करने की कोशिश की।

ऐसा नहीं है कि हिंदी के विकास में गैर -हिंदीभाषियों का योगदान नहीं है, बल्कि कहा जाए तो उनका योगदान हम हिंदीभाषियों से ज्यादा ही है। हम अगर स्वतंत्रता से पहले नजर डालें तो पाएँगे कि गुजराती के महान कवि नर्मद (1833-86) ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार रखा। सन 1872 में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जब कलकत्ता में केशवचंद्र सेन से मिले तो उन्हीं के कहने पर उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' हिंदी में निकाला। सन 1918 में मराठी भाषी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषित किया था कि हिंदी भारत की राजभाषा होगी। सन 1918 में ही महात्मा गाँधी ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार-सभा की स्थापना की। सन 1935 के दशक में मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री सी. राजगोपालाचारी ने राज्य में हिंदी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया।

राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर महात्मा गाँधी ने राष्ट्रभाषा के निम्नलिखित लक्षण बताए- अमलदारों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए। उस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार हो

सकना चाहिए। यह जरूरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते और समझते हों। राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए। उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्प स्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए। इस कसौटी पर भारत की सभी भाषाओं को रखा गया और अंतत: इस कसौटी पर हिंदी खरी उतरी। पर इससे कहीं भी हिंदी और भारत की अन्य भाषाओं के बीच विरोध नहीं प्रकट होता। हिंदी भी भारत की अन्य भाषाओं में से एक है। अत: हिंदी और भारत की अन्य भाषाओं में विरोध कैसा? मेरे कई गैर-हिंदीभाषी मित्र हैं। वे मुझसे ज्यादा अच्छी हिंदी जानते, बोलते और लिखते हैं। हिंदी प्रयोग के संबंध में उनका कहना है कि गैर-हिंदीभाषी आम जनता में हिंदी का कहीं भी विरोध नहीं है। पर अपने स्वार्थ में कुछ राजनीतिक लोग हिंदी के विरोध की राजनीति करके अपना वोट-बैंक तैयार करते हैं। देखा जाए तो वे किसी भारतीय भाषा के समर्थक नहीं बल्कि अंग्रेजी के समर्थक ज्यादा दिखते हैं। जबकि उनका ध्येय भारतीय भाषाओं का विकास होना चाहिए।

हिंदी के विकास का जनतांत्रिक आशय तमिल, बंगला, पंजाबी आदि सिर्फ भाषाओं का ही नहीं बल्कि अगणित भारतीय बोलियों का भी विकास है। आज हिंदी विकास का लंबा सफर तय कर चुकी है। वह विंध्य को लाँघते हुए भारत के सुदूर दक्षिणी छोर तक पहुँच चुकी है और पूर्वोत्तर में भी यह धीरे-धीरे लोकप्रिय हो रही है। भारत सरकार अगर सचमुच हिंदी का विकास करना चाहती है तो उसे सभी भारतीय भाषाओं के विकास के प्रति भी संजीदा होना होगा, क्योंकि हिंदी का विकास सभी भारतीय भाषाओं के विकास से ही संभव है। साहित्य इसके लिए एक सशक्त माध्यम है। इसके लिए एक भाषा से दूसरी भाषा के बीच के अनुवाद को बढ़ाना होगा। परंतु अनुवाद भी वैसा नहीं होना चाहिए, जैसाकि सिविल सेवा की परीक्षार्थियों के अनुसार सी-सैट के पेपर का हुआ। हाल ही में इसके कारण छात्रों का आंदोलन भी चला कि सी-सैट पेपर का अनुवाद गूगल अनुवाद है। मशीनी अनुवाद न होकर उच्च-स्तरीय अनुवाद होना चाहिए। अब वक्त आ गया है कि भारत सरकार काल की गति को पहचाने और युगधर्म के मुताबिक आगे बढ़कर सभी भाषा-भाषी के मन से हिंदी के प्रति द्वेष को दूर करने का प्रयास करे। जब तक सभी भारतीय भाषाओं का साथ नहीं मिलेगा तब तक सही अर्थों में हिंदी का विकास नहीं हो सकता। सभी भारतीय भाषा के साथ ही हिंदी का विकास संभव है। इस बारे में यह कथन कितना अच्छा है कि-

हर दिन अपनी जिंदगी को एक नया ख्वाब दो<br>
चाहे पूरा न हो पर आवाज तो दो<br>
एक दिन पूरे हो जाएँगे सारे ख्वाब तुम्हारे<br>
सिर्फ एक शुरुआत तो दो... v

वरिष्ठ अनुवादक<br>
केंद्रीय हिंदी अनुभाग<br>
मुख्य कार्मिक अधिकारी कार्यालय<br>
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर<br>
**संपर्क: 09794840674**

**आप जिनके करीब होते हैं<br>
वो बड़े खुशनसीब होते हैं<br>
जब तबीयत किसी पे आती है<br>
मौत के दिन करीब होते हैं<br>
मुझसे मिलना, फिर आपका मिलना<br>
आप किसको नसीब होते हैं<br>
जुल्म सह कर जो उफ नहीं करते<br>
उनके दिल भी कितने अजीब होते हैं।**

**-नूह नारवी**

◆ साहित्य ◆

# हिंदी के उत्थान में हरिवंश राय बच्चन का योगदान एवं उनकी काव्य चेतना

डा. कृष्ण चंद्र लाल

**उत्तर** छायावादी कवियों में हरिवंश राय 'बच्चन' इस दृष्टि से अत्यंत ही महत्वपूर्ण और विशिष्ट हैं कि उनकी काव्य-यात्रा उनकी जीवन-यात्रा के अभिन्न अंग के रूप में संपन्न हुई, किंतु उनके काव्य और जीवन का यह संबंध हमेशा इतना सहज-सरल नहीं रहा है कि हम उसे असानी के साथ पानी पर तैरती खील की तरह से छान लें। उन्होंने लिखा है-

'राग के पीछे छिपा/
चीत्कार कह देगा किसी दिन/
हैं लिखे मधुगीत मैंने/
हो खड़े जीवन-समर में।

'राग और चीत्कार', 'मधुगीत और जीवन समर' के बीच कोई बहुत सीधा संबंध तो नहीं, किंतु बच्चन की कविता में उनका जीवन और जीवन में उनकी कविता इसी रूप में संपृक्त हैं। वे अकेले ऐसे कवि हैं जो कवि होने के पूर्व ही जीवन में कवि हो गए। उन्होंने लिखा है- 'कवि होने के पूर्व ही मैं जीवन में कवि हो गया था।' यह है कविता में जीवन और जीवन में कविता की स्वीकृति। यह बात और किसी के लिए सच हो, न हो; किंतु डा. बच्चन के लिए तो शत-प्रतिशत सही है।

डा. बच्चन ने लिखा है- 'मैं अपने यौवन-काल से अपनी तमाम अनुभूतियों और कल्पनाओं को मुखरित करता रहा हूँ। इस कारण मेरे जीवन और मेरे वाड्.मय की गति प्राय: समानांतर चली है। मुझे रचना-क्रम में पढ़ना, मेरे विकास को सहज समझना एक विकास क्रम से होकर स्वयं गुजरना है। कविता शायद इसी प्रक्रिया से संस्कारों को बनाने और उन्हें सँवारने में सहायक होती है।'

इस सत्य के साथ ही यह समझना भी जरूरी है कि कविता हमेशा किसी के जीवन का शब्दश: अनुवाद नहीं होती। उसके अनुभव में उसकी कल्पना कुछ नया जोड़ती है। कुछ छोड़ती और तोड़ती भी है। वर्तमान से क्षुब्ध होकर कभी अतीत में धकेलती है तो कभी भविष्य के मनोहारी स्वप्न दिखाकर आशान्वित करती है। कभी दु:ख को गहराती है तो कभी सुख का सुंदर वितान भी तानती है। बच्चन ने अपनी काव्य रचना के संदर्भ में इस तथ्य को रेखांकित किया है- 'जिसको शांत-विमुक्त घर नसीब नहीं हुआ, उसने मधुशाला बनायी। जिसे तन-मन की सहज संगिनी नहीं मिली, उसने मधुबाला की कल्पना की। जिसे मनचाहा साथी नहीं मिला, उसने साकी का हाथ थाम लिया और जो किसी निर्मल स्रोत से तृप्त नहीं हो सका, वह जीवन भर हाला के प्याले पर प्याले चढ़ाता रह गया।'

कहना न होगा कि डा. बच्चन और उनकी कविता दोनों एक-दूसरे को निरंतर उठते-गिरते जीवन संदर्भों के बीच एक नया व्यक्तित्व प्रदान करते रहे। उन्होंने कविताएँ लिखी नहीं हैं, वे तो स्वत:स्फूर्त ढंग से हो गयी हैं। एक जगह वह लिखते हैं- 'ऐसा मुझे याद नहीं पड़ता कि कभी मैंने कविता इसलिए लिखी हो कि अन्य लोग लिख रहे हैं। इसलिए कविता लिखूँ कि उससे किसी 'वाद' को बल देना है अथवा राष्ट्रभाषा हिंदी की महती सेवा करनी है। मेरा यह जीवन कुछ ऐसी अनुभूतियों-त्रासदियों-विसंगतियों से टकरा चुका था कि किसी प्रकार की अभिव्यक्ति उसके लिए अनिवार्य थी। निष्कर्ष यह कि कविता वह जो हो जाय, वह नहीं जो की जाय।'

तो डा. बच्चन की काव्य-चेतना को समझने के लिए इस संदर्भ को ध्यान में रखना बहुत जरूरी है। उनकी कविता उनके जीवन और उनके अंतस से सहज धारा के रूप में उच्छल वेग से फूटी है और जीवन के साथ ही साथ हुआ है उसका सतत स्वाभाविक विकास और परिष्कार। उनकी काव्य-साधना लगभग पचास वर्षों की ऐसी साहित्यिक-साधना है जिसमें जीवन के अनेक रंग और गतियाँ निहित हैं। उठते-गिरते संदर्भ हैं, बनते-बिगड़ते संबंधों के साथ ही व्यक्ति से लेकर समाज, राष्ट्र और विश्व तक की चिंताएँ, संघर्ष और अभिलाषाएँ सम्मिलित हैं। भावनाओं, कल्पनाओं, विचारों और बोध के विविध आयामों के अनुसार उनकी काव्य-चेतना और अभिव्यक्ति का रूप-रंग-ढंग विन्यास तक बदलता रहा है। निस्संदेह डा. बच्चन की काव्य-चेतना ऋजुरेखीय न होकर, बहुरंगी और बहुविध, बहुआयामी है- बहुरुपी।

डा. बच्चन की समूची काव्य-यात्रा के चेतनागत परिवर्तन की दृष्टि से तीन सोपान दिखायी पड़ते हैं।

पहले सोपान में आनंदोल्लास, मस्ती, जोश से परिपूर्ण उनका मधुकाव्य है; दूसरे सोपान पर निराशा, व्यथा, उदासी, अकेलेपन के संत्रास से भरा 'एकांत संगीत', 'निशा निमंत्रण', 'आकुल अंतर' आदि की अजस्रधारा है जबकि तीसरे सोपान पर है- 'बंगाल का अकाल', 'सूत की माला', 'खादी के फूल', 'बुद्ध और नाचघर', 'कटी प्रतिमाओं की आवाज' जैसी यथार्थवादी रचनाओं वाली विचार-समृद्ध अनूठी कविताएँ। जाहिर है, भाव-प्रवण कवि बच्चन जीवन संघर्षों के मार्ग पर जैसे-जैसे होकर गुजरते हैं, वैसे-वैसे उनकी काव्य-चेतना भी नये-नये रूप धारण करती हुई नयी काव्य-सृष्टि को संभव बनाती है। वह न तो अचानक ही प्रौढ़ हुए और न ही अचानक ही वृद्ध। उनकी कविता 'जीवन के प्रांगण में किलकारी' बनकर फूटी है तथा जीवन के साथ ही व्यापक और समझदार भी हुई है। स्वीकार करना होगा कि राष्ट्रभाषा हिंदी के उत्थान में हरिवंश राय बच्चन का योगदान विशिष्ट और अप्रतिम है।

डा. बच्चन के प्रारंभिक काव्य को मधुकाव्य और उसे 'हालावाद' के प्रतिष्ठापरक काव्य के रूप में देखते-समझते हुए अधिकांश समीक्षकों ने प्राय: उस पर प्रहार किए हैं जबकि सच्चाई तो यह है कि इतने वर्षों के बाद आज भी उनका वह काव्य उनकी अजस्र गरिमामयी कीर्ति का आधार बना हुआ है और उसी से उनकी लोकप्रियता भी अक्षुण्ण बनी हुई है। 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश' के माध्यम से डा. बच्चन ने अपनी जवानी के जोश, उमंग, मस्ती का परिचय दिया है। किंतु वह नितांत व्यक्तिगत अथवा आत्मसीमित नहीं है। उसमें देश और समाज का सच भी व्यंजित हुआ है। जिस समय से ये कृतियाँ प्रकाश में आयीं, वह दौर भारतीय स्वाधीनता-संघर्ष का जोश-भरा समय था। इस मस्ती और उन्माद को व्यापक बनाकर डा. बच्चन ने कुछ ऐसे शिल्प में ढाला कि पढ़ने-सुननेवाले झूम उठें, किंतु यह कविता पाठकों-श्रोताओं को मस्ती की नींद सुलानेवाली कविता नहीं थी। इसमें जीवन और जगत का कटु यथार्थ था और जीवन को जीने के लिए अदम्य लालसा। यह हृदय की ऐसी मदिरा थी जो भावुकतारूपी अंगूरलता से खींची गयी थी और कभी भी रिक्त होने वाली नहीं थी-

भावुकता-अंगूरलता से खींच कल्पना की हाला,
कवि-साकी बन कर आया है, भरकर कविता का प्याला
कभी न कण भर खाली होगा, लाख पिएँ, दो लाख पिएँ
पाठकगण पीने वाले हैं, पुस्तक मेरी मधुशाला
जला हृदय की भट्टी खींची, मैंने आँसू की हाला
छल छल छलका करता इसमें, पल पल पलका प्याला
आँखें आज बनी हैं साकी, गाल गुलाबी पी होते
कहो न विरही मुझको, मैं हूँ चलती-फिरती मधुशाला।

ध्यातव्य है कि यह मधुशाला वह मदिरालय नहीं है जहाँ लोग पीकर बहकते-लोटते और नाले में गिरते हैं। यह तो जीवन में दर्द का नशा पैदा करने वाली, स्मृतियों को जगाने वाली और मनुष्य को सही राह पर लाने वाली वह चेतना है जो रूढ़ियों, अंधविश्वासों, पाखंडों को ध्वस्त करती है और पंडित-मुल्ला-पादरी के जाल-जंजाल से तमाम समाज के लोगों को बचाती है तथा मानव-मानव के मध्य दीवार बनाने वाले तत्वों का नाश करती है। इस 'मधुशाला' में उसी की पैठ संभव है जो विभेदकारी बातों/चीजों को छोड़ चुका हो-

धर्मग्रंथ सब जला चुकी हैं जिसके अंदर की ज्वाला
मंदिर-मस्जिद-गिरजे सबको तोड़ चुका जो मतवाला
पंडित, मोमिन, पादरियों के फंदों को जो काट चुका
कर सकती है आज उसी का स्वागत मेरी मधुशाला।

'मधुशाला' को कवि ने साम्यवाद की प्रथम प्रचारक भी कहा है-

एक तरह से सबका स्वागत करती है साकीवाला
अज्ञ-विज्ञ में क्या है अंतर हो जाने पर मतवाला
रंक-राव में भेद हुआ है कभी नहीं मदिरालय में
साम्यवाद की प्रथम प्रचारक है यह मेरी मधुशाला।

'मधुशाला' में मस्ती है, जोश-उमंग-आनंदोल्लास है किंतु इसके साथ ही जीवन-जगत की ऐसी वास्तविकताएँ भी इसमें चित्रित हैं जो हमें अंतर्मन की गहराइयों तक को झकझोर देती हैं। जन्म, जीवन-मृत्यु, मिलन-विछोह, संसार की समग्र निस्सारता, भाग्य की प्रबलता, इच्छाओं की प्रचुरता आदि अनेक ऐसी बातें हैं जो मधुशाला में दार्शनिक आशयों का संचार करती है। सौ सुधारकों का कार्य यह अकेले संपन्न करती है। बताते हैं कि पंडित रामप्रसाद 'बिस्मिल' ने 'आजादी की वधशाला' इसी 'मधुशाला' की तर्ज पर लिखी थी जिसकी कुछ पंक्तियाँ हैं-

हटा न मुल्ला और पुजारी के दिल का पर्दा काला
कभी न मिलकर पीने देते ये आजादी का प्याला
छुरी-कटारी चल पड़ती है जरा-जरा-सी बातों पर
मंदिर-मस्जिद आज बने हैं भाई-भाई की वधशाला।

'मधुशाला' की तरह 'मधुबाला' और 'मधुकलश' में भी बच्चन ने युवावस्था के जोश, उन्माद, हर्षोल्लास के साथ जीवन-जगत की अनेकानेक वास्तविकताओं का सरस चित्रण किया है, किंतु सारी बातें अभिधा में न होकर लक्षणा-व्यंजना और प्रतीकों में है। इसलिए सुविज्ञ समीक्षक का यह कर्तव्य है कि वह उन प्रतीकों के अर्थ खोले और पाठक के समक्ष 'मधुशाला' के उस अर्थ को उद्घाटित करे जो कवि 'बच्चन' का मंतव्य है। कहना न होगा कि छायावादी आकाशचारी प्रेम-कल्पना को 'बच्चन' ने 'मधुशाला' के जरिये धरती पर उतार लिया है।

'निशा-निमंत्रण', 'एकांत संगीत' और 'आकुल अंतर' में बच्चन के दग्ध-हृदय की अवसादमयी अभिव्यक्ति हुई है। इसी से कई आलोचकों ने निराशा का काव्य कहकर इनकी उपेक्षा की है और बच्चन की काव्य चेतना को 'व्यक्तिवादी' कहकर हतोत्साहित भी किया है, किंतु विचारणीय है कि बच्चन की जीवन-परिस्थितियों से उद्भूत-नि:सृत यह काव्य-संवेदना उपेक्षणीय क्यों हो गयी? क्या इसतरह का साहित्य और नहीं लिखा गया है? क्या निराशा, वेदना, विषाद, अवसाद में डूबी हुई कविता जीवन के लिए कोई अर्थ नहीं रखती? बच्चन ने लिखा है कि कविता उनके जीवन की प्रमुख आवश्यकता बनकर व्यक्त हुई है। कविता ने उनके जीवन को संभाला है। जाने कितने लोगों को हारते-टूटते क्षणों में जीने की नयी शक्ति दी है।

डा. बच्चन थके, टूटे, बिखरे भले किंतु कभी रुके नहीं। तूफानों-बवंडरों के बीच सदैव आगे बढ़ते रहे रीढ़ सीधी किए हुए। यह समझने के लिए उनकी मशहूर कविता 'अग्निपथ' रेखांकित की जा सकती है। डा. नगेंद्र ने लिखा है- 'निशा निमंत्रण और एकांत संगीत का रचनाकाल बच्चन के लिए आत्म-साक्षात्कार का समय है। इन कविताओं में भाग्यचक्र के नीचे दबे हुए मानव की चीत्कार और ललकार दोनों के मिले-जुले स्वर स्पष्ट सुनायी पड़ते हैं।' 'आस्था के चरण' बच्चन की कविता रुलाती ही नहीं, वरन जगाती और आगे भी बढ़ाती है। सहधर्मिणी तेजी बच्चन के संपर्क में आकर 'मिलन यामिनी' के गीत गाने लगे थे-

वृक्ष हो भले खड़े, हों घने, हों बड़े
एक पत्र छाँह भी मांग मत, मांग मत, मांग मत
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ।
तू न थकेगा कभी, तू न थमेगा कभी
तू न मुड़ेगा कभी
कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ।

डा. बच्चन ने अपनी काव्य-यात्रा में जीवन के समानांतर चलते रहकर सृजन की जैसी निरंतरता और गतिशील सक्रियता प्रमाणित की है, वह विरल है। एक समय के बाद 'जाल समेटा' संग्रह देकर उन्होंने काव्य-रचना से मुक्ति ही ले ली-

जाल समेटा करने में भी
समय लगा करता है, माँझी
मोह मछलियों का अब छोड़।

इसतरह मधुकाव्य से जीवन के प्रति मोह पैदा करने वाले कवि ने मोह से ही नाता तोड़ लिया। 'जाल समेटा' को उनकी काव्य-चेतना के अवसान के रूप में समझा जा सकता है। वह जीवनपर्यंत अग्निपथ पर चले। न कभी थके, न कभी मुड़े। न किसी के तलुवे चाटे और न ही किसी के सामने गिड़गिड़ाये। उन्होंने लिखा है- 'कविता से एक मांग मैंने हमेशा की है कि वह लिखे जाने का आनंद दे, सुननेवाले को, सुनानेवाले, पढ़नेवाले को आनंद दे। कविता को आँख से नहीं, मुख से पढ़ना चाहिए हृदय की गहराइयों से जुड़कर।' डा. बच्चन का पूर्ववर्ती काव्य इस कसौटी पर खरा उतरता है किंतु उत्तरवर्ती काव्य आत्मा को आनंद देने के बजाय बुद्धि को आनंदित करता है। इसे बच्चन के पूर्व और उत्तर-काव्य के अंतर के रूप में भी समझा जा सकता है। v

भूतपूर्व विभागाध्यक्ष
हिंदी विभाग
दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय
सूरजकुंड कालोनी
गोरखपुर-273015
**संपर्क: 09451958715**

**स्वयं को बदल दो भाग्य बदल जाएगा।**

◆ साहित्य ◆

# स्वदेशी, स्वभाषा, स्वाधीनता और भारतेंदु

कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव

**स्वाधीनता** की स्वर्ण जयंती तो हम वर्षों पूर्व मना चुके हैं। लगभग सात दशक होने को है हमें आजाद हुए, किंतु इतने वर्षों से संघ सरकार के कई रहनुमाओं के द्वारा की जा रही हिंदी की उपेक्षा से राष्ट्रानुरागी और समस्त हिंदी-प्रेमी आहत हैं। भारत का संविधान अनुच्छेद 343 के द्वारा हिंदी को राजभाषा का दर्जा देता है।

अनुच्छेद 344 एवं 351 के द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए तथा हिंदी को संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में विकसित करने के लिए भी प्रावधान किए गए हैं किंतु इसे इसका यथेष्ट स्थान, वर्ग एवं क्षेत्र तुष्टीकरण की नीति के चलते, प्रदान करने के प्रयास संजीदगी के साथ नहीं किए जा रहे हैं। आखिर जब अनुच्छेद 343(खंड-2) में अंग्रेजी को संविधान के लागू होने के 15 वर्ष तक ही जारी रखने की छूट दी गई थी; तो फिर अंग्रेजी के प्रति मोह और दासता की मनोवृत्ति दूर क्यों नहीं हो पा रही है?

हिंदी जब शब्द भंडार, भावाभिव्यक्ति और शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने की पूर्ण क्षमता रखती है तब क्यों नहीं इसे इसका विधिक और समुचित स्थान नहीं दिया जा रहा है? दासता की प्रतीक भाषा अंग्रेजी में भला कौन से लाल हीरे जड़े हैं कि वही विधायन, कोर्ट, कार्यालयों, सेवायोजनों से लेकर सम्मेलनों तक की प्रमुख भाषा के रूप में छायी है? क्या इसलिए कि हिंदी को संपर्क-भाषा और राजभाषा बनाया गया है? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिन पर राष्ट्र के सभी प्रबुद्ध-जन को चिंतन-मनन करना चाहिए।

सरकार को, विशेष रूप से संघ की सरकार को इससे जुड़े तमाम जिम्मेदार लोगों को आत्म-मंथन करना चाहिए तथा न्यायपालिका को इस दिशा में भी अपेक्षाकृत सक्रिय हो जाना चाहिए। सत्ता में पहुँचे तमाम राजनेताओं में राजनीतिक इच्छाशक्ति प्रबल होने पर वोट बैंक की परवाह न करके भी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के इन शब्दों को विशेष चरितार्थ किया जा सकता है- 'यदि स्वराज्य करोड़ों भूखे मरने वालों का, करोड़ों निरक्षरों का, निरक्षर बहनों का और दलितों एवं अंत्यजों का हो तथा इन सबके लिए हो तो हिंदी ही एकमात्र राजभाषा हो सकती है।'

आजादी के लगभग सात दशक होने जा रहे हैं। हमारा हर महत्वपूर्ण कार्य तभी सार्थक कहला सकेगा जब राष्ट्रभाषा हिंदी को अपने यथेष्ट स्थान पर अधिष्ठापित किया जाए- 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल' का भारतेंदु हरिश्चंद्र के द्वारा दिया गया संदेश हमें सदैव स्मरण करते रहना चाहिए। राष्ट्रभाषा हिंदी को बिना उसका उचित स्थान प्रदान किए, न तो राष्ट्र में भावनात्मक एकता आ सकती है और न ही इसकी अस्मिता और सांस्कृतिक चेतना की रक्षा की जा सकती है। न ही हम स्वयं को स्वाधीन कह अथवा समझ सकते हैं चाहे करोड़ों हीरक जयंतियाँ ही क्यों न मना डालें।

एक बात और- स्वाधीन होने और स्वाधीन बने रहने के लिए स्वावलंबन अत्यावश्यक है। स्वावलंबन की अवधारणा को सुदृढ़ करने में स्वदेशी को अपनाना अत्यंत महत्वपूर्ण कदम कहा जाना चाहिए। बहुत से लोगों को भ्रम है कि स्वदेशी की अवधारणा का सूत्रपात महात्मा गाँधी ने किया, जबकि तथ्य तो यह है कि महात्मा गाँधी जब चार वर्ष के थे तब भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' में एक संकल्प पत्र बार-बार प्रकाशित किया जिसको भरने वाले लोग यह प्रतिज्ञा करते थे कि अब वे अथवा उनके परिवार के लोग विदेशी वस्त्रों अथवा सामान का इस्तेमाल कदापि नहीं करेंगे।

'कवि वचन सुधा' पत्रिका के 23 मार्च 1874 के अंक में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने विदेशी वस्त्रों एवं सामानों के त्याग और 'स्वदेशी' के व्यवहार का जो संकल्प प्रकाशित किया था, उसे डा. रामविलास शर्मा ने स्वर्णाक्षरों में अंकित किये जाने योग्य कहा था। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने इस बात पर खेद जताया था कि-

अंगरेज राज सुख-साज सजे सब भारी
पै धन विदेस चलि जात यहै अति ख्वारी।

इन पंक्तियों से जो लोग यह समझते हैं कि भारतेंदु अंग्रेजी राज की प्रशंसा कर रहे हैं, उन्हें 'पै' पर

ध्यान देना चाहिए। भारतेंदु कहते हैं कि जब देश का सारा धन विदेश चला जा रहा है, तब सुख का साज भला सजेगा कैसे?

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने बलिया में दिए अपने सुविख्यात भाषण में अपार जनसमूह के बीच कहा था- 'तुम्हारा रुपया तुम्हारे ही देश में रहे, वह काम करो। देखो, जैसे हजार धारा होकर गंगा समुद्र में मिली है वैसे ही तुम्हारे देश की लक्ष्मी हजार तरह से फ्रांस, इंगलैंड, जर्मनी, अमेरिका को जाती है। ...हाय, अफसोस कि हम-तुम ऐसे हो गये कि अपने काम की वस्तु भी स्वयं नहीं बना सकते। भाइयों, नींद से जागो। सब प्रकार से अपने देश की उन्नति करो जिसमें तुम्हारी भलाई हो, वैसी किताब पढ़ो- निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल।'

संयोगवश, कुछ लोग 'निज भाषा' का अर्थ केवल 'हिंदी' से ही लगाते हैं; जबकि भारतेंदु समस्त भारतीय भाषाओं की बात करते हैं। उनकी मान्यता थी कि सारी भारतीय भाषाएँ समान रूप से सुविकसित होकर सबको गुलाम बनाने वाली उपनिवेशवादी भाषा अंग्रेजी से लोहा ले सकती हैं। अंग्रेजी के बारे में भारतेंदु ने एक 'मुकरी' रची थी-

सब गुरुजन को गुरो बतावै, अपनी खिचड़ी आप पकावै।
भीतर तत्व न, झूठी तेजी, क्यों सखि साजन? नहीं, अंग्रेजी!

भारतेंदु ने नागरिक जीवन को नियंत्रित करने वाली पुलिसिया व्यवस्था पर यों टिप्पणी की थी-

रूप दिखावत, सर्वस लूटे, फंदे में जो फँसै कभी न छूटे
कँपत कटारी, हिय हूलिस, क्यों सखि साजन? नहीं, सखि पोलिस!

नौकरशाहों की असलियत भारतेंदु ने यों बयान की-

मतलब ही की बोले बात, राखे सदा काम की घात
डोले, पहिरे सुंदर समला, क्यों सखि साजन? ना सखि,अमला!

पढ़े-लिखे बेरोजगारों की बढ़ती भीड़ का चित्रण यों किया उन्होंने-

तीन बुलाये, तेरह आवे, निज-निज विपदा रोय सुनावे।
आँखों फूटे भरा न पेट, क्यों सखि साजन? ना सखि, ग्रेजुएट!

जाहिर है कि जब शिक्षा प्राप्त करने का एकमात्र उद्देश्य येन-केन-प्रकारेण नौकरी प्राप्त करना ही रह गया, तब स्वभावतः दासता की बेड़ियाँ और कसती चली गयीं। भारतेंदु ने स्वाधीनता के इस रहस्य को समझ लिया था कि गुलामी से निजात पाने के लिए स्वदेशी को अपनाने के साथ ही मानसिक दासता से मुक्त होना ही पड़ेगा। स्वदेशी, स्वभाषा और स्वाधीन स्वराष्ट्र की परिकल्पना तो भारतेंदु हरिश्चंद्र और महात्मा गाँधी में एक ही समान दिखाई पड़ती है। दोनों ही यह मानते हैं कि स्वदेशी की अवधारणा को पूरी तरह समझकर आचरण में उतारकर स्वावलंबन के जरिये ही स्वाधीनता प्राप्त की जा सकती है। फिर आजादी मिलने के बाद उसकी रक्षा की जा सकती है।

निस्संदेह आज बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सघन होते जा रहे संजाल में फँसते जा रहे विकासशील राष्ट्र भारत को स्वदेशी और स्वावलंबन ही बाहर निकाल सकते हैं। इसमें अपनी भाषा हिंदी ही सर्वाधिक मददगार साबित हो सकती है। v

वरिष्ठ उप संपादक 'आज'
बैंक रोड, गोरखपुर-273015 (उ.प्र.)
**संपर्क: 9451202409**

**साहित्यकार किसी शून्य में उत्पन्न न होकर एक विशेष युग, विशेष परिवेश में उत्पन्न होता है, अतः अपने युग से प्रभावित होना उसके लिए अनिवार्य है। अंतर यही है कि उसमें युगबोध के अतिरिक्त युगांतरबोध भी रहता है। उसकी मानसिकता ऐसी त्रिवेणी है जिसमें अतीत युगों के शाश्वत जीवन मूल्यों की गंगा भी है, वर्तमान युग की समस्याओं की उच्छल प्रवाहमयी यमुना भी और अनागत भविष्य की अंतःसलिला सरस्वती भी। इसी से पार्थिव रूप से साहित्यकार के न होने पर भी उसकी रचना आगत पीढ़ियों को संबल देती रही है।**

**-महादेवी वर्मा**

◆ कहानी ◆

# चालक की सतर्कता

शकील अहमद सिद्दीकी

**उस** दिन मैं बहुत ही खुश थी कि आज मेरी शादी के लिए मुझे देखने आ रहे हैं। मैं अपने कमरे में अपने सोच में व्यस्त थी कि एक शोर हुआ कि लड़के वाले आ गए। सभी लोगों को जलपान कराने के बाद बात का दौर प्रारंभ हुआ। लड़के वालों ने कहा कि मेरा लड़का रेलवे में सहायक चालक के पद पर कार्यरत है। मैंने रेलवे में भर्ती कराने के लिए बहुत ही प्रयास किया, तब जाकर भर्ती हुआ। मैं दहेज में पाँच लाख कैश-गाड़ी तो अवश्य लूँगा। साथ ही साथ स्वागत में कोई कमी नहीं होनी चाहिए। खैर विवाह संपन्न हो गया और मैं ससुराल आ गयी। कुछ समय बाद मेरी सासु माँ ने कहा- 'बेटा! अब बहू को अपने साथ रक्खो ताकि तुमको आराम मिले।' मैं बहुत ही खुश थी कि अब मैं अपने पति के नौकरी पर साथ रहूँगी।

मैं अपनी पति के साथ नौकरी पर आ गयी। पति ने पहले से ही एक मकान की व्यवस्था कर ली थी। मैं वहाँ रहने लगी। पति जब अपने ड्यूटी पर चले जाते तो मैं अकेले ही घर पर रहती। ड्यूटी के दौरान तीन या चार दिन के बाद घर आते और खाना खाकर फौरन सो जाते। एक दिन मैंने उनसे पूछा कि आप की यह कैसी ड्यूटी है कि आप आते ही फौरन सो जाते हैं। उन्होंने मुझे समझाया कि रनिंग की ड्यूटी ही ऐसी है कि रात-दिन जाग कर अपनी ड्यूटी गाड़ी चलाकर जनता को सुरक्षित पहुँचाना है। जाड़ा आने वाला था। वह जाड़े के कपड़ों को छाँट रहे थे। मैं उनका सहयोग कर रही थी। बातों ही बातों में मैंने उनसे काम की जानकारी ली तो पता चला कि जाड़े के मौसम में इतना अधिक ठंडा पड़ता है कि शरीर अकड़ जाता है। फिर भी सतर्कतापूर्वक गाड़ी का संचालन करना पड़ता है। यदि एक छोटी सी भूल हो जाए तो नौकरी समाप्त। उन्होंने विस्तार से पूरी बात बतायी।

जो बात इन्होंने बतायी उसके अनुसार मैं इस नतीजे पर पहुँची कि विभाग रनिंग स्टाफ के साथ बहुत ही अन्याय करता है। जो लोग गाड़ी संबंधी कार्य नहीं करते वह ही रनिंग कर्मचारियों का लिंक-डायग्राम बनाते हैं। ऐसी स्थति में उन्हें जाड़े-गर्मी से क्या मतलब? जबकि वह स्वयं रनिंग स्टाफ थे। सुरक्षा की जिम्मेदारी सभी लोगों की है। एक चालक जब अपनी गाड़ी का संचालन करता है तो उसके सभी अंग एक साथ कार्य करते हैं जैसे हाथ, पैर, नाक, कान आदि जिससे संरक्षित कार्य करने में मदद मिलती है। कोहरे के मौसम में जब कुछ दिखाई नहीं पड़ता तब भी वह संरक्षा का पूर्ण ध्यान देता है और जनता को सरंक्षित गंतव्य स्थान पर पहुँचाता है। फिर भी उसे विश्राम के लिए मात्र बारह घंटे या सोलह घंटे? पुत्र की बीमारी, गैस लाना, राशन का इंतजाम सब इसी विश्राम अवधि में करना है। ऐसी स्थति में कार्य के दौरान एब्सकांडेड माइंड का होना स्वाभाविक है जिससे दुर्घटना होना स्वाभाविक है। दुर्घटना घटी और नौकरी समाप्त। मैं सोचती हूँ रनिंग स्टाफ की पत्नियों को निम्न बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। ड्यूटी पर जाते समय प्यार से ड्यूटी पर भेजें तथा ड्यूटी से आने पर मुस्कराकर अभिनंदन करें। मुझ जैसी रनिंग स्टाफ की सभी पत्नियाँ इससे प्रभावित हैं, लेकिन मजबूर। सरकार एवं परिवार दोनों को इस जाड़े के मौसम में विशेष ध्यान रखना चाहिए ताकि हमलोगों का सुहाग सलामत रहे। साथ ही साथ पूर्ण विश्राम भी मिले तथा संरक्षा भी बाधित न हो। v

संरक्षा सलाहकार/लोको
मुख्य संरक्षा अधिकारी कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
**संपर्क: 9794840919**

**देवता न बड़ा होता है, न छोटा, न शक्तिशाली होता है, न अशक्त वह उतना ही बड़ा होता है जितना बड़ा उसे उपासक बनाना चाहता है।**

## ◆ लघु कथाएँ ◆

अमित कुमार

### शास्त्रार्थ

**ऋषि** महाराज का प्रवचन चल रहा था। ऊँचे आसन पर थुल-थुल शरीर पर सफेद रेशमी वस्त्र लक-दक चमक रहा था। हजारों की भीड़ उन्हें शांत भाव से सुन रही थी। 'परम पिता परमेश्वर ने हमें बुद्धि दी है। इस बुद्धि का प्रयोग करते हुए हमें गलत कार्यों से दूर रहना चाहिए। हम कोई भी गलत कार्य करें तो हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि वह हमें देख रहा है और वह इसकी सजा अवश्य देगा। जैसे एक बालक अपने पिता से डरता है ठीक उसी तरह हमें उस परम पिता परमेश्वर से डरना चहिए, उसके प्रकोप से डरना चाहिए।' 'क्यों आप अपने पिता के गुस्से से डरते हैं न।' -महाराज जी ने सामने बैठे बारह वर्षीय बालक से पूछा। यह महाराज जी की विशिष्ट शैली थी। प्रवचन के दौरान वे लोगों से संवाद करते थे। इसके लिए श्रोताओं के बीच-बीच में माइक रखे हुए थे। बालक थोड़ा सकुचाया पर माँ के उत्साहवर्द्धन से वह बोला- 'नहीं, मैं अपने पिताजी से नहीं डरता।' माइक के जरिये उस बालक का संवाद पूरे पंडाल में प्रसारित हुआ।

महाराज जी को ऐसे उत्तर की उम्मीद हरगिज नहीं थी। माथे पर थोड़ा बल पड़ा पर मुख मंडल की आभा में तनिक भी परिवर्तन नहीं आने दिया।

'क्या आप अपने पिताजी से नहीं डरते हैं कि आप कोई गलत काम करेंगे तो वे नाराज हो जाएँगे।'

बालक क्षण भर के लिए सोचा- 'मैं अपने माता-पिता से नहीं डरता अपितु इस बात से डरता हूँ कि मेरे किसी कृत्य से उन्हें दुःख न पहुँचे, न मेरे किसी काम से उन्हें लज्जित होना पड़े।'

महाराज जी हल्के से मुस्कराये- 'बात तो वही हुई। आप डरते हैं चाहे कारण कोई हो।' मुस्कराता चेहरा उनकी झुझलाहट को छिपा नहीं पा रहा था।

'नहीं यदि मैं डरता तो सोचता कि नाराज होने पर पिताजी मेरा अहित कर देंगे या मुझे दंड देंगे पर मुझे तो यह विश्वास है कि वे हर अहित से मुझे बचाएँगे।'

महाराज जी की मुस्कराहट थोड़ी और चौड़ी हो गयी- 'उत्तम, अति उत्तम। परम पिता परमेश्वर भी हमें हर अहित से बचाते हैं, ऐसा विश्वास हर प्राणी के मन में होना चाहिए, बोलो राधे-राधे!' और वे एक गीत का तान छेड़ दिए। मंडल के सभी भक्तगण भी तान के साथ लय में लय मिलाने लगे।

पर अब न महाराज जी ही सहज थे और न ही वहाँ मौजूद कोई भक्त। पंडाल में अब सब कुछ यंत्रवत चल रहा था।

### सुविधा शुल्क

**वह** मेरे सामने खड़ा था। मैंने उसे बैठने का संकेत किया था, बावजूद इसके वह हाथ जोड़े खड़ा था। उसे अपनी बेटी का डुप्लीकेट अंक पत्र बनवाना था जिसकी जरूरत उसे दो दिन बाद बी.टेक में दाखिले के वक्त पड़नी थी। 'कल शाम को बेटी की ट्रेन है। कल शाम तक मिल जाता तो बड़ा अहसान होता।' उसने हाथ जोड़कर अनुरोध किया। हालाँकि उसे लगभग यकीन हो गया था कि उसका काम नहीं हो पाएगा। उसका ऐसा सोचने के पीछे बड़ा मजबूत आधार था। वह नगर निगम में इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत था। पिछले दिनों मैं उसके पास एक अर्जी लेकर गया था कि मेरे घर का पैमाइश गलत हुआ है तथा इस बार के गृहकर बिल में पिछले तीन वर्षों का बकाया चढ़ कर आया है जबकि हर साल गृहकर जमा किया गया है, उसकी रसीद भी है। इसे ठीक कर दें। दो-चार बार तो वह मुझे टहलाता रहा और जब उसे पूरा इत्मीनान हो गया कि मैं उसकी बात नहीं समझ पा रहा हूँ तो उसने बड़े खुले शब्दों में पैसे की बात की। ऐसे में मेरा बिगड़ना स्वाभाविक था। आवेग में मैंने उसे फटकारा और उसकी शिकायत करने, उसको नौकरी करना सिखा देने की चुनौती दे डाली। वह भी तैश में आकर चुनौती स्वीकार करते हुए चीखा- 'मंत्रालय तक मेरी शिकायत कर देना, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता।'

मैंने उसे डुप्लीकेट अंक पत्र के लिए फार्म भरकर 100 रुपये जमा करा देने को कहा और यह भी जोड़ा कि शाम को आकर अंक पत्र ले जाए। औपचारिकताओं की पूर्ति के बाद वह कैशियर द्वारा दिए गए रसीद के साथ पुनः आया और पूछा 'आज शाम को ही आना है।' मेरे हाँ करने पर भी वह सशंकित हो गया। शाम को अंक पत्र प्राप्त करते हुए वह मेरे प्रति कृतज्ञ था। आभार प्रकट करते हुए उसने एक सफेद लिफाफा मेरी ओर बढ़ाया। 'यह बच्चों की मिठाई के लिए।' अब बात बर्दाश्त के बाहर थी। मैंने घंटी बजाकर सुरक्षा कर्मी को बुलाया और उसे धक्के देकर परिसर से बाहर करने का हुक्म दिया। उसकी आँखों में निर्लज्जता थी। पर वह इस बात से कुछ ज्यादा हैरान था कि जिस सुविधा शुल्क को लेते हुए वह कभी अपमानित नहीं हुआ आज वही देते वक्त इतना अपमानित क्यों हो रहा है। v

प्रभारी/हिंदी
भारतीय खाद्य निगम, गोरखपुर
**संपर्क: 09532659184**

# 61.0 मी. स्पान के ओपेन वेब-गर्डरों का कैंटीलीवर पद्धति से लांचिंग का कार्य

ए. के. सेनगुप्ता

**हाल** में रेलवे के एक निर्माणाधीन पुल पर कैंटीलीवर पद्धति से गर्डर लांचिंग के कार्य के दौरान पुल के गर्डर का क्रेन सहित नदी तल पर गिर जाने की दुर्घटना की जाँच का कार्य हमें सौपा गया था। जाँच के दौरान यह पाया गया कि उक्त पुल पर कैंटीलीवर पद्धति से गर्डर लांचिंग के कार्य में बहुत से सावधानियों को नजरअंदाज किया गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि वहाँ पर कार्यरत रेलवे एवं ठेकेदार के कर्मचारियों को इस कार्य की पद्धति के बारे में विस्तृत जानकारी ही नहीं है। इस घटना की जाँच के उपरांत हमें यह अहसास हुआ कि पुल पर कैंटीलीवर पद्धति से गर्डर लांचिंग के कार्य की विधि के बारे में हिंदी में एक लेख लिखा जाए एवं इसे निचले स्तर तक प्रचारित किया जाए जिससे कि भविष्य में इसतरह की घटना की पुनरावृत्ति न हो।

**कैंटीलीवर पद्धति से गर्डर लांचिंग के कार्य की विशेषता**

कैंटीलीवर विधि से गर्डर लांचिंग का कार्य एक विशिष्ट पद्धति है जिसके द्वारा ओपेन वेब गर्डरों का लॉचिंग किया जाता है। इस विधि की मूल विशेषता निम्न है-

1. यह पद्धति उन पुलों पर अपनाया जाता है जहाँ पर नदी में पानी अधिक हो या पायों की ऊँचाई अधिक हो।
2. गर्डर विनिर्माण की गुणवत्ता अपूर्ण हो जिससे कि गर्डर के लांचिंग के बाद सही कैंबर प्राप्त हो सके।
3. गर्डर के लांचिंग में अधिक समय लगता है।
4. कैंटीलीवर विधि के लिए पर्याप्त मात्रा में प्रतिभार (counter weight) उपलब्ध हो।
5. कैंटीलीवर विधि के लिए मौसम सहायक हो एवं हवा की गति कम हो।
6. कैंटीलीवर पद्धति से गर्डर लांचिंग की स्कीम मान्यता प्राप्त प्रतिष्ठान से परिकल्पित हो।

**कैंटीलीवर लांचिंग हेतु विशेष सामग्री**

**1. लांचिंग क्रेन**- यह 5 टन क्षमता की डेरिक क्रेन होती है जिसकी जीभ 60 फीट लंबी होती है। यह क्रेन गर्डर के टाप कार्ड के ऊपर बिछाए गए रेलपथ पर चलती है इस रेलपथ का गेज 5.2 मी. होता है।

**2. क्रैब विंच**- सामग्री को उठाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इसे हाथ से चलाया जाता है। क्रैब विंच क्रेन के ऊपर रहता है।

**3. लिंक, लिंक पिन एवं लिंक प्लेट**- लिंक चैनल एवं प्लेट का बिल्ट-अप सेक्शन होता है। इसे भी मान्यता प्राप्त प्रतिष्ठान से परिकल्पित कराया जाता है। लिंक, लिंक पिन एवं लिंक प्लेट का डिजाइन के अनुरूप होना बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी लिंक के सहारे गर्डर का कैंटीलीवर हिस्सा टिका रहता है।

**4. अस्थाई वर्टीकल**- यह भी बिल्ट अप सेक्शन होता है एवं इसे गर्डर के एल-0 जोड़ पर लिंक को सहारा देने के लिए खड़ा किया जाता है।

**5. बफर ब्लाक**- दो सेट बफर ब्लाक का प्रयोग बाटम कार्ड के किनारे किया जाता है। यह गर्डर के कैंटीलीवर हिस्से के दबाव को बर्दास्त करता है।

**6. अस्थाई पोर्टल**- अस्थाई पोर्टल का प्रयोग यू-1 जोड़ पर दोनों एंड रेकर तथा टाप कार्ड को जोड़ने के लिए किया जाता है।

**7. हैंगिंग डिवाइस**- यह दोनों सिरे पर स्लिंग लगा वायर रोप है जिसका एक सिरा अस्थाई वर्टीकल के ऊपर लगे ब्रैकेट के साथ तथा दूसरे सिरे पर बाटम कार्ड को लटकाया जाता है। इसका प्रयोग बाटम कार्ड को सहारा देने के लिए किया जाता है जब तक कि बाटम कार्ड को एंड रेकर/डायगोनल एवं वर्टीकल से जोड़ा नहीं जाता है इस डिवाइस की लंबाई आवश्यकता के अनुरूप घटायी बढ़ायी जा सकती है।

उपरोक्त के अतिरिक्त इस कार्य हेतु पर्याप्त मात्रा में लकड़ी के स्लीपर, गुटका, रेल, टर्न बोल्ट, वायर रोप, रिवीटिंग कार्य में लगने वाले उपकरण, कंप्रेसर इत्यादि कार्यस्थल पर उपलब्ध होने चाहिए।

**कैंटीलीवर विधि से गर्डर लांचिंग**

**प्रारंभिक कार्य**- पुल के पहले स्पान का इरेक्शन परंपरागत तरीके से डेरीक या रोड क्रेन द्वारा किया जाता है। पूरे गर्डर का इरेक्शन होने के उपरांत कैंबर चेक

करके सभी जोड़ों का रिवीटिंग किया जाता है। इस गर्डर पर गर्डर के कंपोनेंटों को ढोने के लिए अस्थाई रेलपथ बिछाने के बाद गर्डर के टॉप कार्ड के ऊपर क्रेन हेतु रेल पथ बिछाया जाता है। इस रेलपथ का गेज 5.2 मी. होता है। इसके बाद टाप कार्ड के ऊपर क्रेन का इरेक्शन किया जाता है। यह क्रेन अलग-अलग पुर्जों में ऊपर चढ़ाया जाता है एवं इरेक्शन के उपरांत इसे यू-6 जोड़ (61.0 मी. के लिए) के पीछे गर्डर के साथ अच्छी तरह से क्लैंप कर दिया जाता है। इसके बाद क्रेन की मदद से दोनों अस्थाई वर्टीकल एवं लिंक का इरेक्शन किया जाता है। इस गर्डर के किनारे बफर ब्लाक लगाकर नए गर्डर के एल-0 जोड़ के बेयरिंग को रख दिया जाता है।

पुल के एप्रोच पर एसेंबली यार्ड में मेन मेंबरों के साथ गसेट प्लेटों को बाँध दिया जाता है, एल-0 जोड़ के एंड डायाफ्राम एवं बाटम गसेट को भी बाँध दिया जाता है। पुल के पहले स्पान के ऊपर प्रतिभार (काउंटर वजन) रखा जाता है यह वजन 61.0 मी. गर्डर के लिए कम से कम 65 टन होना चाहिए। इसके लिए रेलों का उपयोग किया जाता है, जिसे गर्डर पर बिछाए गए रेल पथ के दोनों किनारे क्रास गर्डर के ऊपर रखा जाता है।

**गर्डर लांचिंग पद्धति**

**फेस-1**

क्रेन को एक पैनल आगे ले जाकर अस्थाई वर्टीकल के साथ हैंगिंग डिवाइस लगाया जाता है। डिपलारी द्वारा गर्डर के मेंबरों को एसेंबली यार्ड से इरेक्शन स्थल पर ले जाया जाता है। अब एक-एक करके गर्डर के प्रथम दोनों बाटम कार्ड को क्रेन से उठा कर हैंगिंग डिवाइस के सहारे लटकाया जाता है उसके बाद एल-0 जोड़ के क्रास गर्डर को लगाया जाता है। इसके बाद गर्डर के पहले दोनों वर्टीकल एवं एंड रेकरों का इरेक्शन किया जाता है। अब लिंक के साथ लिंक पिन एवं लिंक प्लेट को लगाया जाता है। साथ ही साथ लिंक प्लेट के सभी टर्न बोल्टों को कस दिया जाता है। इसके बाद एल-1 जोड़ पर क्रास गर्डर तथा पहले पैनल के दोनों स्ट्रिंजर एवं बाटम लेटरल ब्रेसिंग का एरेक्शन किया जाता है। तत्पश्चात पोर्टल का भी एरेक्शन करते हैं।

**फेस-2**

क्रेन को अब एक और पैनल आगे ले जाकर क्लैंप करते हैं तथा हैंगिंग डिवाइस को खोल कर वर्टीकल के साथ यू-1 जोड़ पर बाँधते हैं। अब अगले पैनल अर्थात एल-1 एल-2 के बाटम कार्ड, बाटम लेटरल, डायगोनल तथा दोनों टाप कार्ड का इरेक्शन करते हैं। इसके बाद टाप लेटरल एवं स्वे ब्रेसिंग लगाकर एल-2 जोड़ के क्रास गर्डर तथा एल-1 एल-2 पैनल के स्ट्रिंजरों का इरेक्शन करते हैं।

**फेस-3**

क्रेन के रेलपथ को आगे बढ़ाते हुए क्रेन को यू-1 जोड़ के पास ले जाकर क्लैंप कर देते हैं। अब फेस-2 में बताए गए पद्धति के अनुसार अगले पैनल के सभी मेंबरों का इरेक्शन किया जाता है एवं अंत में एल-3 जोड़ के क्रास गर्डर तथा एल-2 एल-3 पैनल के स्ट्रिंजरों का इरेक्शन करते हैं। गर्डर के जोड़ों को भलीभाँति बोल्ट एवं ड्रिट से कसते रहते हैं।

**फेस-4**

इसीप्रकार फेस-2 में बताए गए विधि से गर्डर के सातवें पैनल तक का इरेक्शन किया जाता है। सातवें पैनल के स्ट्रिंजरों एवं एल-7 जोड़ के क्रास गर्डर का इरेक्शन नहीं किया जाता है। क्रेन को यू-6 जोड़ के पास क्लैंप कर दिया जाता है।

**फेस-5**

अब एल-7 एल-8 के दोनों बाटम कार्डों का इरेक्शन करते हैं जिससे कि बाटम कार्ड का एल-8 सिरा पाये पर टिक जाए। इसके बाद दोनों एंड रेकरों का इरेक्शन करते हुए एल-8 जोड़ पर पक्का सहारा दिया जाता है। गर्डर के जोड़ों को भलीभाँति बोल्ट एवं ड्रिट से कसते रहते हैं।

**फेस-6**

पहले एल-8 पर क्रास गर्डर लगाकर फिर एल-7 पर लगाया जाता है इसके बाद दोनों पैनल के स्ट्रिंजरों का इरेक्शन करते हैं। अब सातवें एवं आठवें पैनल के शेष मेंबरों अर्थात पोर्टल, स्वे, टाप लेटरल, बाटम लेटरल का इरेक्शन किया जाता है।

**फेस-7**

अंत में गर्डर के स्ट्रिंजर ब्रेसिंग तथा क्रास फ्रेम का इरेक्शन करते हैं एवं क्रेन को वापस यू-2 जोड़ पर लाकर क्रेन के सहारे लिंक को खोल दिया जाता है।

इसप्रकार कैंटीलीवर विधि से गर्डर लांचिंग का कार्य पूरा होता है। गर्डर के जोड़ों का रिवीटिंग का कार्य

लांचिंग कार्य के साथ ही किया जाता है। पूरे गर्डर का इरेक्शन होने के उपरांत सभी जोड़ों के शेष बचे रिवेट का रिवीटिंग किया जाता है। अब अगले गर्डर के लिए इस गर्डर को प्रतिभार (काउंटर वजन) मानते हुए उपरोक्त विधि को दोहराते हैं।

**कैंटीलीवर पद्धति से गर्डर इरेक्शन के कार्य में बरती जाने वाली सावधानियाँ**

**1.** ओपन वेब गर्डरों का कैंटीलीवर पद्धति से इरेक्शन का कार्य रेलवे प्रतिनिधि, जो कम से कम जूनियर इंजीनियर/पुल के स्तर से नीचे का न हो, की उपस्थिति में संपन्न किया जाना चाहिए।

**2.** कार्य अनुमोदित लांचिंग स्कीम के अनुसार क्रमबद्ध तरीके से किया जाए।

**3.** पुल पर कार्य करने वाले प्रत्येक कर्मकार द्वारा सेफ्टी उपकरण का उपयोग सुनिश्चित किया जाए।

**4.** सामान्यत: सूर्यास्त के बाद 61.0 मी. स्पान गर्डर का कैंटीलीवर इरेक्शन न किया जाए।

**5.** कार्य की अनुमोदित लांचिंग स्कीम कार्यस्थल पर प्रदर्शित किया जाए जिससे कि प्रत्येक कर्मकार को कैंटीलीवर पद्धति से गर्डर लांचिंग के कार्य की विधि के बारे में जानकारी हो।

**6.** ड्राई रीवर बेड पर यदि कैंटीलीवर पद्धति अपनायी जाती है तो 61.0 मी. स्पान गर्डर के पैनल 6 पर अस्थाई सपोर्ट दिया जाए।

**7.** ओपन वेब गर्डरों का कैंटीलीवर पद्धति से इरेक्शन के दौरान स्ट्रिंजर ब्रेसिंग तथा क्रास फ्रेम का इरेक्शन पूरे गर्डर के इरेक्शन के बाद किया जाना चाहिए।

**8.** 61.0 मी. गर्डरों का कैंटीलीवर पद्धति से इरेक्शन के दौरान 7 वें एवं 8 वें पैनल के स्ट्रिंजर एवं क्रास गर्डर पूरे गर्डर के लांचिंग के बाद लगाना चाहिए जिससे कि कैंटीलीवर पोर्शन का वजन कम से कम रहे।

**9.** कैंटीलीवर पद्धति से लांचिंग के दौरान कैंटीलीवर पोर्शन पर डिपलारी द्वारा गर्डर के मेंबरों को ले जाते समय यह ध्यान दिया जाए कि डिपलारी का अवपथन न हो और इसके लिए बिछाए गए अस्थाई रेलपथ का गेज एवं क्रास लेवल संतोषजनक हो।

**कैंटीलीवर पद्धति से गर्डर इरेक्शन के लाभ**

**1.** नदी में पानी अधिक होने पर भी इस विधि से गर्डर का इरेक्शन किया जा सकता है।

**2.** पुल के पायों की ऊँचाई अधिक होने पर भी कैंटीलीवर पद्धति से गर्डर इरेक्शन किया जा सकता है।

**3.** इस पद्धति में स्टेजिंग सामग्री की आवश्यकता नहीं है।

**4.** इस पद्धति में कैंबर जैक की कोई आवश्यकता नहीं है।

**5.** कैंटीलीवर विधि से लांचिंग के दौरान रिवीटिंग का कार्य लांचिंग कार्य के साथ ही किया जाता है जबकि अन्य विधि में पूरे गर्डर के इरेक्शन के बाद ही रिवीटिंग का कार्य संभव है। इससे समय की बचत होती है।

**कैंटीलीवर पद्धति से गर्डर इरेक्शन की हानि**

**1.** यह पद्धति अत्यंत संवेदनशील होने के कारण अत्यधिक सावधानी बरतना आवश्यक होता है।

**2.** कार्यस्थल पर हवा की गति अधिक होने पर इरेक्शन कार्य संभव नहीं है।

**3.** गर्डर के लांचिंग में अधिक समय लगता है।

**4.** गर्डर के कैंबर में कोई सुधार नहीं किया जा सकता है।

**5.** इस विधि के लिए प्रतिभार के रूप में अधिक मात्रा में रेलों की आवश्यकता होती है।

**6.** कैंटीलीवर विधि दिन के उजाले में ही अपनाया जाता है।

**7.** कैंटीलीवर पद्धति से गर्डर लांचिंग के कार्य में उच्च कुशल कारीगरों की आवश्यकता होती है।

**निष्कर्ष**–

कैंटीलीवर पद्धति से गर्डर लांचिंग के कार्य अत्यंत संवेदनशील होने के कारण अत्यधिक सावधानी बरतना आवश्यक है। कार्य का पर्यवेक्षण कुशल पर्यवेक्षक के द्वारा किया जाना चाहिए, कार्य को अनुमोदित लांचिंग पद्धति के अनुसार करना ही उचित है।

हमें आशा है कि इस लेख को पढ़कर पुल विभाग के कर्मचारी कुछ हद तक अवश्य लाभान्वित होंगे। v

मुख्य कारखाना प्रबंधक/पुल
पूर्वोत्तर रेलवे
गोरखपुर
**संपर्क: 9794840207**

**लोहा गरम भले ही हो जाए पर हथौड़ा तो ठंडा रहकर ही काम कर सकता है।**

◆ तकनीकी ◆

# भारतीय रेल गाड़ियों की अप एवं डाउन दिशा का निर्धारण

हीरा लाल

**भारतीय** रेलवे ने अपने हर विभाग, हर क्षेत्र तथा हर दिशा में वैज्ञानिक, तकनीकी एवं तार्किक ढंग से लगभग सब कुछ सुव्यवस्थित करने का प्रयास किया है, परंतु बदलते समय में होने वाले परिवर्तनों के कारण कुछ ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है जो भ्रामक बनी रहती है। ऐसी ही भ्रामक स्थिति थी गाड़ियों की नंबरिंग को लेकर। पिछले दिनों भारतीय रेल की मेल एक्सप्रेस तथा सुपरफास्ट गाड़ियों के नंबरों में संशोधन की आवश्यकता नामक शीर्षक पर मैंने एक लेख लिखा था। जिसका प्रकाशन 'रेल रश्मि' नामक सुप्रतिष्ठित पत्रिका के 'जून 2014 अंक-64' में किया गया था। इस लेख की बहुत लोगों ने प्रशंसा की। यहाँ मैं रेलगाड़ियों के 'अप एवं डाउन दिशा का निर्धारण' विषय पर यह लेख लिख रहा हूँ। आशा है यह विषय वस्तु भी पूर्व की तरह ही पसंद की जाएगी और संभवत: रेल सेवा में एक अति-महत्वपूर्ण योगदान साबित हो सकेगा।

यहाँ अवगत कराना आवश्यक है कि गाड़ियों के 5 अंकों के नंबरों के अंत में विषम संख्या (ODD NO.) 1, 3, 5, 7, 9 अप गाड़ियों के लिए जबकि सम संख्या (EVEN NO.) 2, 4, 6, 8, 0 डाउन गाड़ियों के द्योतक हैं।

रेलगाड़ियों के 'अप तथा डाउन' दिशा के निर्धारण हेतु कुछ पारंपरिक पद्धतियाँ निम्नप्रकार हैं-

**1.** पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण दिशा की तरफ चलने वाली गाड़ियाँ 'अप' जबकि पश्चिम से पूर्व तथा दक्षिण से उत्तर दिशा की तरफ चलने वाली गाड़ियाँ 'डाउन' होती हैं।

पूर्वोत्तर रेलवे (NER), पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (NFR) तथा उत्तर रेलवे (NR) में यही पद्धति प्रचलन में है। यथा- 15609 (गुवाहाटी से लालगढ़), 12553 (बरौनी से नई दिल्ली) पूरब से पश्चिम तथा 12511 (गोरखपुर से तिरुअनंतपुरम) उत्तर से दक्षिण दिशा की तरफ चलने वाली गाड़ियाँ हैं जो अप हैं। इनकी पेयरिंग गाड़ियाँ 15610, 12554 तथा 12512 डाउन गाड़ियाँ हैं।

**2.** मुख्यालय (संबंधित जोनल रेलवे का स्टेशन जहाँ से गाड़ियाँ ओरिजनेट होती हैं) से दूर (किसी भी दिशा में) जाने वाली गाड़ियाँ 'अप' जबकि मुख्यालय की तरफ (किसी भी दिशा से) आने वाली गाड़ियाँ 'डाउन' होती हैं।

पूर्व रेलवे (ER), दक्षिण पूर्व रेलवे (SER), दक्षिण रेलवे (SR), दक्षिण मध्य रेलवे (SCR), मध्य रेलवे (CR) तथा पश्चिम रेलवे (WR) में लगभग यही पद्धति प्रचलन में है।

उदाहरणार्थ-

**क.)** पूर्व रेलवे की 12345 (हावड़ा से गुवाहाटी) दक्षिण से उत्तर दिशा की तरफ, 12303 (हावड़ा से नई दिल्ली) पूरब से पश्चिम दिशा की तरफ, 12321 (हावड़ा से लोकमान्य तिलक) पूरब से पश्चिम-दक्षिण दिशा की तरफ तथा 12389 (गया से चेन्नई) उत्तर से दक्षिण दिशा में चलती है। ये सब गाड़ियाँ अप जबकि इनकी पेयरिंग गाड़ियाँ क्रमश: 12346, 12304, 12322, 12390 डाउन गाड़ियाँ हैं।

**ख.)** मध्य रेलवे की 11077 (पुणे से जम्मूतवी) दक्षिण से उत्तर, 12101 (लोकमान्य तिलक से हावड़ा) पश्चिम से पूरब, 11041 (मुंबई से चेन्नई) उत्तर से दक्षिण दिशा की तरफ चलने वाली गाड़ियाँ अप हैं, जबकि इनकी पेयरिंग गाड़ियाँ क्रमश: 11078, 12102, 11042 डाउन गाड़ियाँ हैं।

**ग.)** पश्चिम रेलवे की 19005 (मुंबई से ओखा) पूर्व से उत्तर-पश्चिम की तरफ, 19027 (बांद्रा से जम्मूतवी) दक्षिण से उत्तर की तरफ, 19709 (जयपुर से कामाख्या) पश्चिम से पूर्व की तरफ तथा 19301 (इंदौर से यशवंतपुर) उत्तर से दक्षिण की तरफ चलने वाली गाड़ियाँ अप हैं तथा इनकी पेयरिंग गाड़ियाँ क्रमश: 19006, 19028, 19710 एवं 19302 डाउन गाड़ियाँ हैं।

**घ.)** दक्षिण रेलवे की 16031 (चेन्नई से जम्मूतवी) तथा 16317 (कन्याकुमारी से जम्मूतवी) दोनों दक्षिण से उत्तर दिशा की तरफ चलने वाली गाड़ियाँ हैं जो अप हैं और इनकी पेयरिंग 16032 एवं 16318 डाउन गाड़ियाँ हैं।

**3.** भौगोलिक आधार पर कुछ गाड़ियों का निर्धारण अप एवं डाउन के रूप में है। हावड़ा से मुंबई वाया नागपुर

चलने वाली गाड़ियों के नंबर सम संख्या (EVEN NO.) है जबकि हावड़ा से मुंबई वाया मुगलसराय, इलाहाबाद चलने वाली गाड़ियों के नंबर विषम संख्या (ODD NO.) नंबर से वर्णित है।

जैसे- हावड़ा से मुंबई वाया नागपुर 12860, 12810, तथा 12870 आदि गाड़ियों के नंबर सम संख्या (EVEN NO.) में हैं।

**4.** ऐसा भी कहा जाता है कि गाड़ियों के अप एवं डाउन दिशा का निर्धारण नदियों के बहाव अथवा पहाड़ों की चढ़ान व ढलान के आधार पर निर्धारित है। उपर्युक्त स्थितियों के संदर्भ में मेरा मानना है कि पूरे भारतीय रेलवे के प्रत्येक जोन तथा मंडल में उपरोक्त पद्धतियों में से क्रम संख्या-2 अर्थात मुख्यालय से किसी भी दिशा में जाने वाली गाड़ियों के लिए 'अप' तथा किसी भी दिशा से मुख्यालय की तरफ आने वाली गाड़ियों के लिए 'डाउन' दिशा का निर्धारण होना सर्वथा उचित प्रतीत होता है।

यदि रेल प्रशासन उपर्युक्त सुझाव पर गंभीरता पूर्वक विचार करता है तो बहैसियत एक जिम्मेदार रेलकर्मी मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी। v

मुख्य गाड़ी नियंत्रक
सेंट्रल कंट्रोल
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
**संपर्क: 9794840945**

## राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से संबंधित में निम्न बिंदुओं पर अपेक्षित एवं प्रभावशाली चर्चा अवश्य की जाए

1. धारा 3 (3) के अंतर्गत सभी कागजात द्विभाषी जारी करना।
2. हिंदी में पत्राचार की स्थिति।
3. हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना।
4. फाइलों पर हिंदी में टिप्पणी देना।
5. हिंदी (भाषा, टंकण व आशुलिपि) का प्रशिक्षण।
6. वेबसाइट पूरी तरह से द्विभाषी बनाना और अद्यतित रखना।
7. विभागीय आई. टी. सिस्टमों में हिंदी में कार्य करने की सुविधा व इसका प्रयोग सुनिश्चित करना।
8. कोड/मैनुअल आदि पूरी तरह से द्विभाषी बनाना।
9. सभी कंप्यूटरों पर द्विभाषी सुविधा (यूनिकोड में) उपलब्ध कराना।
10. राजभाषा संबंधी निरीक्षणों की स्थिति।
11. अनुभागों को अपना पूरा काम हिंदी में करने के लिए अधिसूचित करना।
12. विभाग/कार्यालय/इकाई से संबंधित अन्य विशेष मुद्दे।

(प्राधिकार: रेलवे बोर्ड के दिनांक 11.08.14 का पत्रांक हिंदी/समिति/2014/65/2)

◆ व्यंग्य ◆

# आप्रवासी हिंदी

रण विजय सिंह

**प्रोफेसर** सुरेंद्र दुबे और प्रोफेसर अनिल राय अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर बैठे थे। प्रोफेसर अनंत मिश्र का भाषण चल रहा था। स्थान पंत पार्क था किंतु बगल में संसद भवन था। हजारों की भीड़ थी। रह-रह कर स्वदेशी के नारे लग रहे थे। आंदोलन, हिंदी विषय में हिदी प्रदेशों के शिक्षकों के लिए दस प्रतिशत आरक्षण को लेकर था। सरकार दो प्रतिशत की घोषणा कर चुकी थी। वह पाँच प्रतिशत भी देने को तैयार है किंतु उससे पूर्व आंदोलन की बिना शर्त वापसी चाहती है। आंदोलनकारी इसकी घोषणा से पहले सरकार की ओर से कोई अपील या प्रस्ताव चाहते हैं जिससे आंदोलन वापसी का उनका निर्णय सम्मानजनक लगे। वे अपनी घोषणा का प्रारूप भी तैयार कर चुके हैं पर सरकार आंदोलन की समाप्ति के सिवा किसी अन्य बात पर राजी नहीं है।

आंदोलन की वापसी के लिए उसके नेतृत्व पर आंदोलनकारियों द्वारा भी दबाव बनाया जा रहा है। प्रोफेसर दूबे एवं प्रोफेसर राय इसके सबसे प्रबल पक्षधर हैं। कारण कुछ भी हो पर भरे पेट वाले आंदोलनकारी उनके इस व्यवहार को भोजन से जोड़ रहे हैं। लोगों का क्या? वे तो कहते ही रहते हैं। दोनों काफी क्षुब्ध हैं। एकबार तो उठने भी जा रहे थे किंतु तब तक कहीं से फोन आ गया। फोन पर इससमय त्याग की आवश्यकता विषय पर एक संक्षिप्त भाषण प्रसारित हुआ। इसमें आंदोलन को सत्याग्रह बताया जा रहा था और बार-बार गाँधीजी का नाम आ रहा था। पास खड़े लोगों ने बताया कि गाँधीजी के नाम वाले वर्धा के हिंदी विश्वविद्यालय से प्रति कुलपति प्रोफेसर चितरंजन मिश्र बोल रहे हैं।

दोनों भूख हड़ताली कुछ समय और बैठे रहने पर इस भाषण के बाद राजी हो गये। आंदोलन की आसन्न वापसी की प्रतीक्षा कर रहे प्रशासन के लिए यह गहरा सदमा था। उसने आंदोलन में बाहरी तत्वों के घुसपैठ का आरोप लगाते हुए नगर के सभी प्रवेश मार्गों, रेलवे और बस स्टेशनों की चौकसी बढ़ा दी।

मैं आगे बढ़ा। इसी बीच एक व्यक्ति ने नमस्कार किया। मैंने उत्तर दे दिया। आंदोलनों में यह सब चलता है। परिचय हो या न हो दुआ-सलाम जरूरी है। थोड़ी देर बाद जब उन्होंने हाल-चाल पूछा तब पता चला कि दाढ़ी विहीन प्रोफेसर सदानंद शाही हैं। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से आये हैं। नगर में प्रवेश के लिए उन्होंने अपनी सुंदर दाढ़ी की बलि दे दी थी और वाराणसी से गोरखपुर वाया रामकोला आये थे। प्रोफेसर मिश्र के बाद उन्हें बोलना था जिसके चलते आंदोलन के उग्र हो जाने की आशंका थी। अतः समय रहते वहाँ से खिसकना ही ठीक था।

मैं विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार से अंदर चला गया। सोचा था कि दूसरे द्वार से निकलकर घर चला जाऊँगा पर वहाँ तो तिल रखने भर की जगह नहीं थी। चारों ओर से छात्र ही छात्र भरे थे। पूछने पर पता चला कि स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं में हिंदी प्रदेशों के छात्रों के लिए पाँच प्रतिशत आरक्षण की मांग को लेकर धरना चल रहा है। एक जागरूक छात्र ने बताया कि वर्तमान में यह संख्या केवल डेढ़ प्रतिशत रह गई है। सरकार कुछ भी आरक्षण देने के लिए तैयार नहीं है। दमन-चक्र तेजी से चल रहा है। सारे हथकंडे अपनाये जा रहे हैं। भारी भीड़ के चलते क्योंकि लाठी चलाना असंभव था इसलिए कल पानी की बौछार की गई थी। इस गर्मी में यह बहुत कारगर साबित हुई और आज यहाँ छात्रों की संख्या आधी हो गई। प्रशासन इस प्रयोग की सफलता से बहुत उत्साहित था उसे लग रहा था कि यदि इसे शिक्षकों वाले धरना स्थल पर आजमाया गया तो आंदोलन के वापसी की तत्काल घोषणा हो जाएगी। शिक्षकों में पानी के भय के बारे में गोपनीय सूचना स्थानीय प्रशासन को कल ही मिल गई थी। वह तो आंदोलनकारियों का भाग्य कहिये कि आज शहर में पानी नहीं है और इतिहास को देखते हुए अगले सप्ताह से पहले उसके उपलब्ध होने की कोई संभावना भी नहीं है अन्यथा अब तक मैदान खाली हो चुका होता।

छात्रों में सबसे अधिक आक्रोश कल भूख हड़ताल पर बैठे लोगों के लिए ले जाये जा रहे खाने की पुलिस अधिकारियों द्वारा जब्त कर सिपाहियों को खिला देने पर है। यह भूख हड़ताली लोगों को खाद्य सामग्री की आपूर्ति संबंधी स्थापित परंपरा का खुला उल्लंघन था। शिक्षकों के मामले में ऐसी कोई कार्रवाई नहीं हुई। छात्र इस भेद-भाव से ही उत्तेजित हैं।

राम-राम करते किसीतरह घर पहुँचा। कपड़े बदले बिना ही टीवी के सारे समाचार चैनल खंगालने लगा। सभी पर एक ही खबर थी। आंदोलन देशव्यापी था। हिंदी प्रदेशों के विपरीत अन्य क्षेत्रों में यह प्रति आंदोलन चल रहा था। तमिलनाडु, केरल, कश्मीर, मिजोरम, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा और असम में उसके उग्र हो जाने के कारण कर्फ्यू जैसी स्थिति हो गई थी। रेल और सड़क परिवहन सहित सभी आवश्यक सुविधाएँ और सेवाएँ बंद थीं। इन राज्यों में हिंदी पढ़ने-पढ़ाने वालों का घनत्व सबसे अधिक था। चेन्नै, मदुरै, तिरुअनंतपुरम् और गुवाहाटी में देखते ही गोली मारने के आदेश दिए गए थे। यहाँ हिंदी पढ़ने-पढ़ाने वालों की संख्या इतनी अधिक थी कि यदि भीड़ में सौ पत्थर उछाले जाएँ तो कम-से-कम निन्यानबे इन्हीं पर गिरेंगे।

पूरे देश में स्थिति बेकाबू थी पर सरकार अभी तक इसके पूर्ण किंतु नियंत्रण में होने की बात कर रही थी। वह जानती थी कि यह मुहावरा है और इसे बदला नहीं जा सकता है। वैसे दोनों पक्षों को पाँच प्रतिशत पर मनाने की कोशिश चल रही थी। वे इस पर सहमत भी थे किंतु प्रति आंदोलनकारी इसमें अपने क्षेत्र के 2014 से पहले हिंदी जानने वालों की भी भागीदारी चाहते थे। यह संख्या वहाँ की कुल आबादी का पचास प्रतिशत यानी अच्छी खासी थी। सरकार को आशा थी कि शीघ्र ही वे इस जिद को भी छोड़ने के लिए तैयार हो जायेंगे।

एक न्यूज चैनल पर अविजित जी का विश्लेषण चल रहा था। वे समस्या के इतिहास पर प्रकाश डाल रहे थे-एक समय समुद्री जहाजों में माल लादने वाले किसी खाली कंटेनर में बैठकर हिंदी ब्रिटेन पहुँच गई। वहाँ पहुँचते-पहुँचते यद्यपि उसकी स्थिति काफी खराब हो गई थी किंतु निरंतर इसीप्रकार की परिस्थितियों में रहने के अभ्यास के कारण वह जीवित बच गई थी। यहाँ उसने लक्ष्मीनारायण मित्तल, हिंदुजा बंधुओं और लार्ड स्वराज पाल जैसा विकास तो नहीं किया फिर भी 'फारेन रिटर्न' जैसे तमगे के काबिल तो हो ही गई। संयुक्त राज्य और योरप के देशों में भी वह किसी-न-किसी तरकीब से पहुँची जिससे तमगे को और अधिक मान्यता मिल गई।

इस बीच एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में उसे 'फारेन रिटर्न' की जगह 'आप्रवासी' माना जाने लगा। यह विदेशी सरकारों की दया और उन देशों में हिंदी वालों की अधिक संख्या के कारण हुआ था। इसी बीच 2014 में हिंदी स्वदेश लौटी। आप्रवासी यानी एन.आर.आई. स्टेटस के साथ। उसके स्वागत के लिए पूरे देश में होड़ मच गई। तमिलनाडु में लोगों ने कुछ ही वर्षों में हिंदी में दक्षता प्राप्त कर ली। शोध कर लिया और वे विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाने लगे। यही हाल तब तक हिंदी विरोध करने वाले अन्य प्रदेशों में भी रहा। नतीजा यह हुआ कि दस वर्षों बाद आज पूर्ववर्ती हिंदी प्रदेशों के लोगों की भागीदारी हिंदी पढ़ने और पढ़ाने वालों की संख्या के हिसाब से नगण्य सी हो गई है। अध्यापकों में चार प्रतिशत तथा छात्रों में डेढ़। दस वर्षों में भारत का भाषाई भूगोल पूरी तरह से बदल गया है। आंदोलन और प्रति आंदोलन इसी तीव्र परिवर्तन की स्वाभाविक उपज है।

प्यास लग गई थी। नींद खुल गई। रात के तीन बज रहे थे। सपने के बारे में सोचने का समय नहीं था। पानी पिया और सो गया। मुफ्त जमीन, कच्चा माल, बिजली और परिवहन सुविधा। दस वर्षों तक व्यावसायिक और अन्य सभी प्रकार के करों की माफी। श्रम कानूनों से पूरी छूट- इन शर्तों पर तमिलनाडु, केरल और बंगाल से दस-दस हजार डालर तथा गोवा एवं असम में पाँच-पाँच हजार डालर के एन.आर.आई. यानी आप्रवासी अथवा विदेशी निवेश की खबर न्यूज चैनलों पर आ रही है। प्रदेशों के मुख्यमंत्री विश्वविजेता की मुस्कान के साथ लोगों की बधाई स्वीकार कर रहे हैं।

मैं परेशान हूँ। इतनी छूट के बाद केवल दस-पाँच हजार डालर का निवेश और उस पर यह प्रसन्नता? इसमें बधाई की क्या बात है? अविजित जी मेरी शंका का समाधान करते हैं- विदेशी निवेश गंगाजल है। एक बूँद पूरी टंकी को पवित्र कर सकता है। अभी हिंदी वाया विदेश आ जाए तो देखो मजा। लोग खुद-ब-खुद राष्ट्रभाषा बना देंगे आप्रवासी हिंदी को केवल राजभाषा की तो बात ही छोड़िए।

चाय आ गई थी। मैं जग गया। सुबह हो चुकी थी। पंडित जी बाहर पहले से बैठे चाय पी रहे थे। मैंने उनसे दोनों सपनों के बारे में पूछा।

-यजमान! सुबह का सपना सच होता है शेष तो सिर्फ सपने रह जाते हैं- उन्होंने कहा।

सपनों के क्रम परिवर्तन का उपाय पंडित जी के भी पास नहीं है अन्यथा बहुत इच्छा थी कि अदला-बदली हो जाए। v

भूतपूर्व मुख्य परिचालन प्रबंधक
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

◆ समीक्षा ◆

# काव्य संग्रह 'अग्निध्वजा' के तेवर

**बी.आर.विप्लवी**

**वरिष्ठ** कवि युवराज सोनटक्के के काव्य संग्रह 'अग्निध्वजा' की कविताएँ कई मायने में लीक से हटकर नई परंपराओं का निर्माण करती हैं। इन कविताओं की भावभूमि एवं इसके तीखे प्रहार की पृष्ठभूमि समझे बिना इन रचनाओं का कथ्य और तथ्य पकड़ पाना क़तई मुमकिन नहीं होगा। परंपरागत साहित्य और ख़ासतौर पर हिंदी काव्य साहित्य की मिथकों, गल्पों, स्तुतिगानों, प्रशस्तियों और विलासिता की शृंगारिक प्रतिध्वनियों ने परिवर्तनकारी साहित्य के कानों में शीशा पिघलाकर ठूँस रखा है तथा क्रांतिकारी दिमाग़ों में किसी परिवर्तनकारी विचार के प्रवेश पर निषेधाज्ञा लगाए हुए दिखाई देता है। ऐसे साहित्य के लेखन और पठन-पाठन के नाम पर बनावटी और रुढ़िग्रस्त सांस्कृतिक वर्चस्ववाद ने मौलिक संस्कृति के हर हथियार को कुंद कर रखा है। ऐसे सांस्कृतिक शून्यता के माहौल में सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक विपथित-अस्मिता की स्वतंत्र पुनर्स्थापना की कठिनाई का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। इस कठिनाई और नैराश्यजनक धुंध को फाड़कर मानवीय अस्मिता और जैविक संतुलन की सोच और परंपरा के प्रवक्ता बने नायकों ने उर्ध्वगामी विचारों की अस्वीकृतियों के बावजूद इसे स्थापित किया। इसप्रकार का ग़ैर-पारंपरिक और लीक से हटकर चलने का जज़्बा और माद्दा पैदा करने वालों ने पूरी दुनिया में शोषित-पीड़ित मेहनतकश वर्ग की हिमायत में खड़े होकर परिवर्तन का शंखनाद किया। 18वीं शताब्दी के बाद का समय ऐसी ही संक्रमणकालीन विसंगतियों के हवाले था। मार्क्स, लेनिन, मार्टिन लूथरकिंग, ज्योतिबा फूले जैसे महानायकों ने इस मुहिम में अग्रणी भूमिका निभाई। माओत्से और स्टालिन तक आते-आते दमनकारी प्रवृत्तियों के ख़िलाफ दुनिया के शोषित मज़दूर एकमुश्त लामबंद होने लगे। परिणामस्वरुप तानाशाही सत्ता या तो नेस्तनाबूद कर दी गई या दुबककर किसी निभृत कोने में छुप गई। हिटलर, मुसोलिनी और नेपोलियन के साम्राज्यवादी विस्तार और तानाशाही प्रवृत्ति ने इस आंदोलन की आधारभूमि को और अधिक जुझारू, पुख़्ता और निर्णायक बनाने में सर्वहारा वर्ग को लामबंद होने तथा इकट्ठे होकर सामना करने का मौक़ा दिया।

यह सब होते हुए भी भारतीय सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक पृष्ठभूमि में ऐसे मज़दूरों के वर्ग-केंद्रित आंदोलन ने नाम मात्र की सफलता भी नहीं पायी। भारतीय समाज की अति रहस्यमयी, जटिल, जातीय-अवधारणा ने वर्गीय अवधारणा को कभी पनपने और समृद्ध नहीं होने दिया। यही कारण है कि भारतीय जाति व्यवस्था का शोषणतंत्र तथाकथित बोर्जुआ शोषणतंत्र से अधिक अभेद्य तथा अविजेय बना रहा है। यहाँ की जातीय व्यवस्था की महीन बुनावट ने सामाजिक जीवन की इकाई के रूप में मनुष्य की जातीय अस्मिता को सर्वोपरि रखा है। इस व्यवस्था से विद्रोह और नयी व्यवस्था की अवधारणा ने भारतीय सांस्कृतिक भूभाग पर अपनी तरह का अनोखा और परिस्थिति के माकूल नया संघर्ष छेड़ने का आवाहन करता है। इस मानसिक गुलामी और सांस्कृतिक अतिक्रमण से नजात दिलाने के लिए उत्तर वैदिक काल से विरोध, विद्रोह और संघर्ष की एक लंबी परंपरा है जहाँ राजा बली, हिरण्यकश्यप, शंबूक, बालि तथा रावण जैसे मिथकीय और सांकेतिक प्रतिनिधियों के ओजस्वी विद्रोह के स्वर स्पष्ट सुनाई देते हैं। इसी क्रम में श्रमण परंपरा के जैन एवं बौद्ध दार्शनिकों और समाज विज्ञानियों ने सामाजिक भेदभाव पर आधारित आर्थिक ग़ैर-बराबरी को चिह्नित कर खुली चुनौती भी दी जो आगे चलकर पेरियार, जी. रामास्वामी नायकर अयंकली, नारायणगुरु, कबीर, नानक, दादू, रैदासी निर्वाण संप्रदाय तथा बाउल संप्रदाय के अनेक मुक्तिदाताओं ने इसके लिए काम किया। 19वीं सदी और उसके बाद ज्योतिबा फूले, स्वामी अछूतानंद तथा डा. अंबेडकर जैसे समाज उन्नायकों ने विघटनकारी उपादानों को जड़ समेत उखाड़कर एक सुदृढ़ भारतीय समाज की स्थापना का बिगुल बजाया। इसी परंपरा में आज का ग़ैर-परंपरावादी, ग़ैर-ईश्वरवादी और समतामूलक साहित्य दलित-शोषित साहित्य की पहचान बनकर विस्थापित जीवन-मूल्यों को सहेजने-समेटने के लिए प्रयासरत एवं गतिमान दिखाई देता है।

जन्मना मराठी होते हुए भी कवि युवराज सोनटक्के ने हिंदी भाषा को अपनी प्रखर अभिव्यक्ति के लिए अपनी शर्तों पर साधा है। यह उनकी बड़ी कामयाबी है।

वैसे भी मराठी भाषा-भाषियों ने दलित-साहित्य को निरंतर साधते हुए इसकी धार को अधिक तेज, अधिक आक्रामक फलतः अधिक मुक्तिदायी बनाने में अगुआई की है। इसी क्रम में हिंदी में दलित-साहित्य का भी मुखर अभ्युदय हुआ। हिंदी भाषा की अधिसंख्य जनता में दूरगामी पैठ के कारण ही दलित-साहित्य ने इसमें न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज़ कराई है बल्कि एक बड़े भाषेतर चिंतक-समूह को भी अपने साथ जोड़ने में कामयाबी पाई है। तथाकथित मुख्य धारा के बरअक्स ही जन-चिंतन के बहाव की महाधारा बनकर यह साहित्य सही अर्थों में जनता का हितैषी बनने के क्रम में है।

इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए सुप्रसिद्ध कवि, चिंतक एवं पेशे से वैज्ञानिक अन्वेषक डा. युवराज सोनटक्के ने अपने भुक्तभोगी अनुभवों के संस्पर्श से कविता को नया कलेवर दिया है। इनकी रचनाओं में 'अग्निध्वजा' काव्य-संग्रह ने उत्पीड़न की हर मुमकिन तरक़ीबों को बेनक़ाब करते हुए उनका सशक्त प्रतिरोध प्रस्तुत किया है। ये कविताएँ थकी-हारी मानवता में एक नये किस्म का अदम्य ऊर्जांतरण करती हैं।

आलोच्य काव्य-संग्रह में कुल चालीस कविताएँ संकलित हैं। अधिसंख्य कविताओं में दमन और शोषण का कड़ा प्रतिरोध दर्ज किया गया है। कवि ने आप-बीती को भावनात्मक ऊर्जा देकर हर चेतनाशील व्यक्ति में संवेदना को झकझोर देने की क्षमता भर दी है। मसलन 'माँ' जैसी नितांत व्यक्तिगत कविता में व्यक्त आक्रोश माँ को उपालंभ देते हुए पूरे शोषण-तंत्र पर परोक्ष लांछन भेजने का अनूठा संयोग है -

तू 'इंसान' पैदा नहीं कर सकती/ तो 'समाज' कैसे बनाओगी? / जिस दूध में सहृदयता नहीं / वहाँ सुगमता क्या होगी? /परंपरा से / विषमता के प्रखर उग्र अंगारों पर /हमें फेंकने से पहले / समता स्थापित करने के लिए / तू बाँझ ही रही होती / तो कृतज्ञता से मान लिए होते माँ/ जन्म से पूर्व तेरे उपकार, अपरंपार।

तिरस्कार, दमन और अपमान की अतिशयता एवं नहीं रुकनेवाली रूढ़िग्रस्त सर-चढ़ी परंपरा से दूर हटने की आकुलता की नैराश्य में परिणति के कारण स्वयं के जन्म को ही कोसता कवि माँ को भी अपनी त्रासदी के लिए ज़िम्मेदार बताकर उसे इंसान नहीं पैदा कर सकने का ताना देता है। सामाजिक विषमता के हवाले सौंपनेवाली 'माँओं' को समता स्थापित करने हेतु बाँझ ही रहने की वांछा निश्चित ही क्रांति के अग्निगर्भा होने की ही कामना है। इसप्रकार की संवेदनशीलता में उत्तेजक संघर्ष की ललकार के साथ-साथ भविष्य की चिंताओं से अवगत कराने की पहल भी है तथा उसके विरूद्ध मोर्चा खोलने का आवाहन भी। 'माँ की कोख में ही माँ की अँतड़ियों के फंदे पर झूल-मरने' की भावना अपनी अमर्यादा को सिरे से ख़ारिज करने की ही अभिव्यक्ति है। अपमान के दंश की पीड़ा को इससे अधिक प्रभावकारी बना पाना शायद शब्दों के बूते का न हो। ऐसी स्वानुभूत पीड़ा का कर्कश-कोलाहल सिर्फ तमाशबीन होने से ही उसकी मारक पीड़ा के अंतरतम एहसास तक नहीं पहुँचा सकता।

ज़ाहिर है कि जनवादी दृष्टि में सही इंसान पैदा नहीं कर सकने के कारण इंसानियत और समाज की विकृति अवश्यंभावी है। विषमता की अग्नि-शिखा में जलने, झुलसने की पीड़ा के लिए कवि ने अपने जन्म की जिम्मेदारी से जोड़कर माँ को बाँझ ही रहने का उलाहना देता है। इस कविता में भोगे हुए दमन-तिरस्कार की पराकाष्ठा और गहन संवेदना में जीवन के प्रति जो नकारात्मक भाव पैदा होता दिखाई देता है, वह सम्मान से साँस न ले पाने की मजबूरी का उत्पाद है। इसप्रकार प्रचलित परंपराओं के जीवन-आनंद के बरक्स ग़ैर मानवीय अस्मिता को विस्थापित करने की पुरज़ोर कशिश मौजूद है। चारों ओर से बंद दरवाज़ों की चौखटों से टकराने की छटपटाहट और आक्रोश ने ही शायद ऐसी भावना उकेरने को मजबूर किया है कि कोई बेटा अपनी माँ को भी अपने जन्म देने के लिए कोसता है। ऐसी कसक ही दलित-साहित्य को नायाब और विश्व-साहित्य बनाने की योग्यता प्रदान करती है।

इसी प्रकार माँ के ऊपर लिखी एक अन्य कविता में भी माँ की विषम परिस्थितियों में साँस लेती जिजीविषा की अनूठी अभिव्यक्ति है। यथा-

जिस तरह ध्वस्त करती है गर्मी धरती को / उसी तरह विषमता के अंगारों ने उद्ध्वस्त किया तुझको/
सूर्य से भी अधिक जलता हुआ तेरा मन / मेरे रक्त में प्रज्वलित दाह को सही राह देने का प्रयास करता रहा

इस कविता में माँ के सहज और सकारात्मक अवदान को ज्ञापित किया गया है। विषमता के अंगारों से छीजती-माँ की ऊर्जा को समूल नष्ट होने से बचाती उसके मन की प्रखर सूर्य-प्रभा जो कवि के रक्त-कणों की तपिश को एक सुगम और प्रगतिशील राह देने का प्रयास करती रही है। उसी का प्रतिफल है कि इतनी विद्रूप और अंतहीन अवहेलना को पूरी शक्ति से नकारने की क्षमता पोषित होती है।

यहाँ माँ की असहाय किंतु सतत प्रयासरत आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति है जिसकी बदौलत कवि के असीम उपकारों का ज्ञापन है। असहाय किंतु अदम्य साहसिक मनोवृत्ति की अभिव्यक्ति कुछ इस प्रकार है-

तू ज़ख़्मों को बटोर कर एकत्रित करती रही / उन में ऊर्जा, प्यार व दुलार भरकर उन्हें सहलाती रही/
फिर भी तुझे सोख लिया गया समंदर जैसा / तू मौन रही असहाय, कुछ भी न कहती रही/
तेरे बंद होंठों के बोलों को / मैं सुनने का प्रयास करता रहा माँ!/ माँ! तू देखती रही असमता के उस विस्तीर्ण समंदर को / जिसमें मैं डूबा जा रहा था/ और तेरे प्यार का सफेद झाग /अत्याचार के कालेपन को मिटाने की कोशिश कर रहा था

जख़्मों को सहेज कर, प्यार एवं दुलार से सहलाकर, उसमें रचनात्मक ऊर्जा भरने का प्रतीक, विध्वंस पर निर्माण की प्रक्रिया का ही शंखनाद है। जातीय विद्वेष की असह्य पीड़ा को दबाकर माँ के काँपते होंठों की इबारत पढ़ने की कोशिश करता कवि देखता है कि असमानता के सागर में डूबती अपनी संततियों को अत्याचार की काली रेखाओं से बचाने की कोशिश करती हैं, माँएँ, अपने प्यार के सफ़ेद ज्ञान झाग से। यह प्रयास अदभ्य शक्ति और निरंतर बढ़ते रहने का कठोर संकल्प है जिससे काली रेखाओं की स्याही धुलकर बह जाएगी।

'पिता जी' कविता में कवि पिता की अतृप्त मनोकामनाओं पर श्रद्धा के सुमन अर्पित करते हुए कहता है-

प्यासी ऋतु-आयेंगी आपकी क़ब्र पर / तब खुला रखूँगा मैं अखंड आँसुओं का महासागर।

प्यासी ऋतुओं को आँसुओं के महासागर से सींचने का बिंब अनूठा और बेमिसाल है। कम शब्दों में पूरी यातना का छविगृह आँखों में समा जाता है।

'गूँगी हँसती' कविता में कवि ने पाखंड और झूठी आध्यात्मिक जुगलबंदी पर करारी चोट की-

मृत गर्भ संस्कृति के गर्भ धारण हेतु /
पुनीत नैपुण्य के नग्न फलक सिर पर सजाकर/
पाजी पंडिताचार्यों की आध्यात्मिक कसरत /
झुकाव भरी ज़िंदगी को रौंदती चली गयी

विषमता की अभिव्यक्ति करते हुए कवि ने जीवन को 'पिरोयी हुई घुमावदार रस्सी से खूँटे पर टाँग रखने' की सटीक उपमा गढ़ी है। कदाचित घुमावदार रस्सी ने समाज की धोखेबाजी भरी रहस्यमय-वृत्तियों की ओर इशारा है। इसी कविता में कवि ने आशा की किरण भी फूटते देखा है जिससे जीवन की हार को जीत में बदलने का जज़्बा है।

विषमता के जुल्म की चक्की में /
संदलित किया गया दलितों का जीवन/
उन्होंने पिरोई हुई घुमावदार रस्सी से /
खूँटे पर टाँग कर रखा /
तब से -मेरे लहू से भींगे हुए उग्र घाव /
आपस में क्रांति की भाषा बोलने लगे

लहू से भींगे उग्र-घावों द्वारा आपस में क्रांति की भाषा बोलने की अन्योक्ति वंचित जन की समेकित और संगठित लड़ाई का संकेत भी है। ध्यान देने योग्य है कि-

और यहाँ आकर जलती हुई संध्या /
निर्जीव होकर लुढ़केगी तब /
प्रात:काल के उजाले के टुकड़ों को सिलाने हेतु/
निर्दयता से घाव में टाँके लगाने होंगे।

यहाँ कवि जलती हुई संध्या के लुढ़कने को काली रात के ख़त्म होने और सुप्रभात होने की उम्मीद बता रहा है किंतु जलती संध्या के प्रभाव में जन्मे प्रात:कालीन उजाले की उष्मा को सिराने के लिए अपने संघर्ष-जनित घावों में निर्दयतापूर्वक टाँके लगाने होंगे ताकि इस उषा का अभिसार किया जा सके।

'समाधि पर' नामक कविता में कवि ने उन शहीदों का ज़िक्र किया है जो क़ब्र से हाथ उठाये रोशनी के टुकड़ों को खींचने की कोशिश में हैं। ये वो शहीद हैं जिनका कोई नामोनिशान नहीं है और जो घृणा, उपेक्षा और दमन की आग में ज़िंदा झोंक दिए गए हैं। कवि की अभिव्यक्ति दृष्टव्य है-

मूक शरीर पर सजे उत्सव को उपभोगते हुए /

गहरी आँखों से उबलती तुम्हारी वासना टपकती है/
शरीर बनता है, इच्छाओं का श्मशान /
और पगडंडियाँ भागने लगती हैं तिरछे मोड़ से /
तब फूँक मारते ही रफू चक्कर होते हैं ओछे
तत्त्वज्ञान राजकीय तमाशबीन मसलते हैं मानवीय
मूल्यों को/
मज़दूरों की मेहनत के चिथड़े फटते हैं लावारिस/
परिश्रम का पसीना बहता है लबालब दोनों छोरों से/
आशाओं का किनारा जोड़ने के लिए/
और सूर्य-यात्रा खंडित होती है पल भर /
पैरों के तलवे चाटते-चाटते अंधेरा भी उठाता है सिर/
फिर गुम हो जाती है 'इंकिलाब ज़िंदाबाद' की आवाज़ /
तब थरथराती समाधि पर उन शहीदों की संजोता
हूँ मैं ग़रीबों के आँसू /
शोषकों के शव धोने हेतु।

शोषण की संस्कृति, उपभोक्ता वासनाओं की थोथी और वंचक दलीलें और तथाकथित तत्त्वज्ञान को तर्क और विज्ञान-वाद के सामने रफू-चक्कर होते देखना इस त्रासदी की इतिश्री नहीं बल्कि उसमें एक क्षणिक सामयिक पैंतरेबाजी का ठहराव भर है। ऐसे में तलवा-चाट संस्कृति द्वारा इंकिलाब को फ़रेब खिलाने और मज़दूरों के मेहनत के फटते चीथड़ों में आशाओं का किनारा जोड़ने की असफल कोशिश मात्र शेष रह जाती है। तो भी कवि अपनी क्रांति-दर्शी आँखों से टपकते ग़रीबी के आँसू सँजोता है, शोषकों के शव धोने हेतु। शोषकों के शव धोने का प्रतिमान शोषित की लाचारी की हद से उपजे आक्रामक तेवर का निरूपण है। यह अपने आप में अद्वितीय एवं बेजोड़ बिंब है जिसमें शताब्दियों की पीड़ा भरे घावों से विस्फोटक ज्वाला फूट पड़ने का संकेत है।

इस कविता में सबसे महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि इंकिलाब को नया अर्थ देते हुए कवि ग़रीबों के आँसू से शोषकों का शव धोने का आवाहन करता है (जो निरुपाय रुदन को परिवर्तनकारी संकल्प में बदलने की उद्घोषणा है।)

'अग्नि शूल' कविता में दुर्भेद्य शोषक प्राचीरों को तोड़ने का आह्वान ही नहीं बल्कि एक दृढ़ संकल्प में अभिव्यक्ति की सुंदरता और रूढ़ि के जैवीकरण का अद्भुत समन्वय है। रूढ़िवादी कोख से आडंबर को निकालने वाले हाथों का इंतज़ार शोषण और रूढ़ि-मुक्ति की भावी युद्ध-भूमि में शास्त्रास्त्रों की तैयारी की घोषणा है। यह कवि के दलित-जीवन की यंत्रणाओं का प्रतिशोध और निवारक भाषान्वेषण है।

न हो तुम भयभीत- / सभी अपरिहार्य ज़ख़्मों से कर लो सिंगार/
मैं भी करूंगा / रूढ़ि का गर्भाशय खोलने वाले हाथों का दीदार।

'बेबसी' कविता में तिरस्कार और अपमान सहने की बेबसी से उद्भूत आक्रोश संघर्ष की चुनौती देता हुआ लगता है। शोषण के जघन्य उपकरणों द्वारा अध्यारोपित हतोत्साह, आतंक, भय और अपमान द्वारा मन के जंग लगे दरवाज़ों के विखंडन की निनाद सुनते हुए दिल के किनारे विह्वल हो उठते हैं तो आक्रोश की मशालें हृदय को दहकाती हैं।

तब जंग लगे मन के जीर्ण दरवाज़े का निनाद सुनकर/
विह्वल होते हैं दिल के किनारे जलती मशालें
हृदय को दहकाती हैं /
और फिर बेबस होकर-/
विषैली ज्वालाओं का दाहक पक्षी बनकर /
मैं उनके ध्यानस्थ रक्त को तराशता रहता हूँ।

इस त्रासदी से आक्रांत और बेवश होकर विषैली ज्वालाओं का दाहक पक्षी बनकर शोषक के रक्त को तराशना पड़ता है। यह कवि का पेशा या शौक नहीं। यह बेबसी से उदभूत अनिवार्य आवश्यकता है। जिसमें अन्याय के विरूद्ध आक्रामकता के साथ उठ खड़े होने का संदेश है।

'आखिरी सलाम' कविता में कवि बिना 'सिंदूर की मांग लेकर ज़िंदा रहना मेरे वश की बात नहीं है इसलिए विध्वंस की राख लगा माथे पर' कहकर पीड़ित और दमित नारी मन की अवहेलनाओं को समूल नकारते हुए इससे संघर्ष की चुनौती भेजता है।

न यह वक़्त है ख़ून का रंग कुरेदने का /
बिना सिंदूर की मांग लेकर ज़िंदा रहना/
तेरे बस की बात नहीं /
इसलिए विध्वंस की राख लगा माथे पर/
उजाले के उस प्रबंधक की क़सम - /
हर एक मुर्दे की कलाई पर क्रांति की रिबन बाँधकर/
परिधान कर अग्निज्वाला का उत्प्रेरक शृंगार

अग्नि-ज्वाला का उत्प्रेरक शृंगार मुर्दा क़ौमों की कलाई पर क्रांति की रिबन बाँधने का आवाहन करता है। उजाले के प्रबंधकों की अन्यायपूर्ण संवेदनहीनता को एक ही शब्द क़सम से आर-पार की लड़ाई लड़ने का दुंदुभि-नाद है।

'निसर्ग' कविता में कवि ने अपनी असहमतियाँ इसप्रकार व्यक्त की है-

हमारे हृदयों के चिथड़े फाड़कर कठपुतलियाँ बनाईं/
उनके रंजन के लिए/
झुग्गियों के दीपक बुझा कर अंधेरा फैलाया/
उनकी इच्छा पूर्ति के लिए/
गाँव के बाहर स्थित शापित घरों को नज़रअंदाज कर/
विषैली हँसी के साथ ख़ुशी मनाता रहा/
और उमड़ उठने वाले उजाले को यहाँ/
पग भर भी जगह नहीं दी।

यहाँ पर कवि ने बहिष्कृत समाज के दैन्य और मजबूरी का फ़ायदा उठाकर उनकी अस्मत-दौलत पर अन्यायपूर्ण क़ाबिज होने की सदियों पुरानी परंपरा को इस समाज के प्रकाश-हरण के लिए ज़िम्मेदार ठहराया है। शापित घरों की व्यंजना से दलित-वंचित-शोषित समाज की दशा की ओर इशारा है, जिसे नियति का विधान मानकर लगातार उपेक्षा के लिए बहाना बनाया गया है। 'तलाक' कविता में कवि ने सभ्य और पालतू बताते हुए स्त्री की विध्वंसक और दो टूक स्वतंत्र सोच को आगे रखा है-

तुझे सभ्य व पालतू बनाने के मेरे प्रयास से भी/
तेरा बाँझ हृदय कभी पसीजा नहीं/
परंतु पसीने से सींची हुई फ़सल को नष्ट कर /
धरती के आभूषण, अलंकार व उमड़ उठी/
नवनवेली की संपत्ति लूट कर बिना बताये तू
चली गई अगर आना है तो उर में चरित्र की
मुहर सजाकर,/
मेरी चाहत का दिल लेकर आ/
अन्यथा इसके पश्चात तेरा मुझ पर कुछ भी हक़
नहीं रहेगा /
और अन्यथा इसे तलाक़ ही समझना।

'अग्निध्वजा' कविता में कवि ने ज्योतिबा फूले और अंबेडकर जैसे क्रांति के महानायकों के वैचारिक दर्शन की बारिश से इस तप्त धरती को सींचने और उसके ज़रिए विषमता की खाई को पाटने का आवाहन किया है। इसीप्रकार 'मनोनुकूल वर्षा' कविता में कवि ने रक्तिम ज़ख्मों को धोने की बात कहकर क्रांतिकारी लड़ाई का विगुल फूँका है-

तू अनुभव करेगी यहाँ/
सदियों से धूप की किरणें पीकर/
तप्त हुए लोगों की रेतीली ज़िंदगियाँ/
विषमता की वनाग्नि पर टँगे हुए निराश्रित झुर्रियाँ
पड़े शरीर/
तेरे मस्तिष्क में क्रोध की बिजलियाँ कौंधेंगी-देखकर/
यहाँ रेगिस्तान में अस्त-व्यस्त फैली हुई आबरू
की लावारिस हड्डियाँ/
और मनुवंश से बहाल किया हुआ/
फौलादी बेड़ियों का अपंगत्व युगानुयुगे आक्रोश
करती रहेगी तू शोषितों के लिए/
और ख़ुशहाल होगी/
यहाँ के जुल्मखोरों को बहाती हुई बाढ़ में/
आकाश का हृदय चीरकर विद्रोही पवन के संग/
टूटे हुए शरीर से टपकने वाले आयुष्य के/
फलने-फूलने के लिए बरस/
वर्षा, रक्तिम ज़ख़्मों को धोने के लिए मनोनुकूल बरस।

इस कविता में 'सदियों से धूप की किरणें पीकर रेगिस्तान में फैली हुई आबरू की लावारिश स्त्रियाँ' जैसे शब्द-चित्रों से कवि ने शोषण की त्रासदी को मूर्त कर दिया है जिसे पढ़कर रक्त शिराओं में लहू की गति तेज़तर हो जाने वाली है। 'आकाश का हृदय चीरकर', विद्रोही पवन संग आयुष्य के फलने-फूलने के लिए बरसात की कामना आशावादी और परिवर्तन में ख़ुशहाली की बहाली का सृजन है।

'आलेख' कविता में कवि ने साम्यवाद के सामर्थ्य के बहाने नकली आदर्शों को बेनक़ाब किया है। साम्यवाद की सभ्यता का सामर्थ्य तलाशने का मुहावरा अपने-आप में कई तरह के छद्म-आडंबरवादी और तथाकथित सुधारवादी संगठनों और आंदोलनों की कलई खोलता है। उनकी नीयत और कार्यकलाप से प्रकट हुआ है कि उनके सारे आश्वासन और वादे शोषित जनता को उलझाकर उनके वास्तविक उद्देश्यों से भटकाने का ही उपक्रम है यह चेतना अपने आप में दलित-आंदोलन के आत्मनिरीक्षण का भी संकेत करती है।

यद्यपि मैं ढूँढ़ रहा था तुम्हारे आलिंगन में/
साम्यवाद की सभ्यता का सामर्थ्य/
तुम्हारी साँसों के संग बाहर फेंके गये खोखले शून्य/
समेट रहा था मैं अविचल व्यर्थ/
आख़िर जान गया-/
तुम्हारे करार ही बेकरार थे।

इसीप्रकार 'उद्रेक' कविता में 'उनके बेईमान सूरज के उद्धृत उजाले को तिलांजलि देने' का रूपक अपनी शब्द-सामर्थ्य और संप्रेषणीयता में पूरे माहौल की तर्जुमानी करता है। फौलादी गगन का ओढ़ना, आलिंगन की अग्नि की उपमा को सजाकर विद्रोह को अंजाम देने एवं शत्रु की कपट-नीति को ध्वस्त करने के लिए ही जलता क्षितिज और चमकता सूरज लेकर गाँव की सरहद पार की भीषण वर्तुल परिधि पर दौड़ते रहने का अनवरत क्रम उस क्रांति के बाद ही थमने वाला है, जिससे शोषण की अट्टालिकाएँ उसके प्रभु-वर्ग के साथ जलकर ख़ाक नहीं होतीं।

जलता क्षितिज और चमकता सूरज लेकर/
प्रिये, उनके बेईमान सूरज के उद्धत उजाले को तिलांजलि देकर आ/
ओढ़ना है यहाँ फौलादी गगन भूखे हाथों से/
और ढकेलना है सरहद पार उनके हज़ारों भ्रष्ट सूरज/
आलिंगन की अग्नि की उपमा अंगों पर सजाकर/
विद्रोह मोर्चे जैसा मैं दौड़ता ही रहूँगा गाँव की सरहद के पार/
भीषण वर्तुल की परिधि पर/
जलता क्षितिज और चमकता सूरज लेकर।

'शब्दों का आकाश' कविता में कवि ने दमन की पराकाष्ठाओं को बख़ूबी रेखांकित किया है। असहय होकर शब्दों के आकाश को जलाना, कवि-कर्म का संकल्प ही नहीं एक क्रांतिकारी मास्तिष्क का घोषणा-पत्र भी है-

गर्भवत् जानेवाली सुबह द्वारा/
शोषित अग्नि के कंप गहरे/
हाँक देनेवाली मनस्वी, मृत्यु/
झुग्गी-झोंपड़ी में चल रहा ज्वाला का नर्तन/
जीवन की फाँस पर लटकने वाला दुख का वर्तन/
असहय होकर जलाता हूँ मैं /
शब्दों का आकाश तुम्हारे लिए- केवल तुम्हारे लिए।

'अग्नि पुरुष' कविता में कवि ने डॉ. अंबेडकर के संघर्षमय जीवन को बड़ी निष्ठा और शिद्दत के साथ याद किया है। अंबेडकरवादी अनुयाइयों द्वारा 'गरम सुख' का लुत्फ़ भोगने की व्यंजना आज के स्वार्थी और आत्मकेंद्रित दलित समाज को आइना दिखाने की कोशिश है। 'आपका सहा अतीत उनकी वर्तमान बनने की नौबत आ रही है' का जुमला दलित आंदोलन की भटकी हुई दिशा की ओर इशारा है। जबकि अभी भी लाचार, भूखे लोगों की आँखें अपने उद्धारक के सपनों को फलीभूत देखने को मुंतज़िर हैं। अग्निध्वजा की विस्फोटक ऊर्जा को क्षय करने वाले और क्रांति-रथ को ले जाने वाले तथाकथित अनुयाइयों के छद्म चरित्र को उजागर करती है। यह कविता लीक से हटकर सत्य और स्पष्टवादी बनकर भविष्य की सच्चाई के प्रति भी चौंकाने वाली टिप्पणी करती है।

आपके बुलंद क्रांतिकारी फलक अब भी थरथरा रहे हैं/
निष्ठावान अनुयायी आपके दाहक शब्दों को गोद में लेकर/
भोग रहे हैं गरम सुख का लुत्फ/
आपकी ईमानदारी को कुतरकर जड़ समेत खाते हुए/
कलाबाजी कर ले जा रहे हैं एक उँगली का थूक दूसरी उँगली पर/
आपका सहा हुआ अतीत उनका वर्तमान बनने की नौबत आ रही है/
अंधकारमय अंगार की पार्श्वभूमि पर-/
लाचार,भूखे, अंधे ज़ख्म अनिवार्यता से ताक रहे हैं आपकी राह/
सहलाने हेतु माँ की ममता की तरह/
आज भी आपकी अग्निध्वजा की बुलंद विस्फोटक ऊर्जा/
आपकी साँसों की हवाओं के संदेशों पर जीवित है/
परंतु उन्हीं ऊर्जाशील अमोल संदेशों को/
पी रह हैं घोलकर यहाँ के चालाक शराबी/
और आक्रोश की आवेशपूर्ण गूँज स्वयं परास्त व ध्वस्त हो रही है/
मद्यालय की देहलीज पर।

'भावनाओं के कुसुम' कविता में खोखली तत्वज्ञान की बातों को आड़े हाथों लिया गया है। भावनाओं को उभारकर अपनी सुविधा और लाभ हेतु उनका दोहन-शोषण

करने का छद्म तत्व-ज्ञान कभी भी सुरक्षा की गारंटी नहीं देता और फौरी तौर पर भावनात्मक ब्लैकमेल के ज़रिए अपना हित साधन करता है। यह संदेश जख़्मी पत्थरों की सुरक्षा का जिम्मा न लेने वाले नकली शान का माखौल उड़ाता है।

तत्व-ज्ञान पर भाषण देता हुआ/
वह बिखेरता है भावनाओं के कुसुम/
प्रलय की वेदना में/
कंपित होंठों से बाँधता है, मैं-मैं का समा/
परंतु नहीं लेता ज़ख्मी पत्थरों की सुरक्षा का ज़िम्मा

युवराज सोनटक्के जिस विषय पर बातें करते हैं उसे भावनात्मक स्तर तक ही सीमित नहीं रखते बल्कि मस्तिष्क को आंदोलित करने वाले असहज किंतु यथार्थ रूपकों का सहारा भी लेते हैं।

'ईश्वर' कविता में कवि ने ईश्वरीय छद्म को अच्छी तरह से बेनक़ाब किया है। ईश्वर के अयुक्त अस्तित्व को प्रयुक्त करने वाले स्वभूत ईश्वरीय दलालों के अन्याय को ईश्वर की आड़ लेने का काम करते रहे और ये दु:खदायी आयोजन तुम्हारी अस्तित्व की तरह अनिंद्य और न रुकने वाले बनकर अनिर्वचनीय बन गये-

परिमित ज्ञान से तेरे संबंध में अनुमान व निष्कर्ष निकाले/
ईश्वर, तेरा अस्तित्व अयुक्त होने पर भी/
उन्होंने तुझे प्रयुक्त किया/
प्रयोजन न होते हुए भी तेरा आयोजन किया/
परिणामत: उनके अन्याय भी तेरे समान/
थके हुए दु:ख बन कर पैदा हुए।

कुल मिलाकर 'अग्निध्वजा' कविता संग्रह की रचनाएँ क्रांति-पथ पर मशाल जलाये खड़ी दिखाई देती हैं। इनमें केवल अतीत-जीवी दु:ख और उपालंभ ही नहीं है वरन् वर्तमान की विसंगतियों को ख़त्म करने का साहसिक आवाहन भी है ताकि भविष्य को सँवारा जा सके। एक मज़बूत और वैभवशाली राष्ट्र-निर्माण में जिन कारकों और उत्प्रेरकों की सकारात्मक भूमिका हो सकती है, उनके प्रति आशावाद का आकर्षण कविता का मूल संदेश बनकर उभरा है। यह कविता-संग्रह दलित-जीवन के अतीत का कोरा स्यापा नहीं बनकर सशक्त समाज-निर्माण को ऊर्जा भी देता है। कविता के शब्द-शब्द आक्रोश से पैदा होते हैं किंतु बैर-भाव या प्रतिकार-भाव की जगह कुशल-अकुशल की पहचान कराते हुए, सच्चाई को खुले दिल से अंगीकार कराते हैं। भविष्य सँवारने का यह सर्जनात्मक तरीक़ा है और इसका स्वागत किया जाना चाहिए। यक़ीनन ये कविताएँ दलित-साहित्य की ही धरोहर नहीं अपितु विश्व-साहित्य की धरोहर बनने की क्षमता रखती हैं। बंद आँखों से सच्चाई को झुठलाने वाले नेत्रों को आइना दिखाना भी कठिन है, इसलिए भी इन कविताओं को पढ़े बिना इसकी गहराई में उथल-पुथल का अंदाज़ा लगाना भी कदाचित कठिन है। v

अपर मंडल रेल प्रबंधक
पूर्व मध्य रेल
मुगलसराय
**संपर्क: 09794848001**

**<u>अग्निध्वजा</u>**
**कवि: युवराज सोनटक्के**
**प्रकाशक: शाश्वत प्रकाशन,**
**172, बालाजी ले आउट,**
**मल्लात्तहल्ली,**
**बेंगलूर- 560056**
**मूल्य : 100 रुपये**

**आओ, मिलें सब देश-बांधव हार बनकर देश के**
**साधक बनें, सब प्रेम से सुख-शांतिमय उद्देश्य के**
**क्या सांप्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो।**
**बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों के कहो?**

**-राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त**

◆ कविता ◆

# गंगा

राम उपदेश सिंह

प्रशांति की प्रसन्नता,सरित-प्रवाह में, लिए,
असंचयिक प्रवृत्ति जो अपार शक्ति ढारती,
दुलार की उदधि लिए, अमानतें समेटती,
विशाल कामना लिए वसुंधरा निहारती।

जब प्रचंड भास्कर, असीम उष्णता लिए,
गगन के एक छोर से, निजी प्रभा उड़ेलता,
वसुंधरा का नीरकण हठात् अग्नि-मार्ग पर,
कलोल के स्वभाववश पवन गगन से खेलता।

शून्य में स्वच्छंद मेघ, नीर की तलाश में,
अभाव के प्रभाववश, विभिन्न रूप-रंग रचा,
दूर क्षितिज की उड़ान, अंतरिक्ष-द्वार तक,
अस्मिता बिखेरती, सदा उथल-पुथल मचा।

रिक्त हुए नीर से, रुष्ट हो समीर से,
कर्ष के प्रभाव से, गगनमुखी हुए जभी,
धरा से निस्सरित विशाल तेज दीप्त पुष्पकण,
प्रशांत हाव-भाव से, धरा समेटती तभी।

प्रशांति की प्रसन्नता सरित-प्रवाह में छिपी,
असंचयिक प्रवृत्तियाँ अपार शक्ति धार की,
दुलार की वितैष्णा, अमानते समेटती,
विशाल कामना लिए वसुंधरा के प्यार की।

गंगा! तू संस्कृति की प्रतीक, सर्वदा हृदय तेरा विशाल,
तू ही, भारत की दिव्य लोक तू ही, भारत की हृदय-माल
तू ही शैल-उदधि की निरत जोड़, तू धाराओं का महा-जाल
तू कवितधार की विरत मोड़, है ज्ञात तुझे वह महाकाल।

रसपूर्ण कवित की तू प्रवाह, पापी को अंगीकार किए,
तू, मोक्षदायिनी दिव्य-धार, अनगिनत कलंकी तार दिए,
चिंता, बंधन या द्वंद्व नहीं, है शैल अचल निश्चेष्ट यदा,
तू, मातु सरस्वती मुक्तिधाम, सरिता सचेष्ट गतिशील सदा।

है पिता शैल, माता सरिता, स्रष्टा का ही यह दिव्य जाल
जिसमें पति पुत्र सुता बनिता, जगद्रष्टा का है उर विशाल;
रवितप्त धरा से जब जलकण, उठ वाष्प मेघ बनकर जाता
धरती की प्यास बुझाने को, वह वृष्टिधार बनकर आता।

धरती-सपूत प्यासा न रहे, धरती नभ जल थलचर जाता,
धरती की अपनी प्यास कहाँ? वह संतति की किंकर माता;
स्वच्छंद मेघ जो शून्य मध्य, ले साथ पिपास विचरते हैं
वे मेघ क्षितिज की शय्या पर, हलचल-सा मचा, मचलते हैं।

धरती वह तेज-प्रदीप्त पुष्प, सरितंतु मध्य धारण करती,
गति तथा शक्ति से ओतप्रोत, जीवों का संधारण करती;
वर्षा में गर्भित बादल का, जल मूसलधार जहाँ आता,
तू, अगर नहीं होती, माते! वह जल अपार क्या-क्या ढाता?

तू श्रेष्ठ, मातु! सरिताओं में, तू मातृ-स्वरूप महान् बनी;
तू, स्वर्गलोक से ही उतरी, स्वर्गारोहण सोपान बनी;
हे सुता भगीरथ की, बोलो, शिव-जटा छोड़ आयी कैसे?
ध्रुव-रूपी शैल सुमेरु शिखर पर, करुणा बरसायी कैसे?

तूने निज मार्ग स्वयं ढूढ़ा, पाथेय दिव्य, पथ भव्य बना,
तव तट पर नगर विशाल बसे, सागर तेरा गंतव्य बना;
सभ्यता बीज अंकुरित हुआ, जब से तेरी जलधार चली, क्या
है सजीव तेरी स्मृति में, वह क्षण जब से युगधार पली?

माँ! सर्वप्रथम तेरी गति में, सद्भावों की भव्यता भली,
जब हुआ तुम्हारी धारा में, कुछ उथल-पुथल, सभ्यता पली;
जब आदिपुरुष इस भारत के, तेरे शुभ तट पर आये थे,
घर की पहली प्राचीर उठा, तेरी गुणगाथा गाये थे।

क्या है सजीव तेरी स्मृति में, इतिहास-वृत्त की निरत धार?
उन आगंतुक का संपोषण, या अर्पित शव, या पुष्पहार?
जो भारत का पग धोता है, उससे अबाध मिलने जाती,
तू पंचतत्व के विविध अंश, सागर अथाह तक पहुँचाती।

तुझमें अतीत की स्मृति अशेष, जिसका प्रतीक तू कहलाती,
चाहे कोई भी ऋतु आये, तू बहती चलती ही जाती;
पर हाय, मातु! तेरे कुपूत, अंधे बन, तुझमें मल ढारे,
तव नीर विषाक्त अपेय बना, अपना भविष्य ही संहारे।

वे अपने को ही तार रहे, चिंता न रही निज संतति की,
कर पर्यावरण अशुद्ध कर रहे मार्ग प्रशस्त अधोगति की;
तेरे उपहार ग्रहण कर ले, क्यों यह भी सोच नहीं पाये?
प्रतिशोध-शक्ति है गुप्त जहाँ, क्यों अत्याचार वहीं ढाते?

तेरा मातृत्व भाव, तेरी करुणा, महानता की गरिमा,
सब हुए व्यर्थ के वशीभूत, क्यों भूल रहे तेरी महिमा?
कवि जान रहा, माता! तुझको जब आ जाएगा क्रोध कभी,
अपने हाथों से कर प्रहार, लेगी अचिंत्य प्रतिशोध तभी।

फिर तो कपूत पर ही तेरा निर्भय प्रहार चालित होगा,
इत अनावृष्टि, अतिवृष्टि कहीं, कृषिचक्र कहीं बाधित होगा;
तब तो, तेरे सूखे तल पर, पाएँगे केवल रेत जभी,
जल के अभाववश ही धरती, पलिहर होंगे सब खेत तभी।

धरती के पुत्र अचेत हुए, कर्तव्य, पुत्र के, भूल गये;
ढारती रही तू स्नेह सदा, वे स्वार्थ-वृत्ति से झूल गये;
कुकृत्य कपूतों का कराल, माँ, तुझसे क्रोध जगाएगा,
यद्यपि तू स्नेहमयी माता, वह क्रोध प्रलय ही लाएगा।

इसलिए समय है शेष अभी, मानव का आत्म-परीक्षण हो,
इस भाँति, प्रकृति के अवयव का पूरा-पूरा संरक्षण हो,
जिससे यह वर्तमान पीढ़ी कुछ शुद्ध हवा पानी पी ले,
आने वाली संतान प्रकृति के साथ भव्य जीवन जी ले।

सदस्य एवं प्रेक्षक
रेलवे हिंदी सलाहकार समिति
पूर्वोत्तर रेलवे
1, आई. ए.एस. कालोनी
किदवईपुरी, पटना-800001
**संपर्क: 09431021508**

◆ कविता ◆

## गर्मी वक्त की

**जसवीर सिंह अरोड़ा**

पड़ती थी गर्मी तब भी
चलती थी तेज लू भी
आता था पसीना भी
पर नहीं होती थी हमें
इतनी बेचैनी-मौसम में,
हाथ का पंखा होता था
कच्ची मिट्टी का फर्श था
गोबर की लिपाई कर लेते थे
बरामदे में दिन बीत जाता था
नल के नीचे बैठकर
जब मन किया; नहा लिये
ताजा पानी से,
छिड़काव करके
रात को छत पर सो जाते थे
खाट बिछाकर-
मच्छर कम होते थे
खतरनाक भी नहीं थे,
बीस मई को रिजल्ट आता था
फिर पूरे तीन महीने की छुट्टी-
कोई होमवर्क नहीं मिलता था
हम नानी के घर चले जाते थे
टेमपरेचर देखने के लिए
घर में टीवी नहीं था,
रिश्तों में गरमाहट जो होती थी
मौसम की गर्मी सहन हो जाती थी-
घड़े का पानी पी लिया करते थे
जब ज्यादा गरमी पड़ती थी तो
कभी-कभार
बना दिया करती थी माँ
कच्ची लस्सी और शिकंजी भी।

उप मुख्य सामग्री प्रबंधक(विक्रय)
भंडार विभाग, पूर्वोत्तर रेलवे
गोरखपुर
**संपर्क: 9794840756**

## ◆ क्षणिकाएँ ◆

**अनिल कुमार दत्ता**

**1. पीढ़ियाँ**
काठ की पीढ़ियों का
जमीन से उठ कर
डायनिंग टेबुल तक का सफर
पीढ़ियों का सफर...

**2. चलन**
बहुवचन, द्विवचन, एकवचन
उफ! यह गणित
और
उल्टी गिनती का चलन...

**3. लगन**
हर आदमी
पूरी निष्ठा और लगन से
बिना मतभेद
पढ़ रहा है व्याकरण का
एक ही अनुच्छेद
...संधि-विच्छेद...

**4. पेट**
पेट से हो-हो कर
पेट भरती गरीबी
उतरती-ढ़ोती रहती है
...पेट...

**5. दंपति**
भारतीय दंपति
नर स्वामी
नारी संपति...

**6. सामग्री**
कर्तव्यों और अधिकारों की
कैसी यह बराबरी है
नर बना नारायण
नारी-
पूजा की सामग्री है...

**7. द्वंद्व**
रम और रामायण बीच
खड़ी शहर की सीता है
राम काम को खोज रहा है
और हाथ में गीता है
इस दौर में अब हर कोई
किस तरह द्वंद्व में जीता है... ।

**8. रिश्ते**
रिश्ते...
ना दिलों के, ना खून के
रिश्ते...
बालों के, नाखून के
प्यार के रिश्ते अक्सर जैसे
दाँत और दातून के...

**9. नियति**
जब अधजल गगरी
छलकत जाय
और घर का भेदी
लंका ढाय
तो, अंधी पीसे
कुत्ता खाय...

**10. सपने**
एक बात फिर
लो खास हो गई
सुनहरे कल के सपने ले कर
फिर एक सदी
इतिहास हो गई... !

**11. ब्याह**
एक प्रथा भई वाह!
बिकता है पुरुष
किंतु
गले में सूत्र डाल कर
उठा ली जाती है नारी
संपन्न होता है
विवाह...

**12 रिवाज**
ये कट्टर रिवाजी
बस रिवाज निभाते हैं
दिल बहलाते हैं

रावण को नहीं,
बस, रावण के
पुतले जलाते हैं...

**13. पतंग**

पतंगबाजी के वास्ते
हर किसी को चाहिए
पहले स्वतंत्र विचार
एक मुट्ठी आसमान
एक टुकड़ा आधार...

**14. दुम**

यह जिंदगी
जैसे कुत्ते की दुम
तो क्या मैं? क्या तुम?

**चलते-चलते**

कभी जलाशय बुलबुलों से
ऊबा नहीं करते।
उन्हें पता है कभी बुलबुले
डूबा नहीं करते।

कार्यालय अधीक्षक
विधि कार्यालय/कार्मिक
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
**संपर्क: 9005092337**

## ◆ ग़ज़लें ◆

राजेंद्र कुमार

**एक**

खिदमत इंसानों की जिनका भी ईमान बनी,
उनकी दुनिया में आन, वान और शान बनी।

जिनको भी भरोसा है खुद अपनी हिम्मत पर,
दुनिया की हर मुश्किल उनको आसान बनी।

ऐश नहीं करते हम दौलत पे विरासत की,
ज़ीस्त हमारी तो संघर्षों के दौरान बनी।

बाँधा है भगीरथ ने इन नागिन लहरों को,
ऐसे ही नहीं यह गंगा हम पर वरदान बनी।

नाम है क्या उसका जो भीड़ का है हिस्सा,
भीड़ से निकलें हैं जो उनकी पहचान बनी।

मेहनत अपनी यारो कुंजी है सफलता की,
यूँ ही नहीं यह दौलत हम पर कुर्बान बनी।

**दो**

लोग जिंदा रह सकें वह काम करना चाहिए
आदमी को आदमी की जंग लड़ना चाहिए।

अब मैं दहशत में नहीं हूँ यह बताने के लिए,
हर कबूतर ले के यह पैगाम उड़ना चाहिए।

आदमी की अदमीयत से डरे शैतान भी,
रुत्वा हर इंसान को फिर ऐसा मिलना चाहिए।

एक कोशिश यह करें हम अपने बच्चों के लिए,
इस सदी का जुल्म आगे अब न बढ़ना चाहिए।

फिर भगीरथ कोशिशों की एक जरूरत है यहाँ,
धरती पर आकाश-गंगा को उतरना चाहिए।

राजभाषा अधिकारी
पूर्वोत्तर रेलवे
इज्जतनगर, बरेली (उ.प्र.)
**संपर्क: 9760541604**

**इशरते-क़तरा है दरिया में फ़ना हो जाना**
**दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना**
**-मिर्जा ग़ालिब**

## ◆ ग़ज़लें ◆

### डा. कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक'

**एक**

उठाएँ जुल्म कब तक और झेलें सख्तियाँ कब तक,
लबों पर दोस्तो मजबूर के ख़ामोशियाँ कब तक।

ज़माना पेट भरने के लिए क्या-क्या नहीं करता,
इसे नाकों चने चबवाएँगी ये राटियाँ कब तक।

तेरे बंदे टके के भाव में नीलाम होते हैं,
बता इंसां के जिस्मों की लगेंगी बोलियाँ कब तक।

चलेंगे कब तलक मुफ़लिस के अरमानों पे बुलडोजर,
कि महलों के लिए कुर्बान होंगी खोलियाँ कब तक।

सरे-बाजार यूँ कब तक बिकेंगे ये जवाँ लड़के,
सुहागन डोलियाँ बनती रहेंगी अर्थियाँ कब तक।

यहाँ दैरो-हरम के नाम पर नफ़रत के शोलों को,
हवा देती रहेंगी दोस्तो ये कुर्सियाँ कब तक।

उठो और उठके बतला दो ज़रा औक़ात तुम अपनी,
'मयंक' इस दौर की सुनते रहोगे घुड़कियाँ कब तक।

**दो**

जिनसे मिलने का है मुझको इश्तियाक़,
क्यों उड़ाते हैं वही मेरा मज़ाक।

आइए और मेरे दिल से पूछिए,
कट रही है किस तरह शाम-ए-फ़िराक़।

जल उठीं, यादों की शम्एँ जल उठीं,
हो गए फिर घर के रोशन ताक़-ताक़।

वह अचानक उनका मिलना राह में,
यह मुहब्बत है या कोई इत्तिफ़ाक़।

बाप का यह हक़ है सदियों से मगर,
अब तो बेटे बाप को करते हैं आक़।

सोच कर औरों को बतलाएँ 'मयंक',
बद से बदतर चीज़ होती है तलाक़।

ग़ज़ल-5/597, विकास खंड
गोमती नगर, लखनऊ-226010
**संपर्क: 09415418569**

तुलसी जयंती के पावन अवसर पर

## गोस्वामी तुलसीदास और आज

**अनामिका सिंह**

तुलसी के थे राम या कि खुद राम रहे तुलसी के
सुनिर्णीत यह सप्रभ तुलसी, गायक सदा सिया रघुवर के

जन्म अभुक्त मूल में, फिर भी कवि तुम बने महान
बाधाएँ हुईं दूर, मिले श्री हरि गुरु सुजान

कष्ट अनेक तटस्थ किए, हे धीर राम ध्वजधारी
चित्रकूट की पावन धरती, रही सदा सुखकारी

रहवर तेरे हनुमान, श्रीराम भक्त रणधीर
पा संकेत घिसे चंदन तुम, तिलक देत रघुवीर

महाकाव्य 'श्रीरामचरितमानस' जगवंद्य कृति है
इसमें राम रसायन है, प्रभु गायन है, नव धृति है

अमल-धवल प्रतिभा मानव की, गतिमति है सुखधाम
नहीं कलुष, छल-बल के धारक को भी, मिला विराम

यहाँ कलि काल कराल, नहीं संयम, अनीति की धारा
तुलसी दें वरदान कि जन में बहे स्नेह की धारा

मानव आज गुलाम काम का, ललनाएँ रोती हैं
कैसा अत्याचार बालिका विलख-विलख मरती है

गृहस्वामी बन गया क्रूर, लिप्सा, मद, लोभ प्रबल है
सती-सीता की सहनशीलता, धैर्य हुआ निर्बल है

तुलसी! तुम तो गायक सत के, सियाराम के व्रत के
उड़ कर आए कोई जटायु, घात करे जो नख के

कवि! तेरे चित्रण भायप के, राम-भरत नहीं मिलते
सीता के भयहारी लक्ष्मण, आज कहीं नहीं दिखते

पर मैं नहीं उदास, हास-विश्वास-सरित सरसेगी
'श्रीरामचरितमानस' की भक्ति-सुधा, सत्वर बरसेगी।

कनिष्ठ अनुवादक
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

◆ व्यंग्य कविता ◆

## हमारी हिंदी ( दो दृश्य )

सुनील कुमार श्रीवास्तव

**एक**

मेरे अधिकारी ने
मुझे अपने कक्ष में बुलाकर
कहा- 'सुनो, यह 'लेटर'
राजभाषा विभाग से आया है,
कल दस बजे
'हिंदी के शत-प्रतिशत प्रयोग'
पर एक 'मिटिंग काल'
की गयी है,
इसमें हमें भी
'रिप्रेजेंट' करना है
कल मैं 'आन लीव' हूँ
इसलिए तुम
'टाइम' से इस 'मिटिंग'
को 'अटेंड' कर लेना,
और
'इंपोर्टेंट प्वाइंट्स'
नोट कर
राजभाषा की फाइल
पर 'पुट अप' कर देना,
यह बहुत
'अर्जेंट' है।

**दो**

इलाहाबाद स्टेशन पर
एक विदेशी
अचानक मुझसे
टकराया फिर
संभलकर हिंदी में बोला-
'भइया, मैंने सुना है
कि इलाहाबाद के लोग
बहुत अच्छी हिंदी
बोलते हैं।'
मैंने गर्व से
सीना फुलाकर कहा-
'हाँ, तुमने ठीक ही सुना है,
हमलोग 'प्योर' हिंदी
बोलते हैं।'

772/ए, कौवा बाग रेलवे कालोनी
गोरखपुर
**संपर्क: 9794840189**

◆ कविता ◆

## समझ लीजिए

सुरभि श्रीवास्तव

मानवता का हो रहा है जारण समझ लीजिए,
शत्रु भी किये हैं मित्र रूप धारण समझ लीजिए।

नाकामियों की खातिर क्यों दोष भाग्य को दें-
जरूरी है लक्ष्य का निर्धारण समझ लीजिए।

अपना औ' पराया की सोच ही है कचरा-
करना है कचरे का निस्तारण समझ लीजिए।

मनुष्य का यह जीवन यों ही नहीं मिला है
इसका भी है कुछ तो कारण समझ लीजिए।

अहिंसा का व्रत रख, चोटें तो बहुत खा लीं-
कर डालें व्रत का अब पारण समझ लीजिए।

सत्याग्रह की शुरुआत हो जाएगी कहीं से-
किसी भी भूमि को 'चंपारण' समझ लीजिए।

सच्ची खुशी मिलेगी औरों की ही खुशी में
आप राग-द्वेष-ईर्ष्या को अकारण समझ लीजिए।

जीवन में कष्ट कितने मिलें, बीत जाएँगे सभी
समरसता को कष्टों का निवारण समझ लीजिए।

**गीत**

तुम्हारे सौंदर्य के नाग-पाश में
नयनों के मनहर आकाश में
बँध चुका है मेरा मन!
तारक-खचित नीलांबर
कुमुदानिल युक्त भँवर
खींच रहा अंतर्मन!
मंजुल कांतिमय-सा शशि-मुख
हर लेता सारा दु:ख
फिर कैसा यह दहन!
मधु-ऋतु दो दिन का
जीवन यह ज्यों तिनका
फिर कैसा रूप-अहमन्य?

शिक्षिका आर्मी स्कूल
मकान नं.-328, सत्या निकेत
सूर्यविहार कालोनी, गोरखपुर-273015
**संपर्क: 8004306803**

## मुख्यालय

महाप्रबंधक श्री कृष्ण कुमार अटल की अध्यक्षता में 11.07.14 को क्षेत्रीय रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें रेलवे के विभिन्न विभागों, मंडलों एवं कारखानों में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की गई। इस अवसर पर इंजीनियरी विभाग, गोरखपुर द्वारा कार्यालय में किए जा रहे राजभाषा हिंदी के कार्यों की प्रदर्शनी लगाई गई। इस अवसर पर पूर्वोत्तर रेलवे की सबसे व्यवस्थित वेबसाइट के लिए गठित मूल्यांकन समिति द्वारा मुख्यालय के प्रशासन विभाग को प्रथम, कार्मिक को द्वितीय, वाणिज्य को तृतीय तथा चिकित्सा, इंजीनियरी व सिगनल विभाग को सांत्वना पुरस्कार के निर्णय की घोषणा की गई।

मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री ज्ञान दत्त पांडेय की अध्यक्षता में 25.07.14 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें रेलवे के विभिन्न विभागों, मंडलेतर इकाइयों, प्रशिक्षण केंद्रों एवं कारखानों में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की गई।

मुख्यालय के यांत्रिक विभाग द्वारा 23.06.14 को, परिचालन विभाग द्वारा 27.06.14 को, संरक्षा विभाग द्वारा 23.06.14 को समीक्षा बैठकें आयोजित की गई।

मुख्यालय के इंजीनियरी विभाग द्वारा 27.06.14 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण संगठन की अध्यक्षता में 26.06.14 को विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक, तकनीकी संगोष्ठी, विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग करने वाले 5 अधिकारियों एवं 5 कर्मचारियों को पुरस्कृत भी किया गया।

पर्यवेक्षक प्रशिक्षण केंद्र/गोरखपुर में 07.06.14 को ब्रेक बाईंडिंग के कारण एवं निवारण, 14.06.14 को डब्ल्यू.डी.जी.ए. एवं डब्ल्यू.डी.पी.-4 लोको की कार्य प्रणाली, 21.06.14 को एस.पी.ए.डी. के कारण एवं बचाव संबधी निर्देश, 28.06.14 को एच टाइप सीबीसी टाइट लाक कपलर, 17.06.14 को सचल प्रशिक्षण यान के द्वारा समाडि मंडुवाडीह के 17 कर्मचारियों को गाड़ियों में आग लगने के कारण एवं निवारण, ब्रेक बाईंडिंग तथा एयर ब्रेक सिस्टम विषय पर प्रशिक्षण, 27.06.14 को सचल प्रशिक्षण यान के द्वारा समाडि डिपो गोंडा के 24 कर्मचारियों को गाड़ियों में आग लगने के कारण एवं निवारण, ब्रेक बाईंडिंग विषय पर प्रशिक्षण, 05.07.14 को डब्ल्यू.डी.जी.4 एवं डब्ल्यू. डी.पी.-4 लोको इंजन के स्टार्ट करने की विधि, सर्किट ब्रेकर रीसाइक्लिंग करने की विधि, 12.07.14 को टाइट लाक सीबीसी कपलर तथा एयर स्प्रिंग, 19.07.14 को सिगनल पासिंग ऐट डैंजर, 26.07.14 को डब्ल्यू.डी.जी.-4 एवं डब्ल्यू. डी.पी.-4 लोको के विभिन्न कंपार्टमेंट में लगे उपकरण एवं उनके कार्य विषयों पर तकनीकी संगोष्ठी आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त 22.07.14 को सचल प्रशिक्षण यान के द्वारा समाडि डिपो, लखनऊ के 17 कर्मचारियों को गाड़ियों में आग लगने के कारण एवं निवारण, ब्रेक बाईंडिंग 30.07.14 को सचल प्रशिक्षण यान के द्वारा समाडि डिपो, छपरा के 25 कर्मचारियों को गाड़ियों में आग लगने के कारण एवं निवारण, ब्रेक बाईंडिंग विषय पर प्रशिक्षित किया गया।

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्री वी.डुंगडुंग द्वारा 12.08.14 को लखनऊ मंडल के इंजीनियरी विभाग में हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया गया।

## इज्जतनगर

मंडल रेल प्रबंधक श्री चंद्र मोहन जिंदल ने 03.06.14 को एफ.एम. रेडियो स्टेशन पर 'रेल परिचालन में संरक्षा' विषय पर व्याख्यान हिंदी में दिया।

मंडल में 02.06.14 से 06.06.14 तक अंतर्राष्ट्रीय समपार जागरूकता सप्ताह मनाया गया। साथ ही 03.06.14 को भोजीपुरा-अटामांडा के मध्य आरक्षित समपार सं. 5/सी पर अंतर्राष्ट्रीय समपार जागरूकता दिवस मनाया गया। इन दोनों आयोजनों के अंतर्गत समस्त प्रचार-प्रसार हिंदी/द्विभाषी रूप में किया गया। 16.06.14 को फतेहगढ़ में 'राजभाषा नीति एवं क्रियान्वयन' विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

12.06.14 को श्री मनोज विश्वास, मुख्य कारखाना प्रबंधक की अध्यक्षता में इज्जतनगर कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

16.06.14 को फतेहगढ़ स्टेशन, 18.07.14 को लालकुआँ एवं 31.07.14 को चिकित्सालय/इज्जतनगर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री चंद्र मोहन जिंदल ने 09.06.14 को बरेली सिटी एवं इज्जतनगर स्टेशन, 10.06.14 को रक्षित समपार सं. 232/सी (दोहना-इज्जतनगर के मध्य) लालकुआँ व काशीपुर स्टेशन, 14.06.14 को काठगोदाम एवं हल्द्वानी स्टेशनों , 16.06.14 को रूद्रपुर सिटी स्टेशन, 17.06.14 को फतेहगढ़ एवं फर्रूखाबाद स्टेशन, 20.06.14 को इज्जतनगर स्टेशन, 21.06.14 को लालकुआँ, 04.07.14 को पीलीभीत स्टेशन, 11.07.14 को समपार सं.-1 स्पेशल, रामपुर चमरूआ स्टेशन के मध्य बन रहे ओवर ब्रिज का निरीक्षण, 19.07.14 को इज्जतनगर-लालकुआँ खंड, लालकुआँ स्टेशन एवं हल्द्वानी स्टेशन का निरीक्षण किया। उन्होंने सभी निरीक्षणों के लिए निर्धारित चेक लिस्ट पर राजभाषा के प्रयोग-प्रसार की जाँच की।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी ने 02.06.14 को नैनीताल अवकाश गृह, रामनगर व काठगोदाम स्टेशन, 05.06.14 को पीलीभीत, 06.06.14 को लालकुआँ, 10.06.14 को कासगंज, 11.06.14 को मथुरा छावनी, 13/14.06.14 को काठगोदाम में आडिट निरीक्षण, 19.06.14 को बरेली सिटी एवं इज्जतनगर स्टेशन, 20.06.14 को फर्रूखाबाद एवं कन्नौज, 23.06.14 को राया-सोनई खंड, 24.06.14 को लाजपतनगर, नई दिल्ली स्थित विश्रामगृह एवं रेक निरीक्षण, 08.07.14 को रनिंग रूम काठगोदाम, 24.07.14 को फर्रूखाबाद एवं फतेहगढ़ स्टेशन, 30.07.14 को भोजीपुरा स्टेशन पर टिकट चेकिंग के दौरान निर्धारित चेक लिस्ट पर हिंदी प्रयोग की जाँच की एवं उक्त निरीक्षणों में हिंदी पैरा को भी सम्मिलित किया।

राजभाषा अधिकारी श्री राजेंद्र कुमार ने 16.06.14 को स्टेशन अधीक्षक कार्यालय, फतेहगढ़, 17.06.14 को पीलीभीत स्टेशन, 18.07.14 को स्टेशन अधीक्षक एवं सी.से.इंजी. समाडि, लालकुआँ, 22.07.14 को पूरनपुर स्टेशन पर टिकट चेकिंग निरीक्षण के साथ-साथ हिंदी प्रयोग का भी निरीक्षण किया।

## लखनऊ

26.06.14 को श्री अनूप कुमार मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विभागों में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की प्रगति की समीक्षा की गई।

28.08.14 को श्री जे.पी. सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक, गोरखपुर की अध्यक्षता में गोरखपुर जं. स्टेशन पर 'फिराक गोरखपुरी' की जयंती मनाई गई।

18.06.14 को मैलानी स्टेशन पर बाबू देवकीनंदन खत्री की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर प्रो. श्रीकांत शुक्ल, पूर्व प्राचार्य बलदेव वैदिक कालेज पलियाकलाँ ने अपना व्याख्यान दिया। 31.07.14 को लखनऊ जं. पर उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती का आयोजन किया गया जिसमें प्रो. योगेंद्र प्रताप सिंह, रीडर, लखनऊ विश्वविद्यालय ने मुंशी प्रेमचंद जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला।

18.06.14 को मैलानी स्टेशन पर 'ग्रीष्मकालीन भीड़ को देखते हुए संरक्षात्मक एवं सुरक्षात्मक उपाय' विषय पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साथ ही 31.07.14 को लखनऊ जं. स्टेशन पर 'बरसात में होने वाली समस्याएँ एवं उनका निदान' विषय पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें श्री लोकेश सिंह, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर/समाडि, लखनऊ ने अपना व्याख्यान दिया।

03.06.14 को बस्ती, 04.06.14 को गोरखपुर (पूर्व), 18.06.14 को मैलानी, 20.06.14 को सीतापुर, 20.06.14 को लखीमपुर, 27.06.14 को नानपारा, 28.06.14 को बहराइच, 28.06.14 को बलरामपुर, 30.06.14 को संयुक्त कार्यालय, गोंडा, 30.06.14 को डीजल शेड गोंडा, 10.07.14 को गोरखपुर (पश्चिम), 11.07.14 को लखनऊ जं., 11.07.14 को बादशाहनगर, 23.07.14 को ऐशबाग स्टेशन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री एम. के. अग्रवाल द्वारा 24.07.14 को डीजल शेड, गोंडा, 24.07.14 को क्षेत्रीय प्रबंधक कार्यालय, गोंडा, 27.07.14 को कानपुर अनवरगंज, 31.07.14 को सीतापुर, लखीमपुर तथा मैलानी स्टेशन स्थित हिंदी पुस्तकालयों का निरीक्षण किया।

राजभाषा अधिकारी श्री शैलेश कुमार मिश्र द्वारा 25.07.14 को गोरखपुर छावनी स्टेशन के विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का गहन निरीक्षण किया गया।

'प्रगति' का 'अटल विशेषांक' व 'लखनऊ दर्पण' त्रैमासिक समाचार बुलेटिन के विशेषांक का प्रकाशन किया गया।

## वाराणसी

सहायक मंडल इंजीनियर, बलिया श्री प्रवीण कुमार की अध्यक्षता में 19.08.14 को बलिया स्टेशन पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की जयंती मनाई गई जिसमें टाउन डिग्री कालेज के प्रो. डा. जैनेंद्र कुमार पांडेय एवं डा. अंजनी तिवारी प्रवक्ता, सी.एन.सी. कालेज ने आचार्य द्विवेदी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला।

18.06.14 को केयानि/गोरखपुर(पूर्व) में 'सिगनल कार्य प्रणाली में संरक्षित प्रकार से कार्य', 21.06.14 को देवरिया सदर में 'ग्रीष्म ऋतु में लू से बचाव' विषयों पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

18.06.14 को केयानि/गोरखपुर (पूर्व), 21.06.14 को देवरिया सदर, 07.07.14 को मंडल कार्यालय, 10.07.14 को वाराणसी सिटी, 11.06.14 एवं 16.07.14 को मंडल प्रशिक्षण केंद्र, मंडुवाडीह, 18.07.14 को मऊ जं., 23.07.14 को आजमगढ़, 31.07.14 को मंडुवाडीह में कार्यशालाएँ आयोजित की गईं जिसमें 156 कर्मचारियों को राजभाषा नीति, नियमों, अधिनियमों एवं अन्य संवैधानिक प्रावधानों सहित पुरस्कार योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई।

11.06.14 को औड़िहार जं., 18.06.14 को गोरखपुर (पूर्व), 21.06.14 को देवरिया सदर, 30.06.14 को सिवान, 10.07.14 को वाराणसी सिटी, 16.07.14 को गाजीपुर सिटी 18.07.14 को मऊ जं., 23.07.14 को आजमगढ़, 31.07.14 को मंडुवाडीह स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

राजभाषा अधिकारी श्री संजय सिंह द्वारा 04.06.14 को केयानि/गोरखपुर(पूर्व), 21.06.14 को देवरिया सदर, 16.07.14 को प्रशिक्षण केंद्र मंडुवाडीह, 18.07.14 को मऊ जं. 28.07.14 को झूँसी स्टेशन कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया गया।

# हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए भारत सरकार द्वारा संचालित विभिन्न प्रतियोगिताएँ/पुरस्कार/प्रोत्साहन योजनाएँ

**1. हिंदी निबंध, वाक् तथा टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता**

ये तीनों अलग-अलग प्रतियोगिताएँ होती हैं। इन प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किया जाता है और योग्यता क्रम में तीन कर्मचारियों को सांत्वना (प्रोत्साहन) पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है। इस योजना के अंतर्गत निर्धारित पुरस्कार राशि का एक चौथाई पुस्तक के रूप में और शेष नकद देने का प्रावधान है। पुरस्कार राशि निम्नवत है-

| | क्षेत्रीय स्तर | अखिल रेल स्तर |
|---|---|---|
| प्रथम पुरस्कार | ₹ 2000/- | ₹ 3000/- |
| द्वितीय पुरस्कार | ₹ 1600/- | ₹ 2500/- |
| तृतीय पुरस्कार | ₹ 1200/- | ₹ 2000/- |
| सांत्वना/प्रोत्साहन पुरस्कार | ₹ 800/-(तीन) | ₹ 1500/-(पाँच) |

1) इन तीनों प्रतियोगिताओं में हिंदी और अहिंदी भाषा-भाषी अधिकारी/कर्मचारी भाग ले सकेंगे। केवल 'ग' क्षेत्र के अहिंदी भाषी प्रतियोगियों को प्राप्तांक के 5 प्रतिशत अंक अधिमान अंक के रूप में दिए जाएँगे।

2) टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में कार्यालयों में नित किए जाने वाले कार्यों जैसे- पत्राचार के मसौदे, टिप्पणी की प्रस्तुति, पदनाम संक्षिप्तियाँ, अंग्रेजी/हिंदी शब्दों के पर्याय, अनुवाद आदि पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

**2. रेलवे बोर्ड की व्यक्तिगत नकद पुरस्कार**

अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपना संपूर्ण कार्यालयी कार्य शत-प्रतिशत हिंदी में ही निष्पादित करने पर उनका नाम विभागाध्यक्ष द्वारा रेलवे बोर्ड स्तर पर पुरस्कार हेतु अनुशंसित किया जाता है। उन्हें अखिल रेल स्तर पर ₹ 1500/- का नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जाता है। इस प्रयोजनार्थ प्रत्येक रेलवे का कोटा निर्धारित है। पूर्वोत्तर रेल के लिए कुल **4 (चार)** पुरस्कार प्रत्येक मंडल से एक-एक एवं मुख्यालय से एक अधिकारी/कर्मचारी को दिया जाता है।

**3. सरकारी कामकाज (टिप्पण आलेखन) मूलरूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना (20/10 हजार शब्दों वाली योजना)**

इस योजना के अंतर्गत रेल कार्यालयों में हिंदी और हिंदीतर अधिकारियों/कर्मचारियों को क्रमशः 20/10 हजार शब्द हिंदी में फाइलों पर टिप्पणी, प्रारूप आदि के रूप में लिखने के आधार पर नकद पुरस्कार की व्यवस्था है। इस योजना के अंतर्गत केवल उन्हीं अधिकारियों/कर्मचारियों के नामों पर विचार किया जाता है जो रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित प्रपत्र पर अपना रिकार्ड रखते हैं। जो कर्मचारी वर्ष में 20/10 हजार शब्दों से अधिक हिंदी में लिखते हैं उन्हें निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किया जाता है-

| | अधीनस्थ कार्यालयों के लिए | मंत्रालय/विभाग के लिए |
|---|---|---|
| प्रथम पुरस्कार(दो) | ₹1600/- | ₹2000/- |
| द्वितीय पुरस्कार(तीन) | ₹800/- | ₹1200/- |
| तृतीय पुरस्कार(पाँच) | ₹600/- | ₹800/- |

**4. अधिकारियों द्वारा हिंदी में डिक्टेशन देने संबंधी पुरस्कार योजना**

1) रेल कार्यालयों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अधिकारियों को हिंदी में अधिकाधिक डिक्टेशन देने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु इस योजना को बोर्ड द्वारा लागू किया गया है। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष प्रत्येक रेल कार्यालय से रेल अधिकारियों को ₹2000-2000/- का नकद पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

2) इस योजना की अवधि कैलेंडर वर्ष है।

3) योजना में भाग लेने वाले अधिकारी बोर्ड द्वारा निर्धारित प्रपत्र में रिकार्ड रखेंगे। यह रिकार्ड उनके स्टेनो/निजी सहायक भी रख सकते हैं।

4) केवल वे अधिकारी इस पुरस्कार के पात्र होंगे जो वर्ष कम से कम 20,000 शब्द डिक्टेशन देंगे। अहिंदी भाषी अधिकारी के लिए यह मात्र 10,000 शब्दों की प्रतिवर्ष होगी।

**5. सामूहिक नकद पुरस्कार योजना**

रेलवे बोर्ड द्वारा रेल कार्यालयों में हिंदी के सर्वाधिक प्रयोग के लिए सामूहिक पुरस्कार योजना प्रचारित की गई है, जिसके अंतर्गत प्रतिवर्ष श्रेष्ठ प्रथम 03 स्थान पाने वाले विभाग/मंडल/कारखाना को निम्न पुरस्कार प्रदान किया जाता है:

| | पुरस्कार राशि एवं प्राप्तकर्ताओं की संख्या |
|---|---|
| प्रथम पुरस्कार (**विभाग के लिए**) | ₹9000 x 6 |
| द्वितीय पुरस्कार (**मंडल के लिए**) | ₹6000 x 5 |
| तृतीय पुरस्कार (**कारखाने के लिए**) | ₹4000 x 5 |

**6. रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता**

1) इस प्रतियोगिता में सभी राजपत्रित अधिकारी/अराजपत्रित कर्मचारी भाग ले सकते हैं।
2) निबंध 'रेल कार्य संचलन एवं प्रबंधन' से संबंधित किसी विषय पर होना चाहिए और 5000 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए।
3) निबंध प्रत्येक वर्ष दिसंबर माह में कार्मिकों से आमंत्रित किया जाता है।
4) इसमें राजपत्रित के लिए 02 एवं अराजपत्रित के लिए 02 पुरस्कार दिए जाते हैं–

| | **प्रथम पुरस्कार** | **द्वितीय पुरस्कार** |
|---|---|---|
| राजपत्रित अधिकारी | ₹ 6000/– | ₹ 4000/– |
| अराजपत्रित कर्मचारी | ₹ 6000/– | ₹ 4000/– |

**7. मौलिक लेखन पुरस्कार योजना**

**7.1 इंदिरा गाँधी पुरस्कार योजना**-इस योजना के अंतर्गत केंद्र सरकार सहित बैंकों, सरकारी उपक्रमों, वित्तीय संस्थानों, विश्वविद्यालयों, शैक्षिक व प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत कार्मिकों द्वारा हिंदी में लिखी गई मौलिक पुस्तकों के लेखन के लिए इंदिरा गाँधी पुरस्कार दिए जाते हैं। अनूदित पुस्तकें/ पूर्व पुरस्कृत पुस्तकें स्वीकार्य/पात्र नहीं होंगे।

| **पुरस्कार** | **पुरस्कार राशि** |
|---|---|
| प्रथम पुरस्कार | ₹ 60,000/– |
| द्वितीय पुरस्कार | ₹ 45,000/– |
| तृतीय पुरस्कार | ₹ 30,000/– |
| प्रोत्साहन पुरस्कार | ₹ 15,000/– |

**7.2 मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना**

यह पुरस्कार मौलिक रूप से काव्य/गजल संग्रह के लिखने के लिए प्रदान किया जाता है। इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित पुरस्कार रेलवे बोर्ड द्वारा प्रदान किया जाता है–

| **पुरस्कार** | **पुरस्कार राशि** |
|---|---|
| प्रथम पुरस्कार | ₹15,000/– |
| द्वितीय पुरस्कार | ₹ 7,000/– |
| तृतीय पुरस्कार | ₹ 3,300/– |

इस योजना के अंतर्गत **पुस्तक सामान्यतः 100 पृष्ठ से कम नहीं** होनी चाहिए।

**7.3 प्रेमचंद पुरस्कार योजना**

कथा संग्रह एवं उपन्यास के लिए प्रेमचंद पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार के अंतर्गत निम्नलिखित पुरस्कार बोर्ड द्वारा प्रदान किया जाता है–

| **पुरस्कार** | **पुरस्कार राशि** |
|---|---|
| प्रथम पुरस्कार | ₹15,000/– |
| द्वितीय पुरस्कार | ₹ 7,000/– |
| तृतीय पुरस्कार | ₹ 3,300/– |

इस योजना के अंतर्गत **पुस्तक सामान्यतः 100 पृष्ठ से कम नहीं** होनी चाहिए।

**7.4 लालबहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक लेखन पुरस्कार योजना**

इस योजना के अंतर्गत रेलों से संबंधित तकनीकी विषयों पर मूल रूप से हिंदी में पुस्तक लिखने पर रेलवे बोर्ड द्वारा निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किया जाता है–

| **पुरस्कार** | **पुरस्कार राशि** |
|---|---|
| प्रथम पुरस्कार | ₹15,000/– |
| द्वितीय पुरस्कार | ₹ 7,000/– |
| तृतीय पुरस्कार | ₹ 3,300/– |

इस योजना के अंतर्गत **पुस्तक सामान्यतः 100 पृष्ठ से कम नहीं** होनी चाहिए।

### 7.5 रेल यात्रा-वृत्तांत पुरस्कार

रेलकर्मियों सहित जनसाधारण के रेल यात्रा संबंधी अनुभव प्राप्त करने और उन अनुभवों के आधार पर रेलों द्वारा अपनी छवि को बेहतर बनाने के उद्देश्य से, रेल मंत्रालय की रेल यात्रा-वृत्तांतों पर पुरस्कार योजना अखिल भारतीय स्तर पर प्रचलित है। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष सर्वोत्तम प्रथम तीन वृत्तांतों के विजेता को निम्नलिखित नकद पुरस्कार दिए जाने का प्रावधान है-

| **पुरस्कार** | **पुरस्कार राशि** |
|---|---|
| प्रथम पुरस्कार | ₹ 4,000/- |
| द्वितीय पुरस्कार | ₹ 3,000/- |
| तृतीय पुरस्कार | ₹ 2,000/- |

### 8. अधिकारियों को हिंदी पदक से सम्मानित करना

क्षेत्रीय रेलवे में कैलेंडर वर्ष के दौरान महाप्रबंधक तथा वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड या इससे ऊपर के अधिकारियों को जिनका अपने कार्यक्षेत्र में हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने में उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय योगदान रहा हो तथा जो स्वयं तो शत-प्रतिशत हिंदी में कार्य करते हों साथ ही अपने अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करते हों, उन्हें क्रमशः **'कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पदक'** तथा **'रेल मंत्री राजभाषा पदक'** से सम्मानित किया जाता है।

### 9. राजभाषा शील्ड/ट्राफी

राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रेलवे बोर्ड द्वारा सर्वाधिक हिंदी का प्रयोग करने वाले 'क' 'ख' क्षेत्र के क्षेत्रीय रेल को एवं मंडल को रेलमंत्री राजभाषा शील्ड/ट्राफी प्रदान किया जाता है।

ये पुरस्कार **आदर्श रेल, आदर्श मंडल, आदर्श स्टेशन** एवं **आदर्श कारखाने** के लिए दिए जाते हैं।

### 10. हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत प्रोत्साहन भत्ता

ऐसे अंग्रेजी के आशुलिपिकों व टंककों को जो अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी में भी निर्धारित मात्रा में सरकारी काम-काज करते हैं, को हिंदी प्रोत्साहन भत्ता स्वरूप निम्नलिखित राशि प्रति माह प्रदान किए जाते हैं-

| | | |
|---|---|---|
| आशुलिपिकों को | - | **₹ 240/-** |
| टंककों को | - | **₹ 160/-** |

साथ ही हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी प्रशिक्षण प्राप्त/पास करने पर **एकमुश्त पुरस्कार** भी प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त इन्हें एक वर्ष तक वैयक्तिक वेतन भी प्रदान किया जाता है।

### 11. अंशकालिक हिंदी ग्रंथालयी को मानदेय

रेलों पर स्थापित हिंदी पुस्तकालयों में कार्यरत अंशकालिक ग्रंथालयी को पारिश्रमिक स्वरूप (मानदेय) **₹ 500/-** की राशि दी जाती है।

### 12. राजीव गाँधी राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना

| **पुरस्कार** | **पुरस्कार राशि** |
|---|---|
| प्रथम पुरस्कार (**एक**) | **₹ 2,00,000/-** (प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न) |
| द्वितीय पुरस्कार (**एक**) | **₹ 1,50,000/-** (प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न) |
| तृतीय पुरस्कार (**एक**) | **₹ 75,000/-** (प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न) |
| सांत्वना पुरस्कार (**दस**) | **₹ 10,000/-** (प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न) |

**नोट**- पुस्तक आधुनिक तकनीकी/विज्ञान की किसी विधा पर हो सकती है, जैसे-

(।) इंजीनियरी, इलेक्ट्रानिक्स, कंप्यूटर विज्ञान, भौतिकी, जैव विज्ञान, ऊर्जा, अंतरिक्ष विज्ञान, आयुर्विज्ञान, रसायन विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, मनोविज्ञान आदि।

(।।) सम-सामयिक विषय जैसे- उदारीकरण, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद, मानवाधिकार, प्रदूषण आदि।

इस योजना के अंतर्गत **पुस्तक सामान्यतः 100 पृष्ठ से कम नहीं** होनी चाहिए।

**13. हिंदी शिक्षण योजना** के अधीन हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर मिलने वाले प्रोत्साहन नकद पुरस्कार की राशि तथा निजी प्रयत्नों से हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर मिलने वाले एकमुश्त पुरस्कार निम्नलिखित हैं–

### 13.1 हिंदी भाषा प्रशिक्षण

**एकमुश्त पुरस्कार की राशि**

**<u>प्रबोध</u>**

(क) 70%या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर ₹ 1600/–

(ख) 60%या इससे अधिक परंतु 70% से कम अंक प्राप्त करने पर ₹ 800/–

(ग) 55%या इससे अधिक परंतु 60% से कम अंक प्राप्त करने पर ₹ 400/–

**<u>प्रवीण</u>**

(क) 70% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर ₹ 1800/–

(ख) 60% या इससे अधिक परंतु 70% से कम अंक प्राप्त करने पर ₹ 1200/–

(ग) 55% या इससे अधिक परंतु 60% से कम अंक प्राप्त करने पर ₹ 600/–

**<u>प्राज्ञ</u>**

(क) 70% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर ₹ 2,400/–

(ख) 60% या इससे अधिक परंतु 70% से कम अंक प्राप्त करने पर ₹ 1,600/–

(ग) 55% या इससे अधिक परंतु 60% से कम अंक प्राप्त करने पर ₹ 800/–

### 13.2 <u>हिंदी टंकण</u>

(क) 97% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर ₹ 2,400/–

(ख) 95% या इससे अधिक परंतु 97% से कम अंक प्राप्त करने पर ₹ 1,600/–

(ग) 90% या इससे अधिक परंतु 95% से कम अंक प्राप्त करने पर ₹ 800/–

### 13.3 <u>हिंदी आशुलिपि</u>

(क) 95% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर ₹ 2,400/–

(ख) 92% या इससे अधिक परंतु 95% से कम अंक प्राप्त करने पर ₹ 1,600/–

(ग) 88% या इससे अधिक परंतु 92% से कम अंक प्राप्त करने पर ₹ 8,00/–

**13.4 निजी प्रयत्नों से** हिंदी शिक्षण योजना की **हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि** की परीक्षाएँ पास करने पर एकमुश्त पुरस्कार–

**एकमुश्त पुरस्कार की राशि**

1. हिंदी शिक्षण योजना की **प्रबोध** परीक्षा ₹ 1,600/–
2. हिंदी शिक्षण योजना की **प्रवीण** परीक्षा ₹ 1,500/–
3. हिंदी शिक्षण योजना की **प्राज्ञ** परीक्षा ₹ 2,400/–
4. हिंदी शिक्षण योजना की **टंकण** परीक्षा ₹ 1,600/–
5. हिंदी शिक्षण योजना की **आशुलिपि** परीक्षा ₹ 2,400/–

**जहाँ हिम्मत समाप्त होती है, वहीं से हार की शुरुआत होती है।**

31.07.14 को लखनऊ जं. पर उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर व्याख्यान देते प्रो. योगेंद्र प्रताप सिंह, रीडर, लखनऊ विश्वविद्यालय साथ में श्री लोकेश सिंह, वरि. मंडल यांत्रिक इंजीनियर (सवारी) एवं श्री शैलेश कुमार मिश्र, राधि



31.07.14 को लखनऊ जं. स्टेशन पर तकनीकी संगोष्ठी में विशेषज्ञ व्याख्यान प्रस्तुत करते श्री लोकेश सिंह, वरि. मंडल यांत्रिक इंजीनियर (सवारी) साथ में प्रो. योगेंद्र प्रताप सिंह, रीडर, लखनऊ विश्वविद्यालय




19.08.14 को वाराणसी मंडल के बलिया स्टेशन पर आचार्य हजारी प्र. द्विवेदी की जयंती में व्याख्यान प्रस्तुत करते श्री संजय सिंह, राजभाषा अधिकारी साथ में डा. अंजनी तिवारी, प्रवक्ता बी.एन.सी. कालेज, डा. जैनेंद्र कुमार पांडेय, प्रवक्ता, टाउन डिग्री कालेज एवं श्री प्रवीण कुमार पाठक, स्टे.अधी., बलिया



27.06.14 को वाराणसी मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते मंरेप्र श्री अजय विजय वर्गीय साथ में श्री आनंद भाटिया, अमंरेप्र, श्री संजय सिंह, राभाधि एवं उपस्थित सदस्य अधिकारीगण



23.05.14 को डीजल शेड, इज्जतनगर में 'राजभाषा की दिशा एवं दशा' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में व्याख्यान देते बरेली के वरिष्ठ साहित्यकार श्री सुधीर विद्यार्थी साथ में श्री गौरव कुमार सिंह, वमंयांइं/डीजल व श्री राजेंद्र कुमार, राधि



20.05.14 को इज्जतनगर मंडल में पं. सुमित्रानंदन पंत के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आयोजित हिंदी संगोष्ठी में दीप प्रज्ज्वलित करते मंरेप्र श्री चंद्र मोहन जिंदल साथ में श्री सोमेश कुमार, अपर मुराधि

भारतेंदु हरिश्चंद्र
09.09.1850-06.01.1885
वाराणसी ( उ.प्र. )

कविवर रवींद्रनाथ टैगोर
07.05.1861-07.08.1941
कोलकाता ( प.बंगाल )

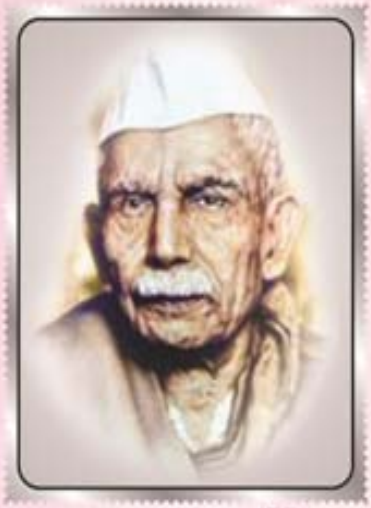

पं. माखनलाल चतुर्वेदी
04.04.1889-30.01.1968
होशंगाबाद ( म.प्र. )

महाश्वेता देवी
14.01.1926
अविभाजित भारत के ढाका

श्री ज्ञान दत्त पांडेय, मुख्य राजभाषा अधिकारी, पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा प्रकाशित एवं
श्री नानी चुंदूरी, वरि. प्रबंधक, मुद्रण एवं लेखन सामग्री, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर द्वारा मुद्रित